व्यवसायिक वास्तु

लेखक
प्रमोद कुमार सिन्हा

प्रकाशक
अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)
X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020
Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001
Email (इमेल)– mail@aifas.com
Web (वेब)– www.aifas.com

व्यवसायिक वास्तु प्रमोद कुमार सिन्हा AIFAS

व्यवसायिक वास्तु

लेखक
प्रमोद कुमार सिन्हा

प्रकाशक
अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)
X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020
Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001
Email (इमेल)– mail@aifas.com
Web (वेब)– www.aifas.com

लेखक परिचय

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के बिहार एवं झारखंड के गर्वनर श्री प्रमोद कुमार सिन्हा जी ज्योतिष के क्षेत्र में अपनी अलग ही पहचान रखते हैं। 15 वर्षों से इन विद्याओं के स्वाध्याय में लगे हैं। दस साल से तो समर्पित होकर ज्योतिष कार्य ही कर रहे हैं। अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के अन्तर्गत ज्योतिष की कक्षाएं प्रारम्भ करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संघ के चैप्टर चेयरमैन होने के नाते संघ की सभी गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। संघ द्वारा प्रकाशित रिसर्च जर्नल ऑफ एस्ट्रोलॉजी में उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। देश विदेश में होने वाली घटनाओं का ज्योतिषीय विवेचन बहुत ही सरल और सटीक ढंग से करते हैं। ज्योतिष महर्षि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सौ से अधिक ज्योतिषियों की कुण्डलियों का अध्ययन करके ज्योतिषी बनने के योगों पर काम किया है। ज्योतिष के प्रचार के लिए निरंतर सक्रिय रहते हैं। ज्योतिष के साथ वास्तु, अंकशास्त्र और लाल किताब का भी ज्ञान रखते हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'सरल गृह वास्तु' में ज्योतिषीय उपाय जैसे कठिन विषय को बहुत ही सुंदर व सटीक रूप से पेश किया है जो अत्यंत ही सराहनीय है। पुस्तक में वास्तु का समग्र अवलोकन करते हुए बहुत ही सरल और व्यावहारिक उपायों का समावेश है। हम उनकी उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करते हैं।

प्रस्तावना

वास्तुविद्या प्राचीनतम् विद्या है, जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में मिलता है। मनुष्य के जीवन को सुगम, सरल व कल्याणकारी बनाने के लिए हमारे ऋषि–मुनि सदैव चिंतित रहे हैं। इसके सिद्धांत पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। अतः यह एक व्यावहारिक विज्ञान है जिसकी उपयोगिता स्पष्ट एवं निश्चित है।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरुकुल में चौंसठ विद्याओं का अध्ययन करते थे, जिनमें वास्तु विद्या प्रमुख थी। विगत कुछ वर्षों से इस विद्या की ओर लोगों का विशेष ध्यान आकृष्ट हुआ है। विश्वकर्मा प्रकाश में कहा गया है :

''वास्तुशास्त्रं प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया''

''वास्तु'' शब्द का अर्थ है – बसने या वास करने योग्य। वास्तुविद्या एक अत्यंत विस्तृत एवं गूढ़ विज्ञान है। इसके अधिकांश ग्रंथ लुप्त हो चुके हैं। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने लिखा है :

''क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच तत्व रचित यह अधम शरीरा।।''

जिस प्रकार मानव शरीर पांच तत्वों से निर्मित है उसी प्रकार प्रकृति भी इन्हीं पांचों तत्वों से निर्मित है। इसलिए ये पांच तत्व जीवन के अभिन्न अंग हैं।

यदि मनुष्य प्रकृति के इन पांच तत्वों के अनुकूल वातावरण में वास करे तो उसका जीवन सुखी, स्वस्थ एवं आध्यात्मिक बना रहेगा। अनुकूल एवं प्रतिकूल घटनाएं मानव जीवन के अंग हैं, जो प्रकृति का शाश्वत सत्य है। प्रारब्ध का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है फिर भी मनुष्य को शास्त्रों में बताए गए मार्गों के अनुसार ही कर्म करना चाहिए।

वास्तुशास्त्र एक गूढ़ एवं विस्तृत विषय है जो वर्तमान समय में सभी लोगों के लिए प्रासंगिक हो गया है। इसके सिद्धांतों का उचित ज्ञान प्राप्त कर इनका प्रयोग भवन निर्माण में किया जाए तो यथासंभव वास्तुजनित दोषों का निराकरण किया जा सकता है।

इस पुस्तक के अध्ययन एवं इसमें निहित वास्तु सम्मत नियमों का अनुसरण एवं पालन कर पाठक यथोचित लाभ उठाएं यही मेरा उद्देश्य है, यही मेरी अभिलाषा है। इसे लिखने में मेरी माता श्रीमती उषारानी, पिता श्री अवधेशनंदन प्रसाद, पत्नी श्रीमती वीणा सिन्हा, ज्येष्ठ भ्राता श्री सुधेन्द्र कुमार सिन्हा, गुरुजन, ईश्वर एवं मित्रजन की सद्प्रेरणा रही है। पुस्तक लिखने की प्रेरणा का श्रेय विशेष रूप से अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अरुण कुमार बंसल एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा श्रीमती आभा बंसल को जाता है। इनके निरंतर मार्गदर्शन से यह पुस्तक अति शीघ्र तैयार की गई है। साथ ही पटना चैप्टर के प्राचार्य श्री रामशरण सिंह, संकलन करने में कार्यालय सहयोगी रवि कुमार एवं छात्र राजेन्द्र शर्मा का प्रयास सराहनीय रहा है।

इन सभी लोगों के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करता हूं।

प्रमोद कुमार सिन्हा

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

Astrological Products

VPP FACILITY AVAILABLE

Malas (Beads)

- Rudraksha Mala(For prayer) 101/-
- Rudraksha Mala(Medium beads) 301/-
- Rudraksha Mala (Small beads) 650/-,900/-,1500/-
- Rudraksha Mala(Special) 2500/-
- Rudraksha & Pearl Mixed 650/-
- Rudraksha & Crystal Mixed 301/-
- Crystal Mala(Small) 501/-
- Crystal Mala diamond cutting (Medium) 1100/-
- Crystal Mala diamond cutting (Big) 2500/-
- Crystal & Special Rudraksha Mixed 2500/-
- Putra Prapti Mala 101/-
- Tulsi Mala 101/-
- Red Chandan Mala 101/-
- White Chandan Mala 201/-
- Kamal Gatta Mala 51/-
- Kayakalpa Mala 201/-
- Haldi Mala 201/-
- Vaijayanti Mala 101/-
- Feroja Mala 650/-
- Hakika Mala 501/-
- Pearl Mala 650/-
- Pearl Mala(Special) 1100/-
- Moonga Mala(Coral) 2100/-
- Italian Moonga Mala (Special) 3100/-
- Coral & Pearl Mixed 1100/-
- Navratna Mala 650/-, 1100/-
- Navratna Mala(Special) 2100/-
- Parad Mala 1100/-

Crystal Items

- Crystal Sri Ya. 600/-, 1100/-, 2100/-, 3100/-, 5100/-
- Crystal Lakshmi 600/-, 1100/-, 2100/-
- Crystal Ganesh 600/-, 1100/-, 2100/- Per Piece
- Crystal Shivalinga 600/-, 1100/-, 2100/- Per Piece
- Crystal Locket of Ganesh 300/- Per Piece
- Crystal Pyramid 300/-, 500/- Per Piece
- Crystal Moon 300/- Per Piece
- Crystal Sun 300/- Per Piece
- Crystal Turtle 300/- Per Piece
- Crystal Ball 300/-, 500/- Per Piece
- Crystal Shiv Family 5100/- Per Piece
- Crystal Pindi Shivling 2100/- 3100/- 4100/- 5100/-
- Sangsitara Laxmi Ganesh - 100/-, 3100/-
- Sangsitara Shriyantra - 2100/-, 5100/-
- Lens - 250/-, 150/-
- Two faced Sangsitara Ganesh - 2800/-, 5100/-

Pyramid

- Ashtadhaatu Pyramid(Nine in one) 401/-
- Ashtadhaatu Pyramid Shree Yantra 500/-
- Set of Pocket Pyramid Yantra 500/-
- Set of Turtle Pyramid 500/-
- Pyramid Small 100/-
- Pyramid Locket 51/-

Miscellaneous Items

- Navratna Bracelet 3100/-
- Navratna Ring 1500/-
- Black Horse Shoe 251/-
- Saturn Ring 21/-
- Pendulum 51/-
- Shwetarka Ganpati 300/-, 500/-
- Indrajaal 151/-
- Metal Turtle 101/-
- Narmada Shivalinga 251/- Per Piece
- Shaligrama 450/- Per Piece
- Seepa Turtle 400/-,600/-
- Ekakshi Naariyal 300/-
- Vastu Compass 250/-
- Lal Kitab Materials 21/- Per Piece
- Fish, Snake etc. 21/- Per Piece
- Parad Ring 101/-
- Gomti Chakra 21/- (Pair)
- Laxmi Ganesha of Coral 1100/- Per Piece

Shankha

- Dakshinaavarti Shankha (Special) 3100/-
- Dakshinaavarti Shankha (Large) 2100/-
- Dakshinaavarti Shankha (Medium) 1100/-, 1500/-
- Dakshinaavarti Shankha (Small) 650/-, 900/-
- Moti Shankha 251/-, 501/-, 1100/-
- Ganesh Shankh 251/-, 501/-
- Blower Shankha (Large) 1100/-, 2100/-
- Blower Shankha 750/-
- Turtle Shankha 1100/-
- Kauri Om Namah Shivay 251/-

All Type of Silver Lockets

- Navaratna Locket(Big) 1100/-
- Trishakti Locket - Types 1100/-
- Kaal Sarpa Locket 301/-
- Mahamrutyunjaya Locket 301/-
- Saraswati Yantra Locket 301/-
- Shree Yantra Locket 301/-
- Lxmi-Ganesh Locket 301/-
- Baglamukhi Locket 301/-
- Durgabisa Locket 301/-
- Lockets of Mercury, Moon, Venus, 301/-
- Lockets of Mars, Sun, Jupiter, 301/-
- Lockets of Saturn, Rahu, Ketu 301/-
- Ganesh Locket 301/-
- Gayatri Locket 301/-
- Motichand Locket 301/-, 500/-

Rudraksha

- Ganesh Rudraksha 500/-
- Gauri Shankar 4100/-
- One Faced (Kaju Dana) 2100/-
- Two Faced 51/-
- Three Faced 51/-
- Four Faced 51/-
- Five Faced 21/-
- Six Faced 51/-
- Seven Faced 250/-
- Eight Faced 1100/-
- Nine Faced 2100/-
- Ten Faced 2100/-
- Eleven Faced 3100/-
- Twelve Faced 4100/-
- Thirteens Faced 7500/-
- Fourteen Faced 20000/-
- Fifteen Faced 21000/-

Mercury Items

- Mercury Hanuman 500/-, 800/-, 5100/- P. Pc.
- Mercury Sh. Ya. Small 600/-,900/, 1500-P. Pc.
- Mercury Sh. Ya. Big 2100/-, 310 0 /-,5100/- P. Pc.
- Mercury Lakshmi-Ganesh 800/-, 1100/- Per Set
- Mercury Pyramid 400/-, 600/- Per Piece
- Mercury Shivalinga (Small) 500/-, 1500/-
- Mercury Shivalinga (Big) 2100/-, 3100/-, 4100/-P.Pi.
- Mercury Shiv Family 4100/-
- Mercury Durgaji 300/-, 2200/-
- Mercury Shankh 200/-
- Mercury Laxmi Paduka 300/-

Feng Sui Items

- Paakua Mirror (Big) 250/-
- Wind Chimes 200/-
- Luk Puk Sau 300/-
- Laughing Budha 200/-, 400/-
- Three legged frog 100/-,151/-
- Love Birds 250/-,400/-
- Lucky Coin with three 51/-
- Tree of gems (Big) 500/-
- Education Tower (Small/Big) 150/-,250/-

Silver Yantra

Shree Ganesh Yantra, Shree Yantra, Shree Saraswati Yantra, Shree Mahalaxmi Yantra,Durga Beesa Yantra,Shree Mahaamrutyunjaya Yantra, Bagala Mukhi Yantra.

- Size 2"x2" 650/-
- Size 4"x4" 2100/-
- Size 7"x7" 4100/-

Silver Ratna Locket/Ring

	Big 5¼ Ratti
• Sapphire (Nili)	850
• Ruby	1500/-
• Coral	1100/-, 1500/-
• Emerald	1500/-, 2100/-, 3100/-
• Pearl	850/-, 1400/-
• Gomed	1500/-
• Peetambari, Firoja	750/-
• Cat's Eye, Zircon	1100/-
• Aquamarine Stone	1100/-

Yantra Coated With Gold Polish

Ganesh Yantra, Shree Yantra, Kuber Yantra, Bagalamukhi Yantra, Maha Laxmi Yantra, Sampurn Maha Laxmi Yantra, Laxmi Ganesh Yantra, Sukh Samridhi Yantra, Vastu Dosh Nivarak Yantra, Vyapaar Vridhi Yantra, Durga Beesa Yantra, Maha Mrityunjaya Yantra, Vahan Durghatna Nashak Yantra, Vaastu Yantra, Kaalsarp Yantra, Hanuman Yantra, Saraswati Yantra, Navadurga Yantra, Santan Gopal Yantra, Kanakdhara Yantra, Vashikaran Yantra, Matsya Yantra, Gayatri Yantra, Geeta Yantra, Navgraha Yantra, Budha Yantra, Shukra Yantra, Chandra Yantra, Brihspati Yantra, Surya Yantra, Mangal Yantra, Ketu Yantra, Rahu Yantra, Shani Yantra, Aakarshan Yantra, Prem Virddhi Yantra, Maatangi Yantra.

- Size 2"x2" 50/-
- Size 3½"x3½" 150/-
- Size 7"x7" without frame 400/-
- Size 7"x7" with Italian frame 650/-
- Size 12"x14" with frame 1500/-
- Size 24"x24" with frame 7500/-

Special 13 in one yantra with Italian frame

Sampurn Badha Mukti Yantra, Sampurn KaalSarp Yantra, Sampurn Vidya Pradaayak Yantra, Sampurn Shree Yantra, Sampurn Rognashak Yantra, Sampurn Vaastu Yantra, Sampurn Sarvakaarya Siddhi Yantra, Sampurn Navagrah Yantra, Sampurn Vyaapaar Virdhi Yantra.

- Size 14"x14" 2100/-
- Size 8"x8" 900/-

Please send your name and address along with the cheque or DD for the item you need favouring Future Point Ratna Bhandar at the address given below You can send the amount by Moneyorder also. Please send Rs. 50/- as postage charge for the item worth less than Rs. 500/-

卐 Future Point 卐

Head Office:
X-35, Okhla Industrial Area, Phase-II, Delhi-110020
☎ : 91-11-40541000 (40 Line) Fax : 40541001

Branch Office:
D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
☎ : 40541020 (10 Line) Fax : 40541021

E-mail: mail@futurepointindia.com, Web: www.futurepointindia.com

1. वास्तुशास्त्र का परिचय

वास्तुशास्त्र की जानकारी हमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के साथ–साथ पुराणों एवं अन्य ग्रन्थों से भी मिलती है। परंतु इसके सिद्धांतों का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में किया गया। इन चार वेदो के पश्चात् चार उपवेद भी लिखे गये। इन्हीं उपवेदों में स्थापत्य वेद भी है जो अथर्ववेद का उपवेद है। कालान्तर में यह स्थापत्यवेद ही वास्तुशास्त्र के रूप में विकसित हुआ। इसके साथ ही मत्स्य पुराण, स्कंद पुराण, अग्नि पुराण, वायु पुराण, गरूड़ पुराण तथा भविष्य पुराण आदि से भी वास्तु के बारे में जानकारी मिलती है। मत्स्य पुराण में शिलाओं पर नक्काशी, समारोह स्थल की स्थिति एवं साज–सजा के सिद्धांतो की विस्तृत चर्चा की गई । नारद पुराण में मंदिरो के विषय में अनेक उल्लेखनीय तथ्य देखने को मिलता है। इसी प्रकार गरूड़ पुराण में रिहायशी भवनों तथा मंदिरो से संबंधित सिंद्धांतो की विस्तृत चर्चा है। मंदिरो के विषय में वास्तु सिद्धांतो की व्याख्या वायु पुराण भी करता है। परंतु इसमें उन मंदिरो का वर्णन है जो अधिक ऊँचाई पर बनाये गयें है। स्कंद पुराण में दिए गए नगर योजना सिद्धांतो को यथासंभव ठीक ढंग से अपनाया जाए तो पश्चात्य सभ्यता के महानगर भी उस कृति के समक्ष फीके पड़ जाएंगे। इसी तरह अग्नि पुराण में रिहायशी भवन की विस्तृत व्याख्या मिलती है।

इन प्राचीन ग्रंथो के अतिरिक्त अन्य ग्रंथो में भी वास्तु की व्यापक एवं विस्तृत जानकारी मिलती है। रामायण, महाभारत, चाणक्य के अर्थशास्त्र, जैन एवं बौद्ध ग्रंथ वृहत् संहिता, समरांगण सूत्रधार, विश्वकर्मा प्रकाश, मयमत, मानसार, वास्तु राजवल्लव, वराहमिहिर के ज्योतिष ग्रंथ वृहत्संहिता आदि विभिन्न ग्रंथो में वास्तुशास्त्र के महत्व एवं उपयोगिता का वर्णन है। इसके अतिरिक्त भृगु, शुक्राचार्य और वृहस्पति जैसे अठारह महर्षियों ने इस पर विस्तृत प्रकाश डाला है। ये सभी ग्रंथ अपने आप में व्यापक हैं एवं विस्तृत वास्तु सिद्धांतो को समेटे हुए है परंतु मालवा के प्रसिद्ध शासक भोज परमार ने ग्यारहवीं शताब्दी में समरांगण सूत्रधार लिखा जो वास्तुशास्त्र का प्रमाणिक एवं अधिकृत ग्रंथ है। इसमें सभी पूर्ववर्ती ग्रंथो के सिद्धांतो का समावेश है। साथ ही इसमें वास्तु दोषों के निवारण के अत्यंत सरल उपाय बतायें गए हैं ये सारे उपाय भवन को किसी तरह की क्षति पहुँचाए बगैर किए जा सकते हैं।

वास्तुशास्त्र का प्रादुर्भाव वैदिक काल में ही हुआ तथा वैदिक काल से तेरहवीं शताब्दी तक वास्तु कला का प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग होता रहा परंतु इसके बाद मुगलों के आने पर इस कला का प्रचलन कम होता गया और धीरे–धीरे लुप्तप्रायः हो गई किन्तु दक्षिण भारत में इस कला का प्रचलन जारी रहा। हमारे यहां जैसे ही अंग्रेजो का शासन काल शुरू हुआ इस अद्भूत कला का ह्रास होता चला गया। लोग अपने जीवन में इसे अपनाने के बजाय ढोंग मानने लगे परन्तु आज के भौतिकता भरे जीवन में जहाँ पल–पल तनाव, परेशानियां एवं दुखः की अनुभूति हो रही है यह शास्त्र मनुष्य को सुख–समृद्धि ऐश्वर्य एवं शांति देने में सामर्थ्यवान साबित हो रहा है। इसी कारण से इस मृत प्रायः शास्त्र को वर्तमान समय में हमलोग स्वागत कर रहें है एवं इसके सिद्धांतो को अपने जीवन में अपनाकर सुख समृद्धि एवं शांति की प्राप्ति

कर रहें हैं।

वास्तुशास्त्र का उदय तथा उसकी संरचना सृष्टि के पंचभूतात्मक सिद्धांत पर ही आधारित है। जिस प्रकार हमारा शरीर पंचमहाभूतात्मक तत्वों से मिलकर बना है उसी प्रकार किसी भी भवन के निर्माण में पंचतत्वों का पर्याप्त ध्यान रखा जाए तो उसमें रहने वाले सुख से रहेंगे। ये पंचमहाभूत–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश है। हमारा ब्रह्माण्ड भी इन्हीं पांच तत्वों से बना है। इसलिए कहा जाता है 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे'**।** जिस प्रकार शरीर में इन तत्वों की कमी या अधिकता होने से व्यक्ति अस्वस्थ्य या रूग्ण हो जाता है उसी प्रकार भवन में इन तत्वों के असंतुलित होने से उसमें निवास करने वाले को नाना प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। इसके साथ ही प्रकृति के अनन्त शक्तियों में से कुछ शक्तियां हमें प्रभावित करती है जैसे सूर्य की स्थिति, पृथ्वी पर गुरूत्वाकर्षण शक्ति ,आभामंडल की शक्तियां, चुम्बकीय शक्ति तथा विद्युत चुम्बकीय शक्ति इत्यादि। यह शक्तियां निर्माण किये गए भवन में विद्यमान रहती है जो मानव शरीर की विद्युत चुंबकीय शक्ति को प्रभावित करके शुभ या अशुभ फल देती है। यह शक्तियाँ जगह–जगह पर पृथ्वी एवं मानव पर हमेशा अलग–अलग प्रभाव एवं महत्व रखती है। यही कारण है कि वास्तु शास्त्र सदैव प्रत्येक स्थान पर एक समान फल नही देता है। यह परिवर्तन मानव के ग्रह नक्षत्र तथा भौगोलिक अक्षांश के अनुसार बदलते रहती है। अन्यथा सभी भवनें एक समान ही फल देने वाले होते। ब्रह्मंड की सारी शक्तियाँ प्रकृति और हमारे शरीर को प्रभावित करती रहती है। यदि प्रकृति के विरूद्ध जाएंगे तो प्रकृति के कुप्रभाव का समाना करना पडेगा। फलस्वरूप हमारी अवनति होगी और यदि प्रकृति के अनुरूप चलेंगे तो सुप्रभाव पडेगा जिसके फलस्वरूप उन्नति होगी जो समृद्धशाली एवं सुखमय जीवन के लिए सहायक होगी। अतः यह आवश्यक है कि प्रकृति के अनुसार हम अपने जीवन को व्यवस्थित करें। वास्तुशास्त्र का सिद्धांत यह भी बतलाता है कि प्रकृति से सामंजस्य स्थापित कर भवन निर्माण किया जाए तो मनुष्य सुख–शांति एवं स्वस्थयमय जीवन प्राप्त करता है। वास्तुशास्त्र के संबंध में हालायुद्धकोष में कहा गया है–

वास्तु संक्षेपतो वक्ष्ये गृहादो विघ्ननाशनम्।
ईशानकोणादारभ्य ह्योकाशीतिपदे त्यजेत्।।

अर्थात् वास्तु संक्षेप में ईशान आदि कोणों से प्रारम्भ होकर गृह–निर्माण की वह कला है जो गृह में निवास करने वालों को प्राकृतिक विघ्न, उत्पातों व उपद्रवों से बचाती है।

अमर कोष के अनुसार

"गृहरचना वच्छिन्न भूमे"

गृहरचना के योग्य अविछिन्न भूमि को वास्तु कहते है। वास्तु वह स्थान कहलाता है जिसपर कोई इमारत खडी हो अथवा घर बनाने लायक जगह को वास्तु कहते है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है– वास्तु वस्तु से संबंधित वह विज्ञान है जो भवन निर्माण से लेकर भवन में उपयोग की जाने वाली वस्तु के बारे में मनुष्य को बतलाता है।

इसी प्रकार मालवा के प्रसिद्ध शासक भोज परमार ने ग्यारहवीं शताब्दी में स्वरचित ग्रंथ समरांगण सूत्राधार के पहले अध्याय के पांचवे श्लोक में कहा है–

वास्तुशास्त्रादृते तस्य न स्याल्लः क्षणनिश्यचः।
तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमतेदृदीर्यते।।

अर्थात् वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य कोई प्रकार नहीं है जिससे यह निश्चित किया जा सके कि कोई भी भवन सही निर्मित है अथवा नहीं। संक्षेप में वस्तु को सुनियोजित तरीके से रखना ही वास्तु है।

समारांगण सूत्र धनानि बुद्धिश्च सन्तति सर्वदानृणाम्।
प्रियान्येषां च सांसिद्धि सर्वस्यात् शुभ लक्षणमफ।।

यात्रा निन्दित लक्ष्मत्र तहिते वां विधात कृत।
अथ सर्व मुपादेयं यम्दवेत् शुभ लक्षणम्।।

देश पुर निवाश्रच सभा वीस्म सनाचि।
यद्य दीदृसमन्याश्रच तथ भेयस्करं मतम्।।

वास्तु शास्त्रादृतेतस्य न स्यल्लक्षनिर्णयः।
तस्मात् लोकस्य कृपया सभामेतत्र्दुरीयते।।

अर्थात्, वास्तु शास्त्र के अनुसार भली भांति योजनानुसार बनाया गया घर सब प्रकार के सुख, ध
ान–संपदा, बुद्धि, सुख–शांति और प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है और ऋणों से मुक्ति दिलाता है। वास्तु की अवहेलना के परिणामस्वरूप अवांछित यात्राएं करनी पड़ती है, अपयश, दुख तथा निराशा प्राप्त होते हैं। सभी घर, ग्राम, बस्तियां और नगर वास्तु शास्त्र के अनुसार ही बनाये जाने चाहिए। इसलिए इस संसार के लोगों के कल्याण ओर उन्नति के लिए वास्तु शास्त्र प्रस्तुत किया गया है।

इसी तरह नारद संहिता में कहा गया है भवन में निवास करने वाले गृह स्वामी को भवन प्रत्येक रूप से शुभ फलदायक, सुख–समृद्धि प्रदाता, ऐश्वर्य, लक्ष्मी एवं धन को बढाने वाला, पुत्र–पौत्रादि प्रदान करने वाला हो इसका विचार वास्तु के अंतर्गत किया जाता है।

सचमुच वास्तुशास्त्र एक गहन विषय है इसका वैज्ञनिक एवं आध्यात्मिक आधार है। वास्तु के अनुसार बने भवन मंगलदायक एवं कल्याणकारी होता है परंतु इसके नियमों का उल्लंधन से उसमें निवास करने वाले के लिए विध्वंसकारी एवं विनाशकारी होता है। वास्तु के अनुसार बने भवन मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक सुख देते हैं। इसी तरह वास्तु के अनुरूप बने परिसर शांति खुशहाली एवं समृद्धि देते हैं।

2. वास्तु देव या वास्तु पुरुष

भवन निर्माण में वास्तु देवता या वास्तु पुरुष का बड़ा महत्व है। यह भवन के प्रमुख देवता हैं। इनका मस्तक ईशान एवं पैर नैर्ऋत्य में रहते हैं। दोनों पैरों के पद तल एक–दूसरे से सटे होते हैं। हाथ व पैर की संधियां आग्नेय और वायव्य में होती हैं। शास्त्रों के अनुसार प्राचीनकाल में अंधकासुर दैत्य एवं भगवान शंकर के बीच घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में शंकर जी के शरीर से पसीने की कुछ बूंदें जमीन
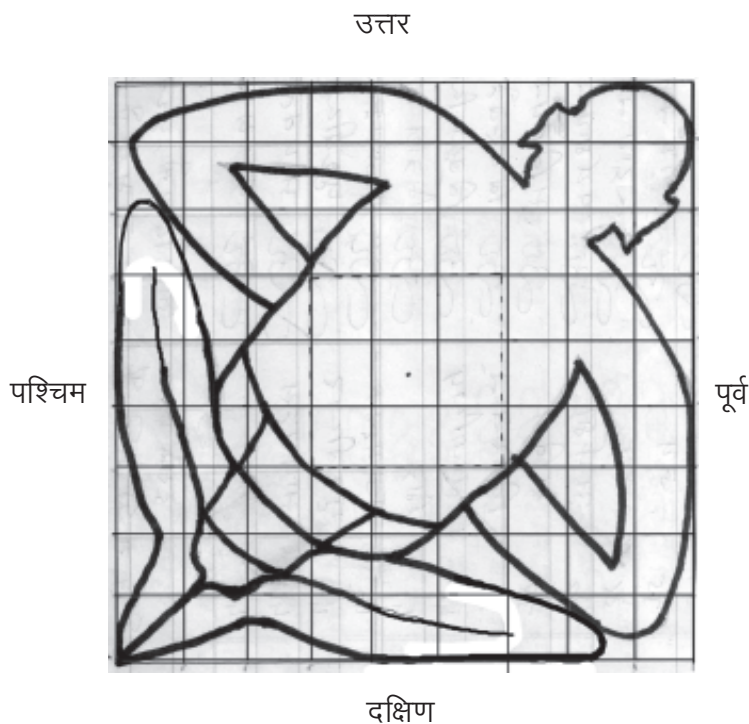
पर गिर पड़ीं। उन बूंदों से आकाश और पृथ्वी को भयभीत कर देने वाला एक प्राणी प्रकट हुआ। यह प्राणी तुरंत देवताओं को मारने लगा। तब सभी देवताओं ने उसे पकड़कर उसका मुंह नीचे करके दबा दिया और उसे शांत करने के लिए वर दिया 'सभी शुभ कार्यों में तेरी पूजा होगी।' देवों ने उस पूरुष पर वास किया, इसी कारण उसका नाम वास्तु पुरुष पड़ा। उस महाबली पुरुष को औंधे मुंह गिराकर उस पर सभी देव बैठे हैं। अतः सभी बुद्धिमान पुरुष उसकी पूजा करते हैं। जो व्यक्ति उसकी पूजा नहीं करता उसे कदम–कदम पर बाधाओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही उसकी अकाल मृत्यु होती है।

कब करें वास्तु पुरुष की पूजा

गृह निर्माण के प्रारंभ में द्वार बनाने के समय देवकी पूजन एवं मकान बनाकर परिपूर्ण होने पर गृह प्रवेश के समय इन तीनों अवसरों पर वास्तु पूजन किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यज्ञोपवीत, विवाह, आदि के समय, जीर्णोद्धार तथा बिजली और अग्नि से जले मकान को पुनः बनाने के समय, जहां स्त्रियां लड़ती झगड़ती हों या रोगी हों वहां और ऐसे अनेक उत्पातों से दूषित घर में पुनः प्रवेश करते समय वास्तु शांति करानी चाहिए। पुत्र जन्म एवं हर प्रकार के यज्ञ के प्रारंभ में वास्तु पुरुष की पूजा विधि विधान से करने पर घर के सभी प्रकार के दोष और उत्पातों का शमन होता है तथा सुख–शांति और कल्याण की प्राप्ति होती है।

वास्तु–पुरुष एवं वास्तु पीठ

कर्मकांड में वास्तु–पुरुष की पूजा के लिए अलग–अलग प्रकार के वास्तु पीठों की स्थापना का विधान है। जितनी जमीन पर घर का निर्माण करना हो उतनी जमीन से वास्तु–पुरुष की कल्पना की जाती है। इस प्रकार एक पद से लेकर हजार पद वाले वास्तु की पूजा होती है। प्राचीन ग्रंथ वास्तु राजवल्लभ में कहा गया है कि :–

ग्रामें भूपति मंदिरे च नगरे पूज्यः चतुःषष्टिके,
एकाशीतिपदै समस्त भवने जीर्णो नवाद्धं शर्केः।

प्रसारे तु शतांशकैः तु सकले पूज्य तथा मण्डपे
कू पेषझनवचतुभाग–साहिनों वाण्यां तडागे वने।।

अर्थात गांव बसाते समय और नगर या राजमहल बनाते समय 64 पद वास्तु की पूजा करनी चाहिए। वास स्थान घर के लिए 81 पद, जीर्णोद्धार के लिए 49, सर्व प्रकार के प्रासाद एवं मंडपों के लिए 100 पद तथा कुआं, तालाब एवं जलाशय के लिए 144 या 194 पद वाले वास्तु पीठ का पूजन करना चाहिए। शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि :–

दुर्गा प्रतिष्ठा विषये निवेशे तथा महार्चासु च कोटि होते।
मेरौच राष्ट्रेष्वपि सिद्धलिंगे वास्तुसहस्त्रेण पदे प्रपूज्यः।।

अर्थात दुर्गा की प्रतिष्ठा, नगर निर्माण , यज्ञ, देशनिर्माण, राजधानी एवं सिद्ध शिवलिंग की प्रतिष्ठा के समय 1000 तालिका वाले वास्तु पीठ का पूजन करना चाहिए।

ब्रह्म स्थान

ब्रह्म स्थान किसी भी भूखंड का केंद्र होता है। जिसे ऊर्जा का केंद्र बिंदु माना गया है। ब्रह्म स्थान वास्तु पुरुष की नाभि के आस पास के क्षेत्र पेट, गुप्तांग और जांघों का स्थान है। ब्रह्म स्थान वास्तु पुरुष और भूखंड के फेफड़े और हृदय स्थल का भाग है। अतः इस स्थान को खुला और भार रहित रखें। यदि घर में रहने वाले लोग सुख समृद्धि, स्वस्थ एवं खुशहाल रहते हुए अपना जीवन यापन चाहते हों तो ब्रह्म स्थान पर किसी भी तरह का निर्माण कार्य नहीं करना चाहिए।

पद वाले	बीच के पदों में ब्रह्मा
64 पद	4 पदों में
81 पद	9 पदों में
100 पद	16 पदों में
144 पद	24 पदों में
169 पद	25 पदों में
196 पद	32 पदों में
1000 पद	100 पदों में

ऊपर के चित्र के अध्ययन से पता चलता है कि वास्तु–पुरुष का प्रत्येक अंग भूखंड के किसी न किसी हिस्से का स्वामी होता है।

वास्तु और देवता

वास्तु पुरूष के शरीर के भिन्न–भिन्न अंगों में कौन–कौन से देवता का आधिपत्य है।

ईशान पूरब आग्नेय

उत्तर दक्षिण

शिखी 1	पर्जन्य 2	जयन्त 3	इन्द्र 4	सूर्य 5	सत्य 6	भृश 7	आकाश 8	अनिल 9
दिति 32	आप 33		अर्यमा 37			सावित्री 34		पूषा 10
अदिति 31	आपवत्स 44					सविता 38		वितथ 11
भुजंग 30	पृथ्वीधर 43		ब्रह्मा 45			विवस्वान 39		बृहत्क्षत 12
सोम 29								यम 13
भल्लाट 28								गंधर्व
मुख्य 27	राजयक्ष्मा 42		मित्र 41			विबुधाधिप 40		भृंगराज 15
नाग 26	रूद्र 36					जय 35		मृग 16
रोग 25	पापयक्ष्मा 24	शेष 23	असुर 22	वरूण 21	पुष्पदंत 20	सुग्रीव 19	दैवारिक 18	पितृ 17

वायव्य पश्चिम नैर्ऋत्य

इस विषय में शास्त्रों में निम्न बातें लिखा गया हैः—

ईशा मुध्नि समाश्रिता श्रवणयोपर्जच नामादितिः।
आपतस्य गले तदंशयुगले प्रोक्तों जयदूचारितिद।

उक्तावर्णत—भधरौ स्तनयुगे स्यादापवत्सो हदि,
पंचेंद्रादि सुराइच दक्षिणभुजे वामे नागादभः।।

सावित्रः सविताच दक्षिण करें वामे दस्वयंरूद्रतः
मृत्यु मैत्रगणस्तथारू विषये स्मान्नागिनपुष्ठे विधिः।।

मेट्रे शुक्र—जयौच जातु युगले तौ वाहिन—रोगौस्मृतौ।।
पूषानन्दिइच सप्तादि बुधार अल्पो पदों पैतृकाः।।
मैरौच राष्ट्रैष्वपि सिद्धलिंगे वास्तुसहस्त्रेण पदे प्रपूज्यः।।

वास्तु पुरूष के विभिन्न अंगों में निम्न देवता बैठे हैं।

शरीर के अंग	देवता का स्थान
मस्तक में	शिव
दोनों कानों में	पर्जन्य—दिति,
गले के ऊपर	आपदेव,
दोनों स्तनों पर	अर्यमा—पृथ्वीधर,
दोनों कंधो पर	जय—अदिति,
हृदय के ऊपर	आपवत्स,
दायें हाथ के पहुंचे तक	सावित्र—सविता,
दायीं कोहनी से पहुंचे तक	रुद्र, रुद्रदास,
जांघ पर	मृत्यु और मित्र
नाभि के पीछे	ब्रह्म उपस्थ
जननेंद्रिय स्थान पर	इंद्र—जय,
दोनों घुटनों के ऊपर	अग्नि—रोग,
एक पैर की नली पर	नंदी, सुग्रीव, पूषा, वरुण, असुर, शोण, पापयक्ष्मा
दोनों एड़ियों पर	पितृ देवता

गृह वास्तु में 81 पद के वास्तु चक्र का निर्माण किया जाता है। 81 पदों में 45 देवताओं का निवास होता है। ब्रह्माजी को मध्य में 9 पद दिये गये है। चारों दिशाओं में 32 देवता व मध्य में 13 देवता स्थापित होते हैं। इनके नाम एवं मंत्र इस प्रकार हैं—

क्रम	नाम	मंत्र
1.	शिखी (ईश)	ॐ शिख्ये नमः
2.	पर्जन्य	ॐ पर्जन्यै नमः
3.	जयन्त	ॐ जयन्ताय नमः
4.	इन्द्र	ॐ कुलिशयुधाय नमः
5.	सूर्य	ॐ सूर्याय नमः
6.	सत्य	ॐ सत्याय नमः
7.	भृश	ॐ भृशसे नमः
8.	अंतरिक्ष(आकाश)	ॐ आकाशाये नमः
9.	अनिल(वायु)	ॐ वायवे नमः
10.	पूषा	ॐ पूषाय नमः
11.	वितथ	ॐ वितथाय नमः
12.	बृहत्क्षत	ॐ बृहत्क्षताय नमः
13.	यम	ॐ यमाय नमः
14.	गन्धर्व	ॐ गन्धर्वाय नमः
15.	भृंगराज	ॐ भृंगराजाय नमः
16.	मृग	ॐ मृगाय नमः
17.	पितृ	ॐ पित्रे नमः
18.	दौवारिक	ॐ दौवारिकाय नमः
19.	सुग्रीव	ॐ सुग्रीवाय नमः
20.	पुष्पदंत	ॐ पुष्पदन्ताय नमः
21.	वरूण	ॐ वरूणाय नमः
22.	असुर	ॐ असुराय नमः
23.	शेष	ॐ शेषाय नमः
24.	पापयक्ष्मा	ॐ पापहाराय नमः
25.	रोग	ॐ रोगहाराय नमः
26.	नाग(अहि)	ॐ अहिये नमः
27.	मुख्य	ॐ मुख्यै नमः
28.	भल्लाट	ॐ भल्लाटाय नमः
29.	सोम(कुबेर)	ॐ सोमाय नमः
30.	भुजंग(सर्प)	ॐ सर्पाय नमः
31.	अदिति	ॐ अदितये नमः
32.	दिति	ॐ दितये नमः
33.	आप	ॐ आप्यै नमः
34.	सावित्री	ॐ सावित्रे नमः

35.	जय	ॐ जयाय नमः
36.	रूद्र	ॐ रूद्राय नमः
37.	अर्यमा	ॐ अर्यमाय नमः
38.	सविता	ॐ सविताये नमः
39.	विवस्वान	ॐ विवस्ते नमः
40.	विबुधाधिप	ॐ विबुधाधिपाय नमः
41.	मित्र	ॐ मित्राय नमः
42.	राजयक्ष्मा	ॐ राजयक्ष्मयै नमः
43.	पृथ्वीधर	ॐ पृथ्वीधराय नमः
44.	आपवत्स	ॐ आपवत्साय नमः
45.	ब्रह्मा	ॐ ब्रह्माय नमः

मर्म स्थान

वास्तु में ब्रह्म स्थान के बीच का पांच क्षेत्र अतिमर्म स्थान के अंतर्गत आता है। उसके बाद भूखंड के अंदर बत्तीस क्षेत्र को मर्म स्थान माना जाता है। इस स्थान पर किसी भी तरह का निर्माण कार्य नही करना चाहिए। खंभे एवं दीवारों का निर्माण भी वर्जित है। अन्यथा वास करने वाले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक रूप से पीड़ित रहेंगे। चित्र में गहरे बड़े बिंदु के द्वारा अतिमर्म एवं छोटे बिंदु के द्वारा मर्म स्थान को दर्शाया गया है।
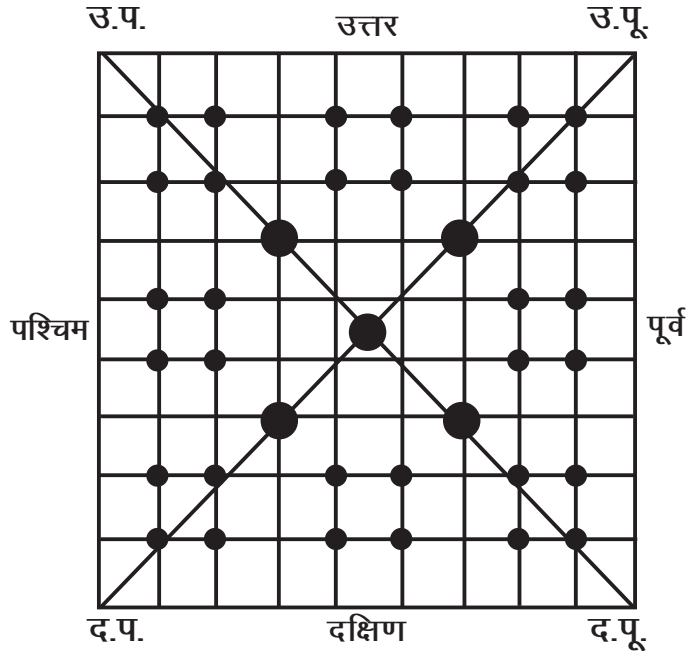
मयमत के अनुसार ब्रह्य स्थान के बाद के तीन क्षेत्र देव, मनुष्य और पिशाच क्षेत्र है। जिनका संबंध सत्व गुण, रजस गुण और तमोगुण से है। देव क्षेत्र के अंतर्गत सोलह भाग आते हैं। मनुष्य क्षेत्र के अंतर्गत चौबीस भाग आते हैं। जबकि पिशाच क्षेत्र के अंतर्गत बत्तीस भाग आते हैं। देव और मनुष्य क्षेत्र में भवन का निर्माण करना चाहिए। जबकि पिशाच क्षेत्र में भवन का निर्माण करना उपर्युक्त नही होता। इस स्थान को अधिक से अधिक खुला हुआ रखना लाभदायक होता है।

वास्तु पुरुष की स्थापना :

भवन में सुख शांति एवं समृद्धि के लिए वास्तु शांति एवं वास्तु पूजा आवश्यक है। वास्तु पुरुष हर मकान का संरक्षक होता है। वास्तु शांति के समय वास्तु–पुरुष की प्रतिमा मकान की पूर्व दिशा में उचित स्थान पर विधिपूर्वक स्थापित करनी चाहिए लेकिन गोचर के सूर्य से विचार करना चाहिए कि वास्तु देव की पूजा किस समय किस दिशा में करना अत्याधिक लाभकारी एवं कल्याणकारी होगा। जब सूर्य वृष, मिथुन एवं कर्क राशि में हो तो आग्नेय कोण, सूर्य सिंह, कन्या, तुला राशि में हो तो नैऋत्य कोण वृश्चिक, धनु ,मकर राशि मकर का सूर्य हो तो वायव्य कोण एवं कुंभ, मीन, एवं मेष राशि में सूर्य हो तो आग्नेय कोण में वास्तु पुजा करने से कल्याण होता है। वास्तु शांति और पूजन के द्वारा नुकसान और दुर्भाग्य से गृहस्वामी की रक्षा होती है।

उ.प. उत्तर उ.पू.

पिशाच क्षेत्र

मनुष्य क्षेत्र

देव क्षेत्र

पश्चिम ब्रह्या स्थान पूर्व

सत्व गुण

राजस गुण

तमो गुण

द.प. दक्षिण द.पू.

वास्तु स्तुति में कहा गया हैः–

सशैल सागरां पृथ्वी यथावहसिमूर्धनि।
तथा मां वह कल्याण संपद् संतति भिः सह।।

अतः जिस प्रकार आप बड़े–बड़े पर्वतों और महासागरों को धारण करने वाली पृथ्वी का भार वहन करते हैं उसी प्रकार मेरी संतान, मेरी धन संपदा तथा मेरी घर की रक्षा करें। वास्तु पुरूष के मुंह से हमेशा तथास्तु निकलता रहता है। इस कारण मकान या घर में कभी दुर्वचन या गलत बातें नहीं बोलनी चाहिए। हमेशा शुभ–शुभ बोलें। घर में राशन पानी नहीं है ऐसा कभी न बोलें। कारण, यह सुनकर वास्तु पुरुष के तथास्तु कहने से सचमुच ही उस मकान का अनाज खत्म हो जाएगा और घर में भुखमरी की हालत पैदा हो जाएगी। यही कारण है कि वास्तु पुरुष को नैवेद्य चढ़ाना चाहिए। नैवेद्य रोज न चढ़ा सकें तो कम–से–कम पूर्णिमा और अमावस्या के दिन तो वास्तु पुरुष को नैवेद्य अवश्य चढ़ाएं। 6 माह के भीतर इसका शुभ परिणाम दिखाई देगा। घर में सुख शांति में वृद्धि होगी। घर में वास्तु के निम्न मंत्रो से वास्तु देव का पूजन करना विशेष फलदायी होता हैः–

वास्तु देवा नमस्तेस्तु भूश यनिप्त प्रभो।
मद् गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरूसर्वदा।ऊँ।

वास्तुशान्ति मंत्रः–

ऊँ नमो भगवते वास्तु पुरूषाय
महाबल पराक्रममाय
सर्वाधिवासश्रित शरीराय ब्रह्मपुत्राय
सकल ब्रह्माण्ड धारिणे भूभारार्पितमस्तकाय
पुरपत्तन प्रासाद गृहवापी सरः कूपादेः
सन्निवेश सान्निध्य कराय
सर्वसिद्धिप्रदाय प्रसन्नवदनाय विश्वंभराय
परमपुरूषाय शक्रवरदाय वास्तेष्पते नमस्ते।।

3. वास्तु में दिशाओं का महत्व

वास्तुशास्त्र दिशात्मक ऊर्जा पर आधारित एक व्यवहारिक विज्ञान है। वास्तु विज्ञान में आठ दिशाओं अर्थात चार मुख्य दिशाएं उत्तर, पूर्व , दक्षिण और पश्चिम तथा चार कोणीय दिशाओं उत्तर–पूर्व (ईशान्य), दक्षिण–पूर्व (आग्नेय), दक्षिण–पश्चिम (नैऋत्य) और उत्तर–पश्चिम (वायव्य) के आधार पर पूरे वास्तु की गणना की जाती है। सभी कोणीय दिशाओं पर दोनो दिशाओं का संयुक्त प्रभाव रहता है। अतः वास्तुशास्त्र में प्रत्येक दिशा का अपना अलग महत्व होता है क्योंकि प्रत्येक दिशा पर अलग–अलग ग्रहों, देवताओं तथा विभिन्न दिशाओं से आने वाली ब्रह्मांडीय शक्ति , रश्मि एवं ऊर्जाओं का संयुक्त प्रभाव रहता है। इस कारण से हमारे ऋषि–मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व इस बात की आवश्यकता महसूस किया कि दिशाओं को ठीक रखना चाहिए ताकि अच्छे वास्तु के साथ मनुष्य सुख–शांति, समृद्धि एवं आरोग्य पूर्वक अपने जीवन को व्यतीत कर सके। वास्तु में दिशाओं का निर्धारण दिशा सूचक यंत्र के द्वारा भूखंड के केन्द्र में रखकर की जाती है।

पूर्व दिशाः–

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 67 $1/2^0$ से 112 $1/2^0$ तक के क्षेत्र को पूर्व दिशा कहा गया है। इस दिशा का स्वामी ग्रह सूर्य एवं देवता इन्द्र हैं। सूर्य पूर्व दिशा में उगता है इस कारण से प्रथम स्थान दिया गया है। यह दिशा अच्छे स्वास्थ्य, बुद्धि, धन, भाग्य एव सुख–समृद्धि का द्योतक है। अतः भवन निर्माण के साथ पूर्व दिशा का कुछ स्थान खुला छोड देना चाहिए एवं इस स्थान को नीचा रखना चाहिए। अन्यथा पितृगण का आर्शीवाद नही मिल पायेगा। घर में मुखिया का स्वास्थ्य खराब रहेगा तथा आयु में कमी होगी। साथ ही वंश की हानि होने की संभावना बनी रहेगी। इस दिशा के दोषपूर्ण होने पर सिर, दॉत, जीभ, मुंह एवं ह्रदय संबंधी बीमारियां देखने को मिलती है।

उ.प. $292\frac{1}{2}^0$-$337\frac{1}{2}^0$	उ. $337\frac{1}{2}^0$-$22\ \frac{1}{2}^0$	उ.पू. $22\ \frac{1}{2}^0$-$67\ \frac{1}{2}^0$
प. $247\frac{1}{2}^0$-$292\frac{1}{2}^0$	**BRAHMA ASTHAN** **ब्रह्मा**	पू. $67\ \frac{1}{2}^0$-$112\frac{1}{2}^0$
द.प. $202\frac{1}{2}^0$-$247\frac{1}{2}^0$	द. $157\frac{1}{2}^0$-$202\frac{1}{2}^0$	द.पू. $112\frac{1}{2}^0$-$157\frac{1}{2}^0$

पश्चिम दिशाः–

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 247 1/2^0 से लेकर 292 1/2^0 के मध्य क्षेत्र को पश्चिम दिशा कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह शनि एवं देवता वरूणदेव है। यह दिशा सफलता, प्रसिद्धि, संपन्नता तथा उज्जवल भविष्य प्रदान करती है। इस दिशा में गढ्ढा, दरार नीचा एवं दोषपूर्ण रहने पर मन चंचल रहता है, मानसिक तनाव बनी रहती है और किसी भी कार्य में पूर्ण रूप से सफलता नहीं मिल पाती है। साथ ही गुप्तांग एवं पेट से संबंधित परेशानियां पायी जाती है।

उतर दिशाः–

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 337 1/2^0 से लेकर 22 1/2^0 के मध्य क्षेत्र को उतर दिशा कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह बुध एवं देवता कुबेर है। यह दिशा सभी प्रकार के सुख देती है। यह दिशा बुद्धि, ज्ञान, चिंतन, मनन विद्या एवं धन के लिए शुभ होती है। यह दिशा मातृ भाव का भी द्योतक है। उत्तर स्थान में खाली स्थान छोडकर भवन का निर्माण करने से माता का लाभ एवं सभी प्रकार के भौतिक सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। इस दिशा को ऊँचा एवं दोषपूर्ण रखने पर छाती, दिल एवं फेफड़े से संबंधित रोगों की अधिकता पायी जाती है।

दक्षिण दिशाः–

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 157 1/2^0 से 202 1/2^0 के मध्य क्षेत्र को दक्षिण की दिशा कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह मंगल एवं देवता यम् है। यह दिशा सफलता, यश, पद, प्रतिष्ठा एवं धैर्य की द्योतक है। यह दिशा पिता के सुख का भी कारक है। यह दिशा बायां सीना एवं मेरूदंड का भी कारक है। इस दिशा को जितना भारी एवं ऊँचा रखेंगे उतना ही लाभदायी सिद्ध होता है। इस दिशा में दर्पण एवं पानी की व्यवस्था रखने पर बीमारी की संभावनायें बनी रहती है।

आग्नेय क्षेत्रः–

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 112 1/2^0 से 157 1/2^0 के मध्य क्षेत्र को आग्नेय दिशा कहा गया है। इस दिशा का स्वामी ग्रह शुक्र एवं देवता अग्नि है। इस दिशा का संबंध स्वास्थ्य से है। साथ ही यह दिशा बायीं भुजा , घुटना एवं बायें नेत्र को प्रभावित करता है। यह दिशा परमात्मा की सृष्टि को आगे बढाता है अर्थात् प्रजनन क्रिया एवं काम जीवन पर इस दिशा का अधिकार है। यह दिशा निद्रा एवं उचित शयन सुख को भी दर्शाता है। यदि इस दिशा में किसी तरह का दोष हो जैसे आग्नेय दिशा में पानी व अंडरग्रउन्ड टैंक का होना बहुत बडी मुसीबतों को निमंत्रण देता है। स्त्री, पुरूषों के अपेक्षा ज्यादा नुकसान में रहती है। किसी न किसी रूप में स्वास्थ्य खराब रहता है। घर का कोई न कोई सदस्य बीमार रहता है और अन्य सदस्यगण आलसी हो जाते है। यह दिशा दोषरहित रहने पर घर में रहने वाले को उर्जावान बनाती है साथ ही घर के मुखिया को संतान एवं पत्नी का उत्तम सुख देती है।

नैऋत्यः–

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 202 1/2^0 से लेकर 247 1/2^0 के मध्य के क्षेत्र को नैऋत्य दिशा कहते है। इस दिशा का स्वामी राहु एवं देवता नैऋति नामक राक्षसी है। यह दिशा असुर, क्रुर कर्म करने वाले

व्यक्ति या भूत पिचास की दिशा है। इसलिए इस दिशा को कभी खाली या रिक्त नही रखना चाहिए। दक्षिण–पश्चिम का क्षेत्र पृथ्वी तत्व के लिए निर्धारित है। यह सभी तत्वों से स्थिर है। यह दिशा सभी प्रकार के विषमताओं एवं संघर्षों से जुझने की क्षमता प्रदान करती है। साथ ही स्थायित्व , सही निर्णय एवं किसी भी निर्णय को मजबूती से दिलवाने में मदद करती है। यह दिशा आयु अकस्मात् दुर्घटना, बाहरी जनेन्द्रीयां, बायां पैर, कुल्हा, किडनी, पैर की बीमारियां, स्नायु रोग आदि का प्रतिनिधित्व करती है। यदि इस क्षेत्र में गढ्ढा नीचा और पानी हो तो गृह स्वामी जीवित लाश बनकर रह जाता है। भाग्य सो जाता है। आकाल मृत्यु, दुर्घटना, पोलियो तथा कैंसर जैसे आसाध्य बीमारियों का सामना करना पड़ता है। जीवन में फटेहाली एवं गरीबी छा जाती है ।

वायव्य क्षेत्रः–

292 1/2^0 से लेकर 337 1/2^0 के मध्य के क्षेत्र को वायव्य कहा जाता है। इस दिशा में ग्रहों के रूप में चंद्र एवं देवताओं के रूप में पवनदेव का स्थान माना गया है। यह मित्रता एवं शत्रुता को बतलाता है। इस दिशा का संबंध अतिथियों एवं संबंधियों से है। यह दिशा मानसिक विकास एवं विद्वता की परिचायक है। साथ ही काल पुरूष के शरीर में नाभी, आँत, पिताशय, शुक्राणु, गर्भाशय, पेट का उपरी भाग, दायां पैर एवं घुटने का भी प्रतिनिधित्व करती है। यदि इस दिशा में किसी तरह का दोष हो जैसे वायव्य क्षेत्र का ईशान्य क्षेत्र के अपेक्षा नीचा रहना, वायव्य क्षेत्र में अत्यधिक ऊँची भवनों का निर्माण तथा वायव्य क्षेत्र को नैऋत्य एवं आग्नेय क्षेत्र के अपेक्षा ऊंचा होना शत्रु के संख्या में वृद्धि करेगा एवं स्त्रियों को रोग ग्रस्त बनाएगा। साथ ही नेत्र ज्योति में कमी, अस्थमा, गर्भाशय एवं पाचन शक्ति से संबंधित रोगो से सामना करना पडेगा।

ईशान्यः–

चुम्बकीय कंपास से 22 1/2^0 से 67 1/2^0 के मध्य के क्षेत्र को ईशान्य क्षेत्र कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह गुरू और परमपिता परमेश्वर स्वयं है। यह दिशा बुद्धि, ज्ञान, विवेक, धैर्य और साहस का सूचक है। इस दिशा को साफ सुथरा, खुला नीचा एवं कम से कम निर्माण कार्य करना चाहिए। इस दिशा के निर्दोष रहने पर अध्यात्मिक , मानसिक, एवं आर्थिक संपन्नता देखने को मिलती है। साथ ही वंश की वृद्धि एवं अच्छे वाणी बोलने वाले होते है। इस दिशा में शौचालय, सेप्टिक टैंक एवं कूड़े–करकट रखने पर सात्विकता में कमी, वंश वृद्धि में अवरोध, नेत्र, कान, गर्दन एवं वाणी में कष्ट होता है। अतः इस दिशा को ठीक रखना आवश्यक है।

दिशा और देवता

वास्तु सिद्धांत के अनुसार चार प्रमुख दिशाओं के अलावा चार उपदिशाओं अर्थात् आठ दिशाओं के आधार पर पूरे वास्तु की गणनाएं की जाती हैं। सभी कोणीय दिशाओं पर दोनों दिशाओं का प्रभाव रहता हैं। अतः वास्तु शास्त्र में प्रत्येक दिशा का अपना अलग महत्व होता हैं। क्योकि प्रत्येक दिशा पर अलग–अलग देवताओं, ग्रहों एवं विभिन्न दिशाओं से आने वाली ब्रह्मांडीय शक्तियों एवं ऊर्जाओं का संयुक्त प्रभाव रहता हैं।

दिशा और देवता

उ.प. वायु	उ. कुबेर	उ.पू. शिव
प. वरूण	**BRAHMA ASTHAN** **ब्रह्मा**	पूर्व इन्द्र
द.प. नैऋति	द. यम्	द.पू. अग्नि

दिशा और ग्रह

उ.प. चंद्र	उ. बुध	उ.पू. गुरु
प. शनि	**BRAHMA ASTHAN** **ब्रह्मा**	पूर्व सूर्य
द.प. राहु	द. मंगल	द.पू. शुक्र

कंपास के द्वारा दिशाओं का निर्धारणः–

वास्तु में दिशाओं का निर्धारण दिशा सूचक यंत्र के द्वारा भूखंड के मध्य भाग अर्थात् केन्द्र में रखकर की जाती है। दिशा सूचक यंत्र में एक चुंबकीय सुई होती है जो धुरी पर स्थित होती है इस सुई पर एक तरफ लाल निशान होता है जो उतरी भाग को सूचित करता है एवं दूसरी तरफ काला निशान होता है जो दक्षिणी दिशा को सूचित करता है। किसी भी भूखंड के मध्य में जाकर इस चुंबकीय कंपास को हथेली या जमीन के मध्य भाग पर एक मिनट तक स्थिर रखते है। चुंबकीय सुई के लाल भाग हमेशा अपने उतरी भाग की ओर स्थिर हो जाता है जो स्पष्ट रूप से उतर दिशा को दर्शाता है। तदुपरान्त चुंबकीय

कंपास के लाल सुई को 0^0 या 360^0 पर स्थित करके पूरे दिशाओं की जानकारी प्राप्त हो जाती है। उत्तर दिशा के तरफ मुँह कर खड़े हो जायें और दोनो हाथ को दायें एवं बायें तरफ करें। दायें हाथ की तरफ पूर्व की दिशा एवं बायें हाथ की तरफ पश्चिम की दिशा हो जाएगी और आपकी अपनी पीठ की तरफ दक्षिण की दिशा होगी। इस तरह चुंबकीय कंपास के द्वारा सरल तरीके से दिशाओं का निर्धारण किया जा सकता है।
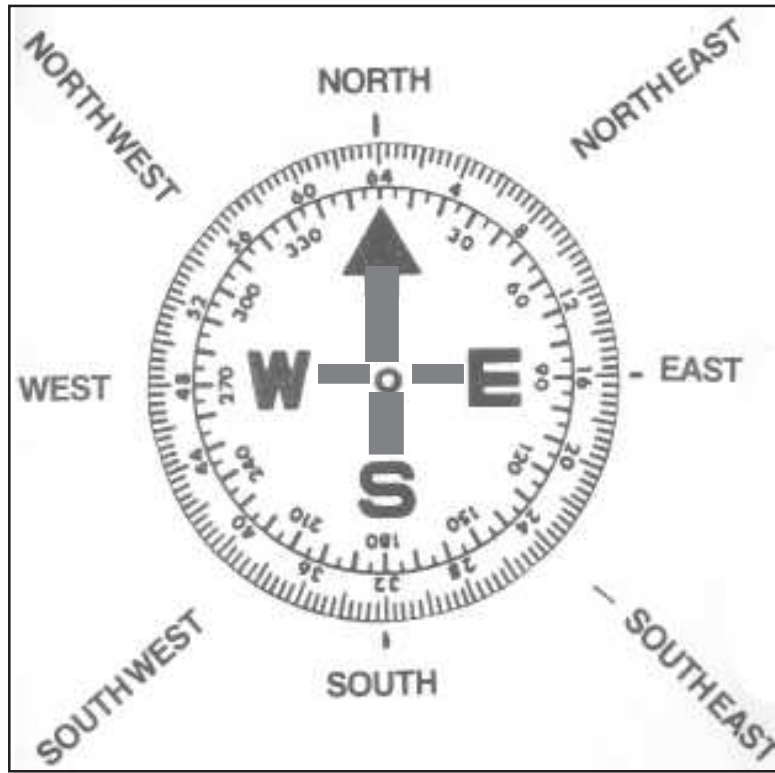
4. पंचमहाभूतात्मक तत्व का वास्तु में महत्व
Importance of five main elements in Vastu

पंचमहाभूत

हम सभी जानते हैं की मनुष्य एवं ब्रह्माण्ड कि रचना पांच तत्वों – पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि तथा वायु से हुई है। मनुष्य के जीवन में इनका बड़ा महत्व है। इनके द्वारा हमारा शरीर कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन तथा वसा आदि आंतरिक शक्तिवर्धक तत्व और गर्मी, प्रकाश, ध्वनि एवं वायु द्वारा बाह्य शक्ति ग्रहण करता है। ये तत्व संतुलित रहें तो मानव जीवन सुख–शांति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है, बुद्धि संतुलित रहती है। इसके विपरीत इनमें असंतुलन की स्थिति में अवसाद, तनाव, अस्वस्थता, शारीरिक व्याधि और मष्तिक में अशांति छा जाती है। इसी प्रकार का असंतुलन जब प्रकृति में उत्पन्न होता है, तो तूफान, बाढ़, अग्निकांड, भूकंप आदि अपना तांडव दिखाते हैं। इस संबंध में गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में यह लिखा है कि:–

छिति जल पावक गगन समीरा। पंचरहित यह अधम शरीरा।।

अर्थात यह मानव शरीर पांच तत्व से निर्मित है और पुनः पांच तत्व में विलिन हो जाता है। जब शारीरिक पंचतत्व एवं प्राकृतिक पंचतत्व संतुलित होंगें तभी जीवन सुचारू एवं व्यवस्थित रूप से चलेगा। भवन निर्माण की सामग्री भी इन्हीं पंचतत्वों से बनती है। अतः भवन में पांच तत्वों का संतुलित प्रभाव नही होने पर उसमें निवास करने वाले व्यक्ति को पंच तत्व के असंतुलित प्रभाव प्रभावित करेंगें। जिसके फलस्वरूप सामाजिक, मानसिक, अध्यात्मिक एवं आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्वास्थ्य में कमी एवं विभिन्न प्रकार के समस्याओं से भी संघर्ष करना पड़ता है। अतः सुखमय जीवन के लिए इन तत्वों का संतुलित रहना आवश्यक है।

वास्तु ऊर्जा

(1) आकाश :

ब्रह्मांड में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां आकाश नहीं है। आकाश अनंत है। आकाश में गुरुत्वाकर्षण शक्ति, चुंबकीय बल, विकिरण और पराबैंगनी किरणें, इन्फ्रारेड किरणें, प्रकाश की किरणें, ग्रहों की किरणें इत्यादि विद्यमान हैं। इन सभी का प्रभाव हमारे जीवन एवं पृथ्वी पर पड़ता है। आकाश तत्वों से ही ध्वनि की उत्पत्ति होती है। आकाश के बिना ध्वनि संभव नहीं है। आकाश के शून्य होने के कारण पर्यावरण और हवा के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न होती है। इस तरह ध्वनि का अमूल्य उपहार हमें आकाश से मिला है। मकान एवं दीवार की ऊंचाई के अनुरूप मकान को आकाश की प्राप्ति होती है। मंदिर, गुरुद्वारे के गुंबज एवं मस्जिद के मेहराब आकाश शक्ति की विपुलता का प्रतीक हैं। मकान की दीवारें छोटी हों तो
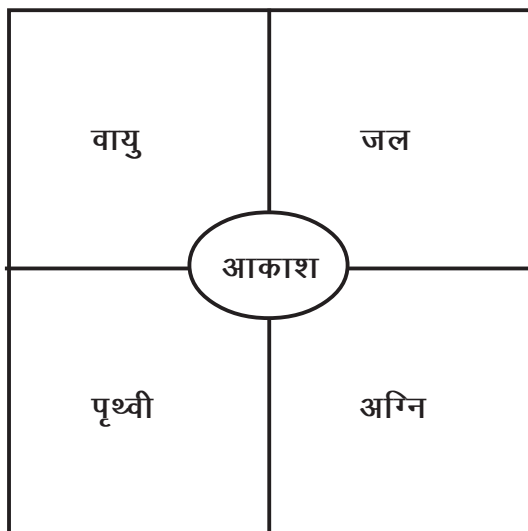
व्यक्ति को घुटन महसूस होती है। उसके शरीर में आकाश तत्व का समुचित विकास नहीं होता। इसलिए मकान इस तरह बनाना चाहिए ताकि प्रकृति से मिलने वाली दृश्य एवं अदृश्य सकारात्मक ऊर्जा और शक्ति का पूरा–पूरा लाभ मिलता रहे।

2. वायु (हवा) :

वनस्पति तथा जीव–जंतु वायु से जीवन प्राप्त करते हैं, जिससे पौरुष एवं प्राण शक्ति जाग्रत होती है। अर्थात जिस प्रकार वायु शरीर का संचालन करती है, उसी प्रकार भवन में वायु स्वस्थ वातावरण का संचालन करती है। पृथ्वी गैसीय आवरण से ढकी हुई है। इस गैसीय आवरण को वायुमंडल (Atmosphere) कहते हैं। वायुमंडल में विभिन्न गैस जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाइआक्साइड इत्यादि हैं। पृथ्वी के वातावरण में सर्वाधिक अंश नाइट्रोजन का है। यह 78% है, जो कि सभी वनस्पतियों के विकास के लिए आवश्यक है। वायुमंडल में ऑक्सीजन (प्राण वायु) की मात्रा 21% है जो लगभग 1/5 भाग है। अन्य ग्रहों पर ऑक्सीजन नहीं है, अतः वहां जीवन भी नहीं है। वायुमंडल में कार्बन बहुत अल्प मात्रा में 0.03%, कार्बन मोनोक्साइड (Co) तथा कार्बन डाइऑक्साइड (Co_2) इन दो स्वरूपों में मिलता है। इनके अतिरिक्त आर्गन 0.93%, हाइड्रोजन 0.01%, अन्य गैसें 0.01%। भारी और आवश्यक गैसों का जमाव पृथ्वी से 5 किमी.की ऊंचाई तक ही सीमित है। पृथ्वी की सतह से करीब 16 किमी. की ऊंचाई पर सूर्य की किरणों के प्रभाव से ऑक्सीजन ओजोन (Ozone) में बदल जाती है। ओजोन (O3) एक ऐसा अणु है जिसमें ऑक्सीजन के तीन परमाणु होते हैं और 23 किमी. की ऊंचाई पर इसकी परत सबसे मोटी होती है। ओजोन की यह तह काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सूर्य द्वारा उत्सर्जित हानिकारक पराबैंगनी विकिरणों का अवशोषण करती है। ओजोन के फटने पर पृथ्वी का ताप (Temperature) बढ़ जाएगा जिससे बर्फ पिघलने लगेगा और उससे जलप्लावन का खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

अधिकतर पेड़–पौधे दिन के समय वातावरण में व्याप्त कार्बन डाइऑक्साइड (Co_2) लेते हैं तथा ऑक्सीजन छोड़ते हैं। किंतु रात के समय इसके विपरीत क्रिया होती है और वे ऑक्सीजन लेते तथा कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। केवल पीपल का पेड़ इसका अपवाद है। कार्बन डाइऑक्साइड हमारे शरीर के लिए हानिकारक है, अतः रात को पेड़ों के पास सोना नहीं चाहिए।

दूषित ईशान :

वास्तु या भवन के ईशान कोण में अत्यंत मंगलदायी (शुभ) पराबैंगनी किरणें आती रहती हैं। यदि इस कोने में गंदगी रहे तो उससे निकलने वाली कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन तथा अन्य आवश्यक गैसें उन शुभ लौकिक किरणों को दूषित कर देंगी।

भवन श्मशान के समीप नहीं होना चाहिए :

मृतक शरीर की दाह क्रिया से निकलने वाले कार्बन तथा अन्य गैसें मानव जीवन पर बुरा प्रभाव डालती हैं।

शब्द और स्पर्श वायु महातत्व के दो विशेष गुण हैं :

स्पर्श से संवेदना, संवेदना से चेतना (स्पर्श ज्ञान) और चेतना से प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। तभी तो हम जाड़े की सर्द या गर्मी की पछुआ हवा पर तुरंत प्रतिक्रिया कर बैठते हैं।

वायु मनुष्य के लिए प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है :

वस्तुतः वायु मानवता को अनंत शक्ति से मिलने वाला एक अमूल्य उपहार है। मकान में वायु का प्रवेश द्वार एवं खिड़कियों से होता है। अतः मकान बनाने में वायु के प्रवेश का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भारत में हवा के लिए उत्तर दिशा खुली होनी चाहिए। घर में रोशनदान और खिड़कियों द्वारा Cross Ventilation की व्यवस्था होनी चाहिए।

3. अग्नि (Fire):

सूर्य ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है। सूर्य से हमें मुख्यतः गर्मी (उष्णता) एवं प्रकाश प्राप्त होते हैं। उष्णता अग्नि का एक स्वरूप है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है जिसके फलस्वरूप दिन और रात एवं मौसम में परिवर्तन होते हैं। वर्षा, हवा तथा सूर्य की गर्मी एवं प्रकाश से जीवधारी उत्साह, साहस एवं शक्ति प्राप्त करते हैं। विश्व की अधिकांश कॉलोनियां की बनावट ऐसी की गई हैं जिससे पर्याप्त मात्रा में घर के अंदर सूर्य ऊर्जा का प्रवाह हो सके। परंतु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' सूत्र के अनुसार सूर्य का तेज और उसकी तीक्ष्ण रश्मियां घर पर ज्यादा नहीं पड़ने चाहिए। पहाड़ी क्षेत्र में पूर्वाभिमुख मकानों में रहने वाले लोग परेशान रहते हैं। क्योंकि दोपहर तक तपते हुए सूर्य के कारण सारा घर गर्म हो जाता है। अतः आवासीय घर में अग्नि तत्व का सुखद आनुपातिक सम्मिश्रण होना चाहिए ताकि सर्दी में गर्मी एवं गर्मी में ठंडक महसूस हो सके।

4: जल (Water):

पृथ्वी पर जल एक महत्वपूर्ण तत्व है। जल से ही जीवन है। प्राणी हो या वनस्पति, जल के बिना जीवित

नहीं रह सकते। जल का साम्राज्य पृथ्वी के दो–तिहाई भाग पर है। झील, सागर और महासागर इसके विभिन्न रूप हैं जो धरातल के 71% भाग पर फैले हुए हैं। सौरमंडल में एकमात्र जलीय ग्रह पृथ्वी ही है। पर्यावरण की गर्म वायु ठंडी होकर तरल रूप में परिणत हो जाती है और फिर जल की बूदों के रूप में आकाश में छा जाती है। इसे बादल कहते हैं। इसी बादल से वर्षा होती है, जिससे नदियों, झीलों तथा समुद्र में जल संचित होता है। जल में भी एक अंश ऑक्सीजन विद्यमान है। इसी से जलीय जीव–जंतु जल में भी जिंदा रहते हैं क्योंकि उन्हें प्राण वायु ऑक्सीजन के रूप में जल से प्राप्त होती रहती है।

हमारे शरीर में भी कुल वजन का 3/4 भाग पानी का है। पानी की कमी हो जाने पर हम बीमार हो जाते हैं। केवल जीव–जन्तु, पेड़–पौधे को ही नहीं बल्कि मकान को भी इसकी प्रचुर मात्रा में आवश्यकता पड़ती है। स्वाद (Taste), स्पर्श (Feelings) एवं शब्द (Sound) जल की विशेषाताएं हैं।

घर बनाते समय इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए कि उसमें पानी का पर्याप्त स्रोत हो। उत्तर–पूर्व भाग में दैनिक उपयोग में आने वाले पानी का स्रोत होना चाहिए। पानी में प्रदूषण शीघ्र होता है किंतु सूर्य ताप से वह शुद्ध होता रहता है। इस सिद्धांत को "इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पैक्ट्रम" सिद्धांत कहते हैं। घर में नाली की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि वर्षा से घर को नुकसान न हो। जल स्थान भी शुद्ध दिशा में रहे इसका खास ख्याल रखना चाहिए।

5. पृथ्वी (Earth):

पृथ्वी एक ग्रह है जिस पर हवा, पानी तथा अनेक खनिज पदार्थ इत्यादि पाए जाते हैं। पृथ्वी की ऊपरी सतह को मिट्टी कहते हैं। पत्थर, बालू, लौह, लाइम आदि मिट्टी के अंश हैं। पृथ्वी के गर्भ में निश्चित स्थान पर दक्षिण–उत्तर में स्थित चुंबक तथा पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी पृथ्वी के सभी जीवधारियों और निर्जीव पदार्थों पर अपना प्रभाव रखती है। पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों से जीवन क्रम आरंभ हुआ इसलिए पृथ्वी को माता कहते हैं। भवन निर्माण करते समय भूमि पूजन का वास्तविक उद्देश्य यही है। पृथ्वी के बिना आवास और जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण और चुंबकीय शक्ति का केंद्र है। इन्हीं शक्तियों के कारण पृथ्वी अपनी धरातल पर बनने वाले भवनों को सुदृढ़ आधार देती है। पृथ्वी की सतह आकृति, मिट्टी, इत्यादि अलग–अलग जगहों पर अलग–अलग होती हैं। मिट्टी, सतह की आकृति, रूप, रंग, गंध आदि का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, मकान बनाते वक्त इस बात का खास तौर पर ध्यान रखना चाहिए। पृथ्वी में स्पर्श, शब्द, रस और रूप के अतिरिक्त गंध रूपी विशेष गुण भी विद्यमान है।

पंचतत्व का निवास स्थान

हमारे ऋषियों ने अपनी गहन साधनाओं एवं चिंतन के द्वारा पंच तत्वों के बारे में पता लगाया कि प्रत्येक दिशा पर इनका अलग अलग अधिकार है तथा शरीर के विभिन्न हिस्सों पर इनका एक अपना विशेष प्रभाव पड़ता है।

उन्होंने कहा कि पांच तत्वों का यह शरीर पुनः पांच तत्वों में विलीन हो जाता है।

आकाश + अग्नि + वायु + जल + पृथ्वी = निर्माण की क्रिया
वायु + जल + अग्नि + पृथ्वी + आकाश = ध्वंस प्रक्रिया

शरीर में पांच तत्वों का वास

मस्तिष्क में	:	आकाश
कंधों में	:	अग्नि
नाभि में	:	वायु
घुटनों में	:	पृथ्वी
पादांत में	:	जल

हाथों में पांच तत्वों का वास

अंगुष्ठ में	:	आकाश
तर्जनी में	:	वायु
मध्यमा में	:	अग्नि
अनामिका में	:	जल
कनिष्ठा में	:	पृथ्वी

पंचमहाभूतात्मक तत्वों का भवन के अंदर सम्यक तालमेल रहने से आवसीय भवन, दुकान, कार्यालय, होटल, बगीचा, उद्योग एवं व्यवसायिक परिसर समग्र उन्नति एवं विकास करते हुए दीर्घजीवी होती है। अतः पंचमहाभूतात्मक तत्वों का सही समिश्रण कर मकान बनाना चाहिए।

भवन निर्माण में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का महत्व

हमारी प्रकृति में अनंत शक्तियां विद्यमान हैं, जिनसे सृष्टि, विकास और प्रलय की प्रक्रिया चलती रहती है। वास्तु शास्त्र में पंचमहाभूतों के साथ प्रकृति की तीन शक्तियों पर विचार किया जाता है।

1. गुरुत्व शक्ति
2. चुंबकीय शक्ति
3. सौर ऊर्जा

1. गुरुत्व शक्ति :

पृथ्वी में चुंबकीय तरंग एवं अन्य शक्तियों के कारण एक विशेष आकर्षण शक्ति है जिसके फलस्वरूप आकाश से गिरने वाली वस्तु को अपनी ओर खींच लेती है जिसे गुरूत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं। इसी शक्ति के फलस्वरूप पृथ्वी पर सभी प्रकार के गतिविधियों का संचालन होता है। अन्यथा पृथ्वी पर हमसब तैरते या उड़ते हुए नजर आते। यह गुरूत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही पृथ्वी पर स्थित भवनों में स्थिरता एवं स्थायित्व मिलता हैं। जिस स्थान की मिट्टी जितनी ठोस एवं सख्त होगी उस स्थान पर उतना ही स्थिर एवं स्थायी भवन का निर्माण होगा।

2. चुंबकीय शक्ति :

पृथ्वी एक विशालकाय चुंबक है। इसके गर्भ में लोहे का गर्म तरल पदार्थ है, जिससे विद्युतीय तरंगे उत्पन्न होती है। फलस्वरूप पृथ्वी के चारो ओर एक चुंबकीय क्षेत्र या तरंग का निर्माण होता है। इन्हीं चुंबकीय तरंगों के कारण ब्रह्माण्ड में स्थित ग्रह, नक्षत्र, तारे आदि एक निश्चित दूरी पर रहते हुए नियंत्रित एवं गतिशील हैं। चुंबक के दो ध्रुव होते हैं– उत्तरी और दक्षिणी। इसी प्रकार हमारे पृथ्वी के भी दो ध्रुव हैं – उतरी और दक्षिणी। चुंबकीय आकर्षण और विकर्षण से ही पूरी ब्रह्मांडीय शक्तियां संचालित होती है। यही कारण है कि हमारा शरीर भी इन चुंबकीय तरंगो से प्रभावित एवं नियंत्रित होता है। हमारे शरीर में भी सिर को उत्तरी ध्रुव और पैर दक्षिणी ध्रुव कहा जाता है। यही कारण है कि हमारा सिर जो उत्तरी ध्रुव का प्रतिनिधित्व करता है उसे उत्तर की ओर कर सोने की सलाह नही दी जाती है। क्योंकि पृथ्वी का उत्तरी क्षेत्र मानव के उतरी ध्रुव से विकर्षण करेगा और चुंबकीय प्रभाव अस्वीकार करेगा । जिससे शरीर के रक्त संचार के लिए उचित और अनुकूल चुंबकीय क्षेत्र का लाभ नही मिल सकेगा। फलस्वरूप मस्तिष्क में तनाव होगा और शरीर को शांतिमय निद्रा का अनुकूल अवस्था प्राप्त नही हो पाएगा । दक्षिण की तरफ सिर कर सोने से शरीर के अंदर उत्पन्न चुंबकीय तरंगों में किसी तरह का व्यवधान उत्पन्न नही होता। फलस्वरूप अच्छी नींद आती है तथा स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

3. सौर ऊर्जा :

पृथ्वी को मिलने वाली ऊर्जा का मुख्य स्रोत सूर्य है। सूर्य हमें प्रकाश और ऊर्जा देकर हमारे जीवन को संचालित एवं नियंत्रित करता है। सूर्य के प्रातःकालीन किरणों में विटामिन डी, एफ एवं ए का बहुमूल्य स्रोत है। भवन के उतर–पूर्व को अधिक से अधिक खुला एवं नीचा रखा जाता है। जिससे जीवनदायिनी एवं लाभप्रद सूर्य की किरणों का लाभ भवन को अधिक से अधिक मिलता रहे। मध्याह्न के पश्चात् सूर्य की किरणें रेडियोधर्मिता से ग्रस्त होने के कारण शरीर पर खराब प्रभाव डालती है। इन्हीं कारणों से भवन निर्माण करते समय भवन की बनावट इस प्रकार रखा जाती है, जिससे मध्याह्न के सूर्य की किरणों का प्रभाव शरीर एवं मकान पर कम से कम पड़े। यही कारण है कि भूखंड के दक्षिण–पश्चिम में कम से कम खिडकी एवं द्वार हैं। साथ ही दीवार मोटी एवं ऊँची रखी जाती है। ताकि सूर्य की गर्मी से बचा जा सके। फलस्वरूप गर्मी में ठंडक एवं सर्दीयों में गर्मियों का अनुभव किया जा सके।

5. वास्तु का ज्योतिष से संबंध

वास्तु, ज्योतिष एवं मुहूर्त विज्ञान पर आधारित उच्च कोटि का व्यवहारिक विज्ञान है। ग्रहों और नक्षत्रों के बिना वास्तु का ज्ञान अधुरा प्रतीत होता है। क्योंकि मनुष्य का जीवन भाग्य और वास्तु दोनों से ही सामान रूप से प्रभावित होता है। मनुष्य का भाग्य अच्छा है लेकिन उनकी वास्तु खराब है तो प्रयासों के बावजूद पूर्ण सुख–समृद्धि नहीं मिल पाती है। यदि भाग्य खराब हो एवं वास्तु अनुकूल तो परेशानियां कम होगी लेकिन खत्म नहीं होगी। यदि भाग्य एवं वास्तु दोनों ही खराब हों, तो मनुष्य जीवन भर संघर्षपूर्ण स्थिति से निजात नहीं पा सकता। इसके विपरीत भाग्य के साथ–साथ वास्तु अच्छी रहने पर अधिकतम सुख सुविधा के साथ जीवन यापन करता है। मनुष्य अपने भाग्य को तो बदल नहीं सकता। परंतु वास्तु की सहायता से अपने प्रयत्नों के द्वारा इसे संवार सकता है। ग्रहों की प्रतिकूलता के परिणाम सभी को भोगने पड़ते हैं। जिस प्रकार मानव जीवन पर ग्रहों के शुभाशुभ परिणाम होते हैं उसी तरह अन्य सजीव एवं निर्जीव वस्तुऐं भी ग्रहों एवं रश्मियों के प्रभाव से प्रभावित होते हैं। जहां तक वास्तु का सवाल है भवन में दिशाओं का महत्व है तथा प्रत्येक दिशा किसी न किसी ग्रहों से शासित होता है। दिशाओं के शुभ और अशुभ रहने पर ग्रहों के प्रभाव में भी अंतर आता है। इसलिए कहा जाता है कि वास्तु में दिशाओं को ठीक रखें अन्यथा तत्संबंधी ग्रहों के प्रभाव में भी प्रतिकूलता आ जाएगी। कहा जाता है कि दिशा बदलो दशा बदलेंगी। यदि आपको अपनी दशा में बदलाव लानी है तो उस दिशा को ठीक कर डालिए। तत्पश्चात् आपकी दशा में अवश्य सुधार हो जाएगा। भारतीय ज्योतिष, 9 ग्रह, 12 राशि और 27 नक्षत्र पर आधारित है। सभी राशियों में पंचतत्वों में से किसी न किसी तत्व की प्रधानता रहती है और राशियां भी दिशाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

राशि तत्व एवं दिशा :–

राशि	तत्व	दिशा
मेष	अग्नि	पूर्व
वृष	पृथ्वी	दक्षिण
मिथुन	वायु	पश्चिम
कर्क	जल	उत्तर
सिंह	अग्नि	पूर्व
कन्या	पृथ्वी	दक्षिण
तुला	वायु	पश्चिम
वृश्चिक	जल	उत्तर
धनु	अग्नि	पूर्व
मकर	पृथ्वी	दक्षिण
कुंभ	वायु	पश्चिम
मीन	जल	उत्तर

नौ ग्रह और दिशा स्वामी :—

प्रत्येक दिशा किसी न किसी ग्रहों के आधिपत्य में रहते हैं जिसका वर्णन नीचे किया जा रहा है।

दिशा	स्वामी ग्रह	देवता
उतर	बुध	कुबेर
उतर–पूर्व	गुरू	शिव
पूर्व	सूर्य	इन्द्र
दक्षिण–पूर्व	शुक्र	अग्नि
दक्षिण	मंगल	यम्
दक्षिण–पश्चिम	राहु/केतु	नैऋति
पश्चिम	शनि	वरूण
वायव्य	चंद्रमा	वायु

इस प्रकार देखने का मिलता है कि दिशाओं पर ग्रहों का पूर्ण आधिपत्य है। यदि जन्मपत्री में जातक के ग्रहों के स्थिति अच्छी नही है तो उसकी दशा एवं दिशा दोनों प्रभावित होती है। क्योंकि दोनों के बीच एक अन्योयाश्रय संबंध है। किसी जन्मपत्री में यदि चतुर्थ भाव की स्थिति दोषपूर्ण है तो वास्तु में निश्चित रूप से किसी न किसी दोष का सामना करना पड़ता है और पूर्ण वास्तु का सुख प्राप्त नहीं हो पाता।

6. ग्रहों एवं दिशाओं से संबंधित व्यवसाय

वास्तु में प्रत्येक दिशा किसी न किसी ग्रह द्वारा शासित होता है। अतः किसी भी व्यवसाय को तत्संबंधी दिशाओं एवं ग्रहों के अनुकूल रहने पर विशेष लाभ मिलती है।

पूर्व दिशा :

ग्रहों में सूर्य पूर्व दिशा का स्वामी होता है। दवा, औषधि आदि के लिए पूर्व की दिशा सबसे उपयुक्त है। दवाईयां उत्तर एवं पूर्व के रैक पर रखें। उत्तर–पूर्व के निकट सूर्य की जीवनदायिनी किरणें सर्वप्रथम पड़ती है जो कि दवाईयां को ऊर्जापूर्ण बनाए रखती है। जिसके सेवन से मनुष्य शीघ्रताशीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है। आयुर्वेदिक एवं यूनानी दवा जिसका संबंध सूर्य ग्रह से है, अतः इस कारण इसे पूर्व दिशा की रैक पर रखना लाभप्रद होता है। नशीली पदार्थ से संबंधित दवा पश्चिम में रखना ठीक होता है। इस तरह के भूखंड पर ऊनी वस्त्र, अनाज की आढ़त, आटा पिसने की चक्की तथा आटा मिलों का कार्य भी काफी लाभप्रद होता है।

उत्तर–पूर्व दिशा :

उत्तर पूर्व दिशा का ग्रह स्वामी गुरु है जो कि आध्यात्मिक एवं सात्विक विचारों के प्रणेता हैं। उत्तर पूर्व दिशा अभिमुख भूखंड शिक्षक, प्राध्यापक, पुराणवेता, धर्मोपदेशक, पुजारी, धर्म प्रमुख, प्राच्य एवं गुप्त विद्याओं के जानकार, न्यायधीश, वकील, शासन से संबंधित कार्य करने वाले, बैंकिंग व्यवस्था से संबंधित कार्य, धार्मिक संस्थान, ज्योतिष से संबंधित कार्यों के लिए उत्तर पूर्व का दिशा विशेष लाभप्रद होता है। आध्यात्मिक ग्रंथों के छपाई के कार्य के लिए यह दिशा विशेष लाभकारी होता है। साथ ही बिजली के पंखे तथा पंखों के फैक्ट्री का कार्य भी उत्तर–पूर्व दिशा अभिमुख भूखंड पर करना विशेष लाभप्रद होता है।

ज्योतिष संबंधी कार्य पर देव गुरु बृहस्पति और मनस चेतना का कारक ग्रह बुध का प्रभाव होता है। इसलिए ज्योतिष कार्यालय भूखंड के ईशान या उत्तर के क्षेत्र में रखना लाभप्रद होता है। ज्योतिष कार्यालय में हल्के पीले और हरे रंग का उपयोग अधिक से अधिक करना चाहिए। ज्योतिषी के बैठने के लिए कुर्सी का रंग हरा या पीला लाभप्रद होता है। इन्हें पूर्व या उत्तर की तरफ मुख कर कार्य करना चाहिए। कार्यालय में ज्योतिषी के दायें हाथ के तरफ किताब एवं पंचांग आदि रखना चाहिए। कार्यालय के उत्तर–पूर्व में मां सरस्वती, लक्ष्मी एवं गणेश की यंत्र तथा तस्वीर रखना चाहिए।

उत्तर दिशा :

उतर दिशा का ग्रह अधिपति बुध है जो मनस चेतना का कारक ग्रह है। उत्तर दिशा अभिमुख भूखंड पर ज्योतिष संबंधित कार्य या व्यवसाय काफी लाभप्रद होता है। धार्मिक ग्रंथ का काव्य लेखन, संपादन, दलाली, कमीशन, कम्प्यूटर इंजीनियर, चार्टड एकाउंटेंट, बिजनेस मैंनेजमेंट हेतु बुध का शुभ स्थिति में

रहना अच्छा होता है। बुध का संबंध हिसाब–किताब से भी है। अतः गणित संबंधित कार्य भी इस तरह की भूखंड पर शुभफलप्रद होता है। डाक–तार विभाग, कला, इलेक्ट्रोनिक से संबंधित कार्य, आयात–निर्यात, स्टेशनरी, वास्तुविद्, रेडियो और टेलीविजन विभाग के लिए उत्तर दिशा अभिमुख भूखंड को अच्छा माना जाता है। टेलीविजन तथा रेडियो का संबंध बुध से है, क्योंकि जिन वस्तुओं से अपने आप आवाज पैदा होती है वह बुध की कारक वस्तुएं होती है। कपड़े के कारखाने या कपड़े के कार्य तथा फूल से संबंधित कार्य हेतु उत्तर अभिमुख दिशा लाभप्रद होता है। जेनरल स्टोर की दुकान, पनसारी का दुकान, परचून की दुकान तथा कपडे के छपाई से संबंधित कार्य हेतु भी उत्तर का दिशा शुभ फलदायी होता है।

उत्तर–पश्चिम दिशा :

उतर–पश्चिम दिशा का स्वामी चंद्रमा है जिसे रक्त, मन, संचार का कारक माना जाता है। उत्तर–पश्चिम अभिमुख भूखंड पर जल तथा जल से उत्पन्न पदार्थ, सिंघाड़ा, मछली, दूध, दही एवं घी से संबंधित व्यवसाय करना लाभप्रद होता है। इस तरह की भूखंड पर दुधारू जानवर, घोड़े का व्यापार, कपड़े की खरीद–बिक्री, खेती, शराब, अल्कोहल, चांदी एवं एयर कंडीशन से संबंधित व्यवसाय भी विशेष शुभफलप्रद होता है।

आइसक्रीम या शीतल पेय से संबंधित व्यवसाय के लिए सबसे उपयुक्त उत्तर–पश्चिम (वायव्य) की दिशा है। कांच की खाली बोतलें, गैस, पेय भरने की मशीन दक्षिण में रखें। दूध से संबंधित कार्य वायव्य दिशा की ओर करना लाभप्रद होता है। खासकर कच्चे दूध का भंडारण वायव्य की ओर करना चाहिए क्योंकि दूध का कारक चंद्रमा है। इसे भूलकर भी नैऋत्य या पश्चिम दिशा में नहीं करना चाहिए। नैऋत्य में राहु एवं पश्चिम में शनि ग्रह का अधिपत्य होता है। राहु और शनि चंद्रमा के शत्रु होते हैं, फलस्वरूप इस क्षेत्र में दूध का संग्रह करने से दूध शीघ्र खराब हो जाता है।

पश्चिम दिशा :

पश्चिम दिशा का स्वामी शनि है। इस दिशा पर लोहे का समान, चमड़े का कार्य, कोयला, नीच कर्म, वेश्या की दलाली एवं लकड़ी से संबंधित कार्य करना लाभप्रद होता है। शराब एवं बीयर के कारखाना, लेदर एवं चमड़े के फैक्ट्री के लिए शनि का योग कारक होना आवश्यक है। फर्नीचर तथा लकड़ी की फैक्ट्री का भी शनि से गहरा संबंध है साथ ही शनि लोहे का कारक भी है तथा सभी ट्रांसपोर्ट के साधन जिसका संबंध पैसे कमाने से है वह शनि के प्रभावशाली होने से प्राप्त होता है। डिटर्जेंट तथा साबुन के फैक्ट्री इन कार्यों के लिए पश्चिम दिशा अभिमुख भूखंड विशेष शुभफलप्रद होता है। क्योंकि साबुन की फैक्ट्री का संबंध शनि से है।

पश्चिम अभिमुख भूखंड आंखों के डॉक्टर एवं सीने से संबंधित डॉक्टर के लिए विशेष अच्छा होता है। इस दिशा पर शनि ग्रह का प्रभाव होता है। शनि गंभीर एवं दार्शनिक ग्रह होने के कारण इंजीनियर के लिए योग कारक होता है। अतः यह दिशा कम्प्यूटर इंजीनियर, इलेक्ट्रीकल इंजीनियर एवं सिविल इंजीनियर के लिए विशेष शुभफलप्रद होता है।

दक्षिण–पश्चिम :

दक्षिण–पश्चिम दिशा का स्वामी राहु है। घर के ड्रेनेज पाईप लाईन, रसोई घर में प्रयोग होने वाली चिमनी जिससे धूंआ बाहर जाती है, बिजली में प्रयोग होने वाली सामग्री, जहर से संबंधित कार्य, बैट्री आदि कार्यों के लिए दक्षिण–पश्चिम का दिशा विशेष लाभप्रद होता है। शराब एवं नशे से संबंधित वस्तुओं पर राहु का अधिपत्य होता है इसलिए भरी हुई शराब की बोतलें नैऋत्य कोण में रखें। शराब की खाली बोतलें, कांच की ग्लास आदि दक्षिण दिशा में रखें। पश्चिम में शनि, दक्षिण–पश्चिम में राहु, एवं दक्षिण में मंगल जैसे तामसिक ग्रह का प्रभाव होता है। इसलिए मदिरालय में मैनेजर को पश्चिम या दक्षिण की तरफ मुख कर बैठना चाहिए। इसके साथ ही राजनीतिज्ञों, गुप्तचरों तथा वैज्ञानिकों के लिए दक्षिण–पश्चिम अभिमुख भूखंड विशेष लाभकारी होता है।

दक्षिण :

दक्षिण दिशा का स्वामी मंगल है। यह दिशा खाने–पीने की वस्तुएं, डायनिंग हॉल, होटल, रेस्तरा, होटल व्यवसाय के लिए लाभप्रद होता है। खाने–पीने की सभी वस्तुओं का संबंध मंगल से है अतः जो कार्य अग्नि तथा पीने के वस्तुओं से जुड़ जाता है उनके लिए मंगल की शुभ स्थिति फलदायी होती है। बिजली, रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर, सर्राफे का कार्य, खुफियागिरी का कार्य, फौज की नौकरी, पुलिस, सेना, डॉक्टर, वकील आदि के लिए दक्षिण अभिमुख भूखंड शुभफलदायी होती है।

गैस पर मंगल का अधिकार है इसलिए गैस एजेंसी के व्यवसाय में गैस के सिलेंडर दक्षिण दिशा में रखना उपयुक्त होता है। गैस के सिलेंडर नैऋत्य दिशा की ओर न रखें क्योंकि नैऋत्य दिशा का स्वामी राहु है तथा गैस मंगल का प्रतिकात्मक वस्तु है। अतः इस कारण दोनों के संयोग होने से अंगारक योग का निर्माण होता है। जिस कारण सिलेंडर फटना या गैस रिसने जैसी घटनाएं होती है। पश्चिम की दिशा की ओर भी गैस सिलेंडर न रखें। क्योंकि पश्चिम दिशा का स्वामी शनि है जो मंगल का शत्रु ग्रह है। अतः दोनों का एक साथ में होना दुर्घटना एवं परेशानियां देता है।

पेट्रोल पंप मंगल के अधिकार क्षेत्र में आता है इसलिए इसे भूखंड के आग्नेय या दक्षिण के क्षेत्र में रखना सबसे उपयुक्त होता है। पेट्रोल पंप को भूखंड के नैऋत्य एवं पश्चिम क्षेत्र में नहीं रखना चाहिए। राहु एवं शनि से मंगल का शत्रुवत् संबंध होता है जिसके फलस्वरूप विपरीत घटना घटने की संभावना बनी रहती है।

दक्षिण–पूर्व :

दक्षिण–पूर्व दिशा का स्वामी का शुक्र है। दक्षिण–पूर्व अभिमुख भूखंड पर सिनेमा हॉल, फिल्म स्टूडियो, संगीत, मॉडलिंग एवं नृत्य से संबंधित कार्य लाभप्रद होता है। ग्लैमर तथा शो बिजनेस का शुक्र से सीधा संबंध है अतः इन कार्यों के लिए शुक्र का शुभ होना अत्यंत लाभकारी रहता है। सुगंधित वस्तुएं, रेश्मी वस्त्र, महिलाओं से संबंधित वस्त्र, सिले सजावटी वस्त्र अर्थात् रेडिमेड गार्मेन्टस मनोरंजन से संबंधित कार्य, सजावट तथा गिफ्ट से संबंधित कार्य के लिए भी यह दिशा योगकारक होता है। ब्यूटीशियन एवं ब्यूटी पार्लर से संबंधित कार्यों के लिए भी यह दिशा अच्छा होता है। गायक तथा कवि के लिए भी यह

दिशा शुभफलदायी होता है।

गाड़ियों की खरीद बिक्री, कार, स्कूटर तथा व्यक्तिगत आराम के वाहन शुक्र के अंतर्गत आती है। कार की सजावट का कार्य भी शुक्र के अंतर्गत आती है। वास्तुविद् भवन निर्माण का शुक्र से विशेष संबंध है अतः इन कार्यों के लिए भी दक्षिण–पूर्व अभिमुख भूखंड लाभप्रद होता है।

जुआ, जुआखाना का संबंध शुक्र एवं राहु से है। इसलिए इनसे संबंधित कार्य आग्नेय या नैऋत्य के क्षेत्र में करना लाभप्रद होता है। सभी प्रकार के सट्टेबाजी का संबंध राहु से है। अतः जुए में जीत हासिल करने के लिए शुक्र एवं राहु दोनों का लाभ मिलना आवश्यक होता है। जुआखाना को उत्तर या पूर्व दिशा की ओर न रखें। उत्तर में बृहस्पति का प्रभाव होता है, जो कि जुए का शत्रु है। पूर्व दिशा में सूर्य का वास होता है, फलस्वरूप जुए से संबंधित कार्य इस दिशा की ओर नहीं चल पाती है।

7. मुहूर्त

ज्योतिष शास्त्र का प्रमुख स्तंभ मुहुर्त विचार है। संहिता ग्रंथो, मुहूर्त चिंतामणि आदि में मुहूर्त की विस्तार से चर्चा की गयी है। वास्तव में मुहूर्त की आवश्यकता किसी भी कार्य को निर्विघ्न संपन्न होने के लिए है। ग्रहों के द्वारा उनकी अपनी कक्षा में परिभ्रमण की गति के अनुसार प्रत्येक क्षण नये–नये संयोग बनते रहते है। उनमें कुछ अच्छे होते है कुछ खराब भी होते है। अच्छे संयोगों की गणना करके उनका उचित समय पर जीवन में इस्तेमाल करना ही शुभ मुहूर्त पर कार्य सम्पन्न होना होता है। समय किसी को भी बलवान एवं निर्बल बनाने की सामर्थ्य रखता है। किसी भी कार्य के आरंभ से पूर्व एक अच्छे समय या अवसर का चयन करते हैं ताकि बिना किसी परेशानी के वह कार्य पूरा हो सके। अतः उचित समय के चयन की प्रकिया ही मुर्हूत कहलाती है। मुहूर्त परिस्थितियां नहीं बदल सकता है परंतु उनकी दिशा अवश्य बदल सकता है। अतः शुभ मुहूर्त में कार्य करने से भविष्य को संवारा जा सकता है। विद्वानों ने समस्त कार्यो के लिए अलग–अलग शुभ मुहूर्तो की बात कही है। मुहूर्त काल गणना के अनुसार दिन एवं रात्रि में कुल 30 मुहूर्त होते है। 15 दिन में और 15 रात्रि में । इनका आधार 27 नक्षत्र है। इनमें आर्द्रा और रोहिणी नक्षत्र रात और दिन दोनों में हैं। आर्द्रा को दिन में गिरीश और रात्रि में शिव या रूद्र कहते है। रोहिणी को दिन में विधाता और रात्रि में धातृ स्वामी कहते है। अतः दिनमान को बराबर 15 भागों में बॉटने पर एक मुहूर्त की अवधि बनती है जैसे दिनमान 30/15 है इसमें 15 को भाग दिया तो 2/1 आया अर्थात एक मुहूर्त दो घटी और एक पल। एक घटी बराबर 24 मिनट और एक पल बराबर 24 सेंकेण्ड होते है। इस प्रकार एक मुहूर्त का समय 48 मिनट 24 सेकेण्ड हुआ। अथर्ववेद में शुभ मुहूर्त में कार्य प्रारंभ करने के विभिन्न सूत्र दिए गए हैं।

पुराणो में सर्वसिद्धिप्रद 15 मुहूर्तो का वर्णन है जिनमें 8 विशेष फलदायक है। अभिजित का प्रथम स्थान है इसे विजय मुहूर्त की संज्ञा दी गयी है। प्रत्येक दिन 11.45 से 12.30 तक का समय अभिजित मुहूर्त कहलाता है। नारद पुराण के अनुसार दिन के 11.36 से 12.24 तक का समय अभिजित मुहूर्त कहा गया है। अभिजित मुहूर्त में किए गए सभी कार्य सफल होते हैं। इसके लिए किसी भी शुद्धा शुद्धि का विचार आवश्यक नहीं है।

शांति और पौष्टिक कार्य का मुहूर्त

नक्षत्र : अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु , स्वाति, अनुराधा, मघा।

वार : चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र

तिथि : 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13

गृहारंभ हेतु नींव (खात) के मुहूर्त

श्रवण, मृगशिरा, रेवती, हस्त, रोहिणी, पुष्य, अश्विनी, तीनों उत्तरा ये दस नक्षत्र खात मुहूर्त के लिए श्रेयस्कर हैं।

1. गुरु युक्त पुष्य नक्षत्र, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा इन नक्षत्रों में गुरुवार को प्रारंभ किया हुआ गृह, पुत्र और राज्य देने वाला कहा गया है।
2. अश्विनी, चित्रा, विशाखा, घनिष्ठा शतभिषा और आर्द्रा नक्षत्रों के साथ यदि शुक्रवार हो तो उस दिन किए गए शिलान्यास का मुहूर्त धन धान्य देने वाला एवं शुभ कहा गया है।
3. अश्विनी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा और हस्त इन नक्षत्रों में बुधवार को रखी गई नींव घर, सुख, संपन्नता और पुत्र देने वाली होती है।
4. जब गुरु, शुक्र, सूर्य तथा चंद्र अपनी उच्च स्थिति में हों बलवान हों, तो इनका बल लेकर गृहारंभ करना शुभ फलदायक होता है।
5. नींव रखे जाने के समय सूर्य का विभिन्न राशियों में प्रभाव

मेष का सूर्य	प्रतिष्ठादायक
वृष का सूर्य	धन वृद्धि कारक
कर्क का	शुभ,
सिंह का	नौकर–चाकर में वृद्धिकारक
तुला का सूर्य	सुखदायक,
वृश्चिक का	धन वृद्धिकारक,
मकर का	धनदायक
कुंभ का सूर्य	रत्न का लाभ

6. गृहारंभ में स्थिर या द्विस्वभाव लग्न होना चाहिए, जिसमें शुभग्रह बैठे हों या लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि पड़ती हो।
7. महर्षि पराशर के अनुसार चित्रा, शतभिषा स्वाति, हस्त, पुष्य पुनर्वसु, रोहिणी, रेवती, मूल, श्रवण, उत्तरा फाल्गुनी, धनिष्ठा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, मृगशिरा और अनुराधा नक्षत्रों में जो मनुष्य वास्तु पूजन करता है उसे लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
8. सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार खात मुहूर्त के लिए श्रेष्ठ हैं। तिथि 3, 5, 11 और 13 खात मुहूर्त के लिए श्रेष्ठ हैं। खात मुहूर्त हमेशा प्रातः काल करना चाहिए। मध्याह्न में मुहूर्त करने से कर्ता को कष्ट एवं सायंकाल में मुहूर्त करने से कुटुंब में कलह होते हैं।

गृहारम्भ किस दिन वर्जित है

1. 1, 2, 4, 6, 8, 10, 12, 15, एवं 30 तिथियां खात मुहूर्त के लिए अशुभ हैं।
2. शुक्ल पक्ष में 1, 4, 9, 14 इन चार तिथियों का त्याग करना चाहिए। व्यतिपात जैसे अशुभ योग भी त्यागने चाहिए।
3. रवि और मंगल को गृहारंभ न करें।
4. मेष, कर्क, तुला और मकर लग्न में गृहारंभ न करें।
5. गृहारंभ काल की कुंडली बनाएं। उसमें तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में पापग्रह हों तो गृहारंभ नकरे
6. गृह–कुंडली में छठे, आठवें तथा बारहवें में शुभ ग्रह हों तो गृहारंभ न करें।
7. मंगल युक्त हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ा और मूल नक्षत्रों को यदि मंगलवार हो तो उस दिन प्रारंभ किया गया घर अग्निभय, चोरी एवं पुत्र क्लेश का कारक होता है।
8. शनि युक्त पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाति और भरणी नक्षत्रों में शनिवार को प्रारंभ किया हुआ घर राक्षसों और भूतों से युक्त रहता है।
9. गृहारंभ के दिन सूर्य निर्बल, अस्त, या नीच स्थान में हो, तो घर के स्वामी की असमय मृत्यु होती है।
10. गृहारंभ के दिन चंद्र निर्बल, अस्त या नीच का हो तो गृहस्वामिनी की अकाल मृत्यु होती है।
11. गृहारंभ के दिन बृहस्पति निर्बल, अस्त या नीच स्थान में हो तो धन का नाश होता है।
12. रिक्ता तिथि 4, 9 या 14 को गृहारंभ न करें।
13. मिथुन, कन्या, धनु और मीन के सूर्य में नवीन गृह का निर्माण न करें।

गृह प्रवेश मुहूर्त

गुरु वशिष्ठ ने कहा है

> माद्येऽर्थलाभः प्रथमप्रवेशे पुत्रार्थलाभः खलु फाल्गुने च।
> चैत्रेऽर्थहानिर्धननधान्य लाभो वैशाखमासे पशुपुत्र लाभ।
> ज्येष्ठे च मासेषु नूनं हानिप्रदः शत्रुभयप्रदश्च।
> शुक्ले च पक्षे सुतरां विवृद्ध्ये कृष्ण ये यावद्दशमी च तावत।

अर्थात माघ मास में गृह प्रवेश करने से गृह पति को लाभ फाल्गुन मास में पुत्र एवं धन का लाभ होता है। वैशाख में धन–धान्य प्राप्ति और ज्येष्ठ में पशु एवं पुत्र लाभ होता है। अन्य मासो में (पौष–चैत्रादि) किया गया गृह प्रवेश हानिकारक एवं शत्रुभयदायक होता है। शुक्ल पक्ष में गृह प्रवेश से विशेष वृद्धि होती

है। और कृष्ण पक्ष में दशमी तिथि पर्यंत गृह प्रवेश करना शुभफलप्रद होता है। विश्वकर्मा के मत से कार्तिक और मार्गशीर्ष मास भी शुभ है।

गृह प्रवेश के लिए शुभ मुहूर्त इस प्रकार हैं :

विहित मास :

उत्तम मास : माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ।

मध्यम मास : कार्तिक, श्रावण, और मार्गशीर्ष।

त्याज्य मास : आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष और चैत्र।

विहित तिथि

द्वितीया 2, तृतीया 3, पंचमी 5, षष्ठी 6, सप्तमी 7, दशमी 10, एकादशी 11,

द्वादशी 12, त्रयोदशी 13, एवं पूर्णिमा 15, गृह प्रवेश के लिए ये तिथियां प्रशस्त हैं।

विहित वार

सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार। शनिवार को गृहप्रवेश मध्यम फल देने वाला होता है।

विहित नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्र एवं रेवती नक्षत्र।

लग्न

उत्तम : द्वितीय, पंचम, अष्टम एवं एकादश (2, 5, 8, 11) ।

मध्यम : तृतीय, षष्ठ, नवम् एवं द्वादश (3, 6, 9, 12)।

नवीन गृह द्वार अनुसार ग्रह नक्षत्र

पूर्व में द्वार हो तो रेवती और मृगशिरा नक्षत्रों में गृह प्रवेश शुभ होता है।
दक्षिण दिशा में द्वार हो तो उतरा फाल्गुनी और चित्रा नक्षत्र में गृह प्रवेश शुभ होता है।
पश्चिम दिशा में द्वार हो तो अनुराधा और उतराषाढ़ नक्षत्रों में गृह प्रवेश शुभ होता है।
उतर दिशा में द्वार हो तो उतरा भादप्रद और रेवती नक्षत्र में गृह प्रवेश शुभ होता है।

लग्न शुद्धि

शुभ ग्रह लग्न से प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पंचम, सप्तम्, नवम्, दशम् और एकादश स्थानों में शुभ होते हैं। तृतीय, षष्ठ एवं एकादश स्थानों में पापग्रह शुभ होते हैं। चतुर्थ एवं अष्टम स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

गृह प्रवेश के समय वाम रवि विचार

जिस लग्न में गृहप्रवेश करना हो, उससे रवि का विचार किया जाता है। लग्न कुंडली में 8वें से 12 व

भाव तक में से किसी भाव में यदि सूर्य हो तो पूर्व द्वार वाले घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है। भाव 5 से 9 तक में से किसी में यदि सूर्य हो तो दक्षिण द्वार के घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है। भाव 2 से छह तक में से किसी में यदि सूर्य हो तो पश्चिम द्वार के घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है। भाव 11 से तीन तक में से किसी में यदि सूर्य हो तो उत्तर द्वार के घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है।
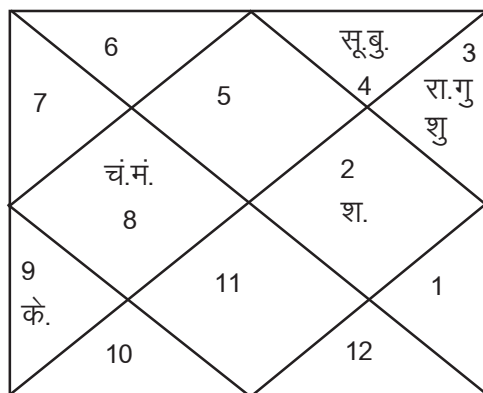
उदाहरण :

उपर्युक्त लग्न कुंडली में सिंह लग्न से रवि 12 वां है जो पूर्व द्वार एवं उत्तर द्वार वाले घर में प्रवेश के लिए वाम और शुभ है। पश्चिमाभिमुख घर में प्रवेश के लिए रवि वाम नहीं है क्योंकि सिंह लग्न से रवि 12 वां है। अतः इस घर में प्रवेश के लिए शुभ नहीं है।

तिथियों से (प्रकारांतर से)

पूर्व द्वार के गृह में पूर्णा तिथियों (5, 10, 15) में, दक्षिण द्वार के गृह में नन्दा तिथियों (1, 6, 11) में, उत्तर द्वार के गृह में जया तिथियों (3, 8, 11) में और पश्चिम द्वार के गृह में भद्रा तिथियों (2, 7, 12) में गृह प्रवेश शुभ होता है।

इन मुहूर्तो के अलावा कुछ अन्य मुहूर्त है जिनका उपयोग वास्तु में किया जाता है।

कुंआ खुदवाने का मुहूर्तः

कुंआ खुदवाने के लिए हस्ता अनुराधा, रेवती, उतराफाल्गुनी, उतराषाढा, उतराभाद्रपद, घनिष्ठा, शतभिषा, मघा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दसवीं, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा तिथियों में बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार के दिन करनी चाहिए।

8. भूमि चयन

वास्तु और भूमि में बड़ा घनिष्ट संबंध है। भवन निर्माण के लिए सबसे पहले भूमि का चयन किया जाता है। भारतीय संस्कृति में भूमि को माता का स्थान दिया गया है। आवास के प्रयोग के लिए भूखंड किस तरह का होना आवश्यक हैं। किस प्रकार की भूमि का क्रय करना चाहिए जो सुख और समृद्धि के मार्ग को प्रशस्त करें और किस प्रकार की भूमि को खरीदने से हमें बचना चाहिए जिसका ज्ञान होना परम आवश्यक है। आवासीय भूखंड हेंतु सदैव जीवित भूमि का क्रय करना चाहिए। ऐसी भूमि जिस पर उगे वृक्ष आदि हरे भरे रहते हों तथा अन्न (अनाज) आदि की उपज भी उतम हो उसे जीवित भूखंड समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य भूमि अर्थात् अनउपजाऊ एवं बंजर भूमि को मृत भूखंड मानना चाहिए तथा जिस भूमि में दीमक, हड्डी हो अथवा जो भूमि फटी हुई हो उसे कभी भी आवासीय भवन निर्माण हेतु प्रयोग नही करना चाहिए। वृहत् संहिता में वर्णित हैं कि शल्ययुक्त भूमि कलेशकारी, फटी हुई भूमि मरण देने वाली, उसर भूमि धन का नाश करने वाली और उबड़–खाबड़ भूमि शत्रु को बसाने वाली होती है। अतः जिस प्रकार सात्विक भोजन शरीर के साथ ही मन को प्रफुल्लित कर देता है उसी प्रकार शुभ एवं आनन्दायक भूखंड मन को शीतलता प्रदान करता है।

इन संबंध में वृहत् संहिता में कहा गया है कि –

शस्त्रोषधि द्रुम लता मधुरा सुगन्धा, स्निग्धा समा न सुषिरा च मही नराणाम।
अप्यध्वनि श्रम विनोदमुपागतानाम्, धत्ते श्रियं कियुत शाश्वत मन्दिरेषु।।

अर्थात श्रेष्ठ भूमि वह है जो अनेक प्रकार के औषधी और वृक्ष तथा लताओं से सुशोभित, उतम सुगंध वाले, चिकने गड्डे और छिद्रों से रहित हो जो मनुष्यों को आनंद देने वाली हो वैसी भूमि पर उत्तम मंदिर अथवा भवन क्यों न बनाया जाए अर्थात अवश्य ही बनाना चाहिए। जिस भूमि पर नेवले का वास हो वह भूमि मकान बनाकर रहने वालो के लिए श्रेष्ठ होती है। ऐसे भूमि पर बने मकान में रहने वालें को यश, लाभ, संपति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसी भूमि भूत प्रेत तथा आसुरी शक्तियों से रहित होती है। इसका कारण नेवला है जो सूर्य का प्रतीक है। सूर्य से राहु की दुश्मनी हैं। नेवले और सॉप एक दूसरे के शत्रु है। नेवला सूर्य है तो सर्प राहु इसी कारण उस जमीन पर मकान बनाकर रहना हर प्रकार से शुभ फलदायी होता है। जिस जमीन पर अस्तबल हो वैसी भूमि भी शुभफलदायी होती है। ऐसी भूमि पर मकान बनाकर रहने से आरोग्य, संपदा की प्राप्ति होती है और हृदय रोग से छुटकारा मिलता है क्योंकि घोड़े को सूर्य का प्रतीक माना गया है। मेष, सिंह एवं धनु राशि वाले लोगों के लिए ऐसे भूमि विशेष फलदायी होती है। लाल रंग की गाय सूर्य का प्रतीक हैं, पीले रंग की गाय वृहस्पति का प्रतीक है। हिन्दु धर्म मतानुसार जिस जमीन पर गोशाला हो वह जमीन मकान के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है परंतु गायों के चारागाह के स्थान पर मकान बनाना महापाप है। ऐसे चारागाह पर बने मकान में रहने वाला जीवन भर दुखी रहता है और मृत्यु के बाद नरक में जाता है। जिस भूखंड पर मधुमक्खी रहती हो वहॉ रहने वाले

मकान मालिक को धन का लाभ होता है। शहद वृहस्पति का प्रतीक है और वृहस्पति धन का कारक ग्रह है इसलिए ऐसा भूखंड काफी शुभफलदायी माना गया है। भूखंड में यदि गोश्रंग, शंख, कछुआ मिले तो उस भूमि को शुभ एवं लाभप्रद भूमि समझना चाहिए। भूमि खोदने पर पत्थर मिलने पर स्वर्ण लाभ, ईट मिलने पर समृद्धि, द्रव्य मिले तो तन सुख और ताम्र आदि धातुऐं मिले तो ऐश्वर्य और सुख मिलता है। जिस भूमि पर गृह बनाना हो उसे जोतवाकर उसमें यथासंभव सभी तरह के अनाज बो दें। यदि वे बीज तीन रात्रि में अंकुरित हो तो उस भूमि को उत्तम, पांच रात्रि में अंकुरित हो मध्यम और सात रात्रि में अंकुरित हो तो उस भूमि को अशुभ समझें। विभिन्न किस्म के बीज न उपलब्ध होने की स्थिति में चारों ओर धान बोना चाहिए। भूखंड के जिस भाग में बीज अंकुरित न हो उस भाग की भूमि पर मकान नही बनाना चाहिए। व्रीहि, मूॅग, गेहू, सरसों, साठी, तिल, जौ ये सात औषधियां हैं। इन्हें सर्व बीज कहा जाता है। इन सभी बीजों को बोने के बाद इनके फलों को देखना चाहिए। जिस भूमि में स्वर्ण या तॉबे के रंग के पुष्प दिखायी दें वह भूखंड आवासीय भूंखड हेतु शुभफलदायी होती है।

जिस भूमि पर कुत्ते, सियार, सुअर जैसे अपवित्र और गंदे जानवर नियमित रहते या बैठते हैं। वह भूखंड अपवित्र मानी जाती है अतः ऐसी जमीन पर मकान बनाकर रहना लाभप्रद नही रहता है। साथ ही जिस भूमि पर सॉप और बिच्छु रहते हों ऐसी जमीन गृह निर्माण के लिए योग्य नही मानी जाती है। बिच्छु एवं सर्प राहु के प्रतीकात्मक हैं अतः जमीन राहु प्रधान कहलाती है जहॉ पर दुर्भाग्य एंव नाना प्रकार के अकस्मात् कष्टों का सामना करना पड़ता है घर के सदस्यों की असमय मृत्यु एवं अकस्मात् दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है घर के सदस्य जुॅआ, सट्टा लॉटरी के चक्कर में फंसकर आर्थिक नुकसान पाते है साथ ही मॉस मदिरा का सेवन करने लगते है। जिस भूमि में कोयला, लोहा, सीसा जैसी काली धातुऐं निकलती है वह भूमि आसुरी भूमि कहलाती है। उसमें मकान बनाकर रहना अशुभ होता हैं । इसके साथ ही भूमि चयन के लिए अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

भूमि परीक्षण

यदि नया भूखंड खरीदना हो तो वास्तु विशेषज्ञों द्वारा भूमि परीक्षण करवाना चाहिए। भूमि परीक्षण के निम्नलिखित नियम बताए गए हैं।

(1) भूमि में 24 अंगुल गहरा गड्ढा खोद कर निकाली हुई मिट्टी उसी गड्ढे में भरें। यदि मिट्टी बढ़ जाए तो भूमि को उत्तम और गड्ढा बराबर हो तो मध्यम समझें किंतु यदि गड्ढा खाली रह जाए तो उसे अशुभ जानें।

(2) भूखंड के उत्तर दिशा में डेढ़ फुट गहरा गड्ढा खोदकर उसकी मिट्टी निकाल कर उसमें मुख तक पानी भर दें और उत्तर दिशा की ओर सौ कदम चलें या 120 सेकेंड के बाद गड्ढे के पास आकर देखें। गड्ढा पानी से पूरा भरा हो तो भूमि उत्तम, आधा भरा हो तो मध्यम और उसमें पानी नहीं बचा हो तो अधम अर्थात् अशुभ होती है।

(3) विश्वकर्मा प्रकाश में भूमि परीक्षण की इस रीति का वर्णन है। गड्ढे को चारों ओर से लीप कर उसमें कच्ची मिट्टी के चार दीपों में घी भरकर चारों दिशाओं की ओर जलाएं और देखें कि किस दिशा की बत्ती अधिक प्रकाश दे रही है यदि उत्तर दिशा का दीप अधिक प्रकाश दे रहा हो तो वह भूमि ब्राह्मण, पूर्व

दिशा का अधिक प्रकाशमान हो तो क्षत्रिय, पश्चिम का दीप अधिक प्रकाश दे रहा हो तो वैश्य एवं दक्षिण के दीप में अधिक प्रकाश दे रहा हो तो शूद्र वर्ण वाले के लिए उपयुक्त होती है।

भूमि के प्रकार :

वास्तुशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में भूमि का चार भागों में वर्गीकरण किया गया है :—

(1) ब्रह्मामीणी भूमि : ऐसी भूमि जिसका वर्ण श्वेत, गंध घी के समान, स्वाद मधु के समान एवं स्पर्श सुखद होता है ब्राह्मामीणी भूमि कहलाती है। इस प्रकार की भूमि पर कुश, दुर्वा एवं अन्य हवनीय वृक्ष होते हैं। ब्राह्ममीणी भूमि सभी प्रकार के आध्यात्मिक सुख देने वाली होती है। इस प्रकार की भूमि विद्यालयों, मंदिरों, धर्मशालाओं, साहित्यिक संस्थाओं आदि के निर्माण के लिए उपयुक्त होती है।

(2) क्षत्रिय भूमि : जिसका वर्ण रक्त, गंध रक्त के समान, स्वाद कसैला एवं स्पर्श कठोर होता है और जिसमें रक्तवर्णीय पुष्प एवं वृक्ष होते हैं क्षत्रिय भूमि कहलाती है। इस भूमि में सर्प भी पाए जाते हैं। क्षत्रिय भूमि राज्य, वर्चस्व एवं पराक्रम बढ़ाने वाली होती है। इस प्रकार की भूमि राजकीय कार्यालयों, सैनिक छावनियों, शस्त्रागारों, सैनिक कॉलोनियों आदि के निर्माण के लिए उपयुक्त होती है।

(3) वैश्य भूमि : जिसका वर्ण हरित—पीत (हरा—पीला), गन्ध मधु अथवा अन्न के समान एवं स्वाद अम्लीय होता है वैश्य भूमि कहलाती है। इस प्रकार की भूमि पर अन्न एवं फलयुक्त वृक्षादि होते हैं। वैश्य भूमि धन—धान्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि करने वाली होती है। इस प्रकार की भूमि व्यवासायिक प्रतिष्ठानों, दुकानों, व्यापारियों के निवास आदि के लिए उपयुक्त होती है।

(4) शूद्र भूमि : जिसका वर्ण कृष्ण (कालापन लिए हुए), गंध मदिरा के समान, स्वाद कड़वा एवं स्पर्श अति कठोर होता है शूद्र भूमि कहलाती है। इस प्रकार की भूमि पर झाड़—झंखाड़ आदि होते हैं। इस प्रकार की भूमि कलह एवं झगड़ा कराने वाली होती है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।

इस तरह रंग स्वाद आदि के आधार पर भूमि का जो वर्गीकरण किया गया है उसके अनुसार सैनिक छावनियों शास्त्रागारों के लिए क्षत्रिय भूमि, व्यवसायिक , प्रतिष्ठानों एंव व्यापारिओं के लिए वैश्य भूमि, विद्यालय, मंदिरों के लिए ब्राह्मण भूमि उपयुक्त होता हैं। किन्तु वर्तमान समय में वर्गीकरण के आधार पर भवन निर्माण करना व्यवहारिक रूप से संभव नही है। अतः जिस मिटी में अच्छी पैदावार हो पानी की उचित उपलब्धता हो, मिट्टी ठोस हो , वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं के परीक्षण में वह मिट्टी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हो तथा जिस भूखंड पर भवन की स्थायित्व हो सके वर्तमान समय में ऐसी भूमि का चयन करना लाभप्रद एवं शुभफलदायी होगा।

भूपृष्ठ से भूमि परीक्षा : भूमि के मध्य वाले कठोर भाग को पृष्ठ कहते हैं।भूपृष्ठ के आधार पर भूखंड के निम्नलिखित भेद बताए गए हैं।

(1) गजपृष्ठ : जो भूमि दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम और वायव्य कोण में ऊंची हो, उसे गजपृष्ठ कहते हैं। गजपृष्ठ भूमि पर बने मकान में लक्ष्मी का वास होता है तथा धन एवं आयु में निरंतर वृद्धि होती रहती है।
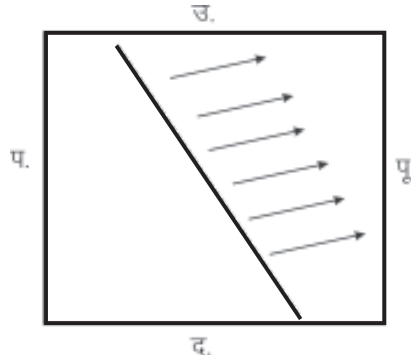
(2) कूर्मपृष्ठ : जो भूमि मध्य भाग में विशेष ऊंची और चारों दिशाओं में नीची हो उसे कूर्मपृष्ठ कहते हैं। ऐसी भूमि निवास योग्य होती है, जिस पर निवास करने से नित्य उत्साह की वृद्धि होती है और सुख और धन–धान्य की प्राप्ति होती है।
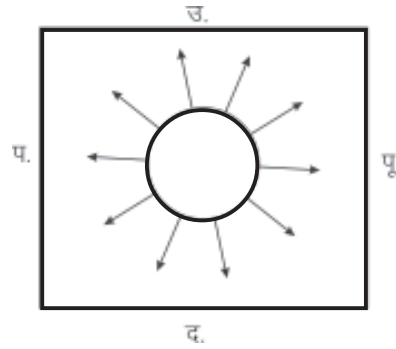
(3) दैत्यपृष्ठ : जो भूमि ईशान पूर्व और अग्नि कोण में ऊंची और पश्चिम में नीची हो, उसे दैत्यपृष्ठ कहते हैं। दैत्यपृष्ठ भूखंड पर बने मकान में लक्ष्मी नहीं आती तथा धन और पुत्र की निरंतर हानि होती रहती है।
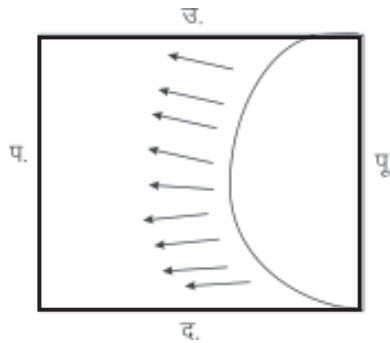
(4) नागपृष्ठ : जो भूमि पूर्व और पश्चिम दिशाओं में लंबी तथा दक्षिण और उत्तर दिशाओं में ऊंची हो उसे नागपृष्ठ कहते हैं। नागपृष्ठ भूमि पर वास करने से परिवार के सदस्य मानसिक रोग से ग्रस्त और गृहस्वामी के शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होती हैं। इस भूखंड पर बना मकान पत्नी और बच्चों के लिए अति नुकसानदायक होता है।
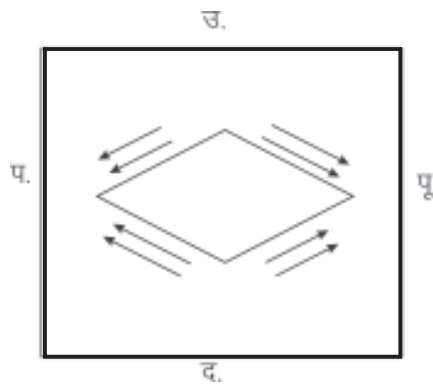
भूमि की ढाल

भूमि का चयन करते समय भूमि किस दिशा में ऊंची एवं किस दिशा में नीची है अर्थात् भूमि की ढाल किस दिशा में है इसकी भी परीक्षा कर लेनी चाहिए।

पूर्व की ढाल :
यदि भूमि की ढाल पूर्व दिशा की ओर हो तो उस भूखंड पर बने भवन में वास करनेवाले को लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। यह भूखंड विकास एवं विस्तार के लिए अच्छा माना जाता है।

उत्तर की ढाल :
उत्तर दिशा की ओर ढाल वाले भूखंड पर बने भवन में वास करने वाले की वंश वृद्धि, धनागम एवं भाग्य में वृद्धि होती है।

पश्चिम की ढाल :
यदि ढाल पश्चिम दिशा की ओर हो तो उस भूखंड पर बने भवन में वास करने वाले के ज्ञान और धन का नाश होता है। साथ ही परिवार में कलह बना रहता है।

दक्षिण की ढाल :
ढाल दक्षिण दिशा की ओर हो तो ऐसी भूमि पर भवन बनाकर वास करने वाले को रोगादि का सामना करना पड़ता है और उसकी शीघ्र मृत्यु की संभावना रहती है।

उत्तर पूर्व की ढाल :
ढाल उत्तर पूर्व दिशा की ओर हो तो उस भूखंड पर बने भवन में वास करने वाले को सर्वत्र सफलता, भाग्य में वृद्धि, प्रतिष्ठा, यश एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

उत्तर पश्चिम की ढाल :
अगर यह उत्तर पूर्व से नीची हो तो उस पर वास करने वाले के अनेक शत्रु होते हैं, घर में आए दिन चोरियों होती रहती हैं एवं गृहस्वामी पर आक्रमण मुकदमों होते रहते हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य भी खराब रहता है।

दक्षिण पूर्व का ढाल :
अगर यह उत्तर पूर्व से नीची हो तब आग एवं शत्रु का भय बना रहता है। यह स्त्रियों एवं संतान के लिए अच्छा फल नहीं देती। साथ ही यह चोरी, धोखेबाजी, झगड़े, मुकदमे में वृद्धि करती है।

दक्षिण पश्चिम की ढाल :
यह बुरी आदतों को बढ़ाने वाली होती है। इसके फलस्वरूप बीमारी एवं मृत्यु भी होती है। आकस्मिक संकट एवं दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। भवन पर भूत–प्रेत आदि की छाया बनी रहती है। इसमें रहने वालों का चरित्र दूषित होता है तथा उनका शत्रु पक्ष प्रबल रहता है।

निष्कर्ष
अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भूखंड के नैर्ऋत्य क्षेत्र को सबसे उच्च और ईशान क्षेत्र को सबसे नीचा रखना चाहिए। वायव्य कोण (उत्तर–पश्चिम) ईशान कोण (उत्तर–पूर्व) से ऊंचा और आग्नेय कोण वायव्य कोण से ऊंचा होना चाहिए। ऐसे भूखंड पर वास करने से परिवार का विकास, धन–धान्य में वृद्धि और सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है।

नैर्ऋत्य > आग्नेय > वायव्य > ईशान

दिशा से कम दक्षिण एवं इससे भी कम पश्चिम दिशा में रख सकते हैं।

9. मार्ग विचार (Adjoining Roads)

भूखंड खरीदते समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह किस दिशा की सड़क के समीप है क्योंकि दिशाओं के लाभ भिन्न–भिन्न होते हैं।

भूखंड जिसके एक ओर सड़क हो–

(1) उत्तर मार्गोन्मुखी भूखंड– ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहने वाले धनी, समृद्ध और भाग्यशाली होते हैं।
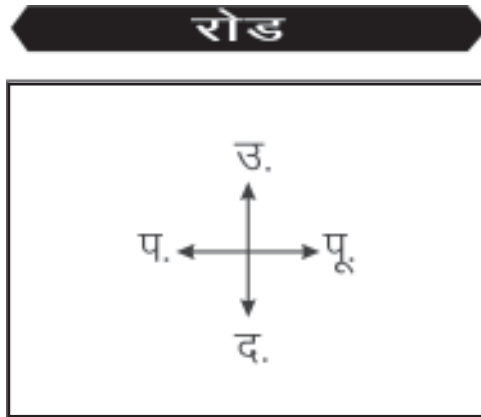
(2) पूर्व मार्गोन्मुखी भूखंड– यह भूखंड बहुत शुभ होता है। इस पर बने भवन में वास करने वाले को नाम, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।
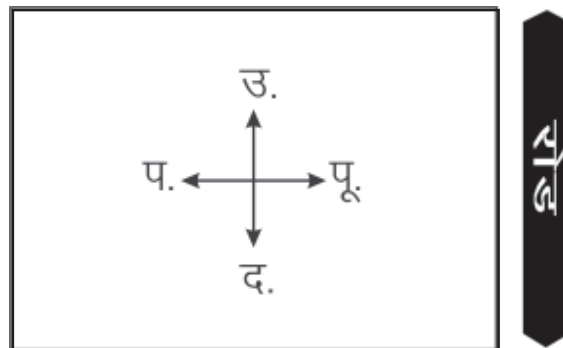
(3) दक्षिण मार्गोन्मुखी भूखंड
Plot facing South Road
स्त्रियों के व्यापार के लिए अच्छा होता है।
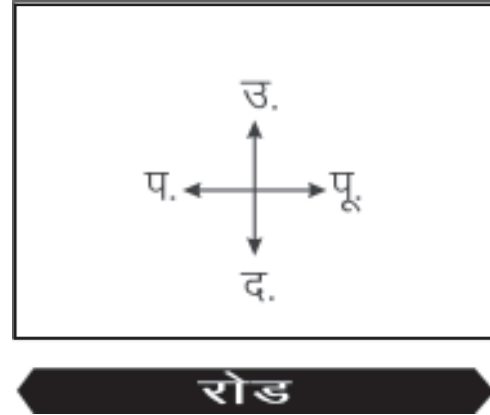
(4) पश्चिम मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing West Road)
Average (साधारण)
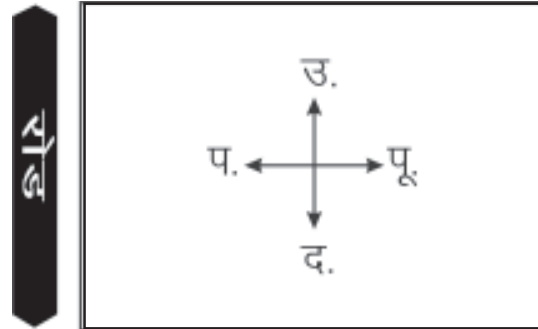
(5) दक्षिण–पश्चिम मार्गोन्मुखी भुखंड
(Plot facing South & West Road) Average (साधारण)
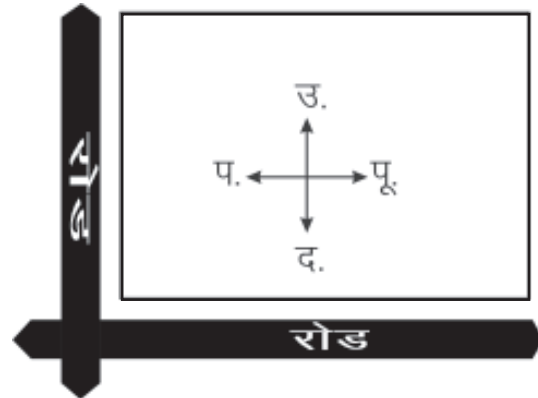
(6) पश्चिम–उत्तर मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing West & North Road)
Good (अच्छा)
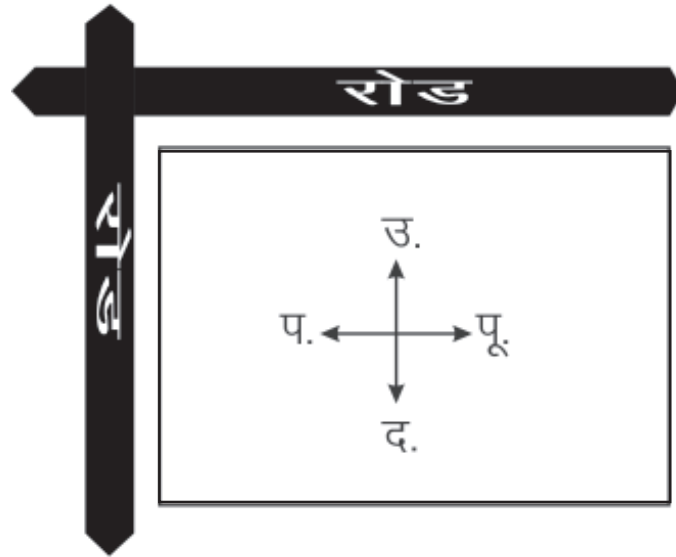
(7) उत्तर–दक्षिण मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing North & South Road) Average (साधारण)
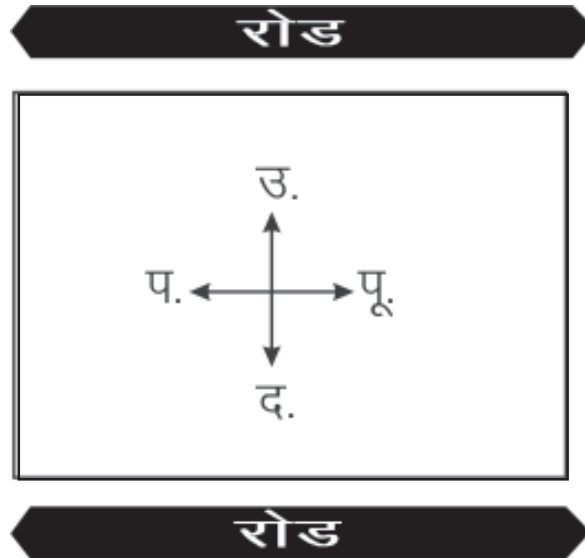
(8) पूर्व–पश्चिमी मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing East & West Road) Good (अच्छा)
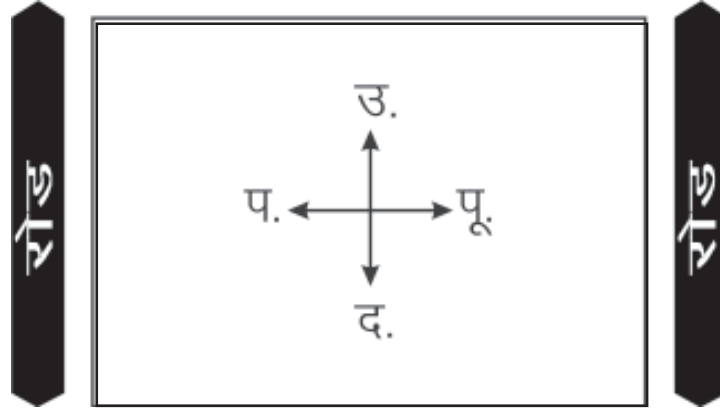
(9) उत्तर–पूर्व–दक्षिण मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing North, East & South Road) Average (साधारण)
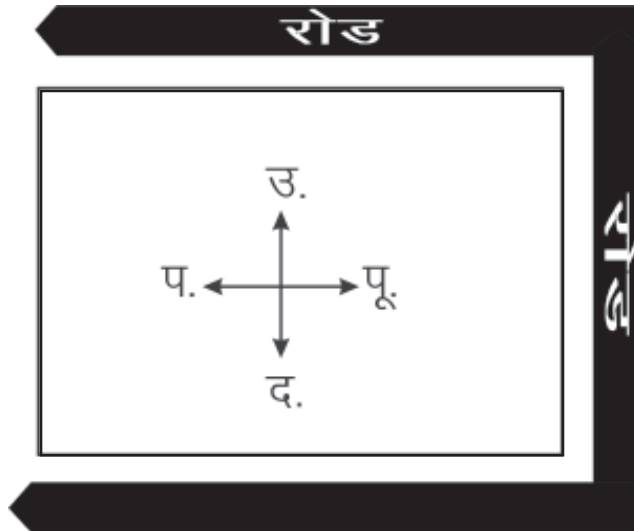
(10) पूर्व–दक्षिण–पश्चिम मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing East, South & West Road) Average (साधारण)
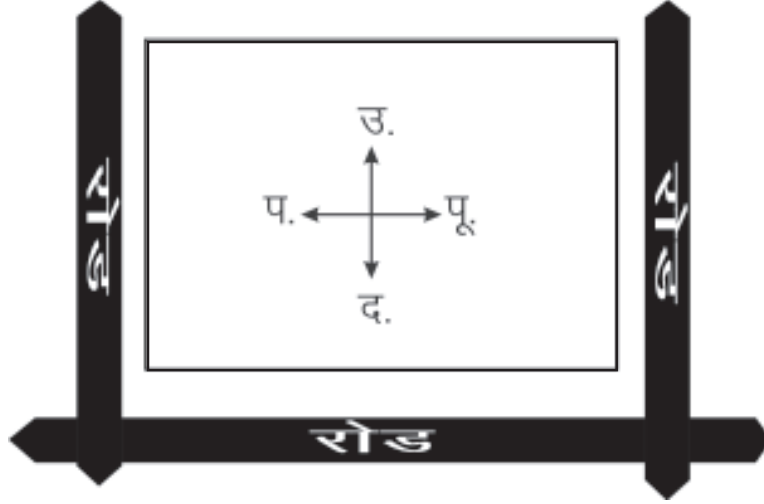
(11) पश्चिम–उत्तर–पूर्व मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing West, North, & East Road) Average (साधारण)
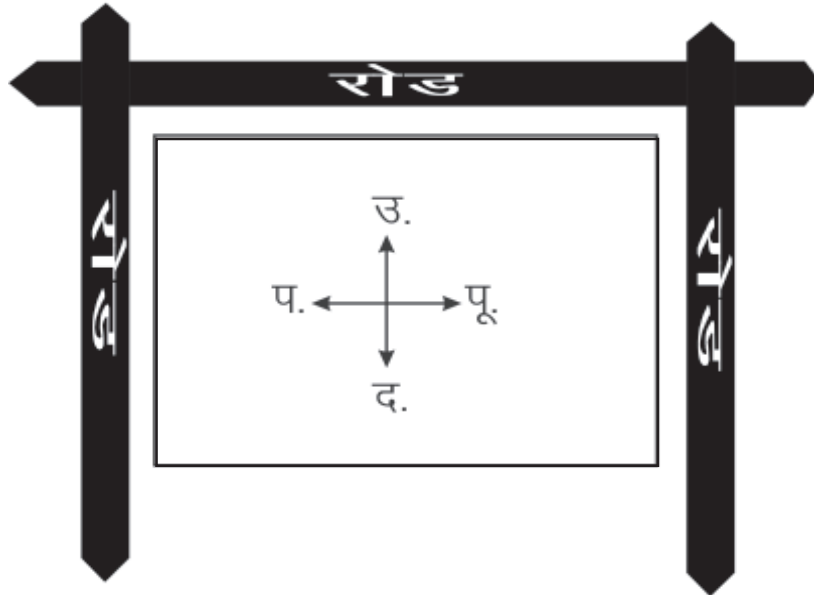
(12) दक्षिण–पश्चिम–उत्तर मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing South, West, & North, Road)
जिस भूखंड के तीन तरफ सड़कें हों, वह औसत या साधारण कहलाता है। इसके चौथे मार्गों में गलियारा निकाल कर इसमें सुधार किया जा सकता है।
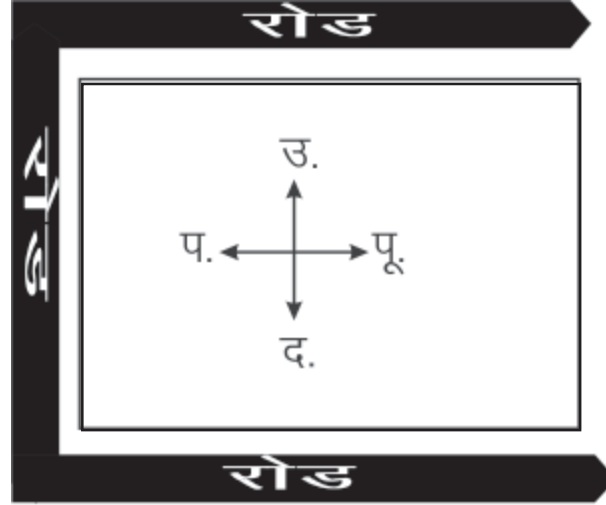
(13) भूखंड जिसके चारों ओर सड़कें हों (Plot Having Roads on all Side) जिसके चारों ओर सड़कें हों वह भूखंड सर्वोकृष्ट होता है।
जिस चौकोर भूखंड के चारों ओर सड़कें होती हैं। उसे ब्रह्म स्थल भूखंड कहते हैं। ऐसे भूखंड गृह स्वामी को अत्यंत संपत्तिवान तथा प्रभावशाली बनाता है। परिवार के सदस्य स्वस्थ रहते हैं एवं संपत्ति में निरंतर वृद्धि होती रहती है।
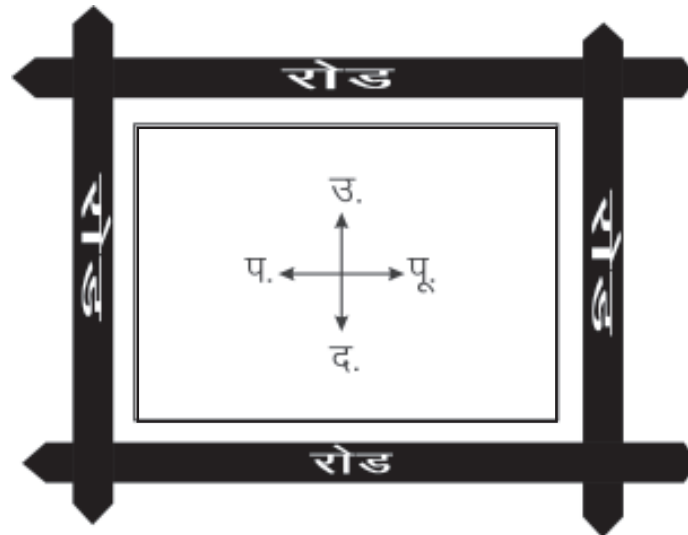
(14) भूखंड जिसके सम्मुख अंग्रेजी के T अक्षर के आकार की सड़कें हों (Plot facing once side Road with T Junction.)
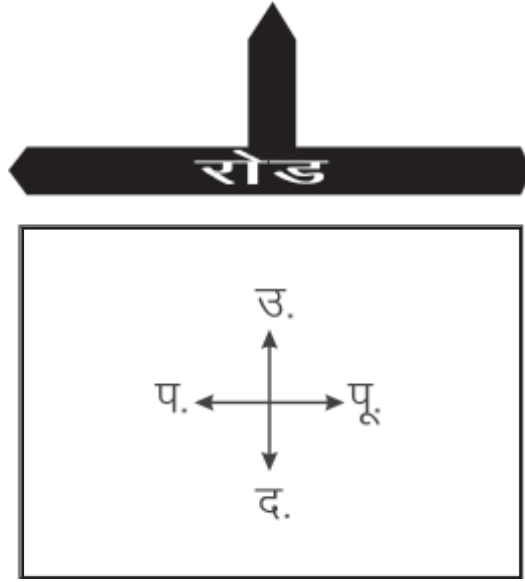
(15) भूखंड जिसके दो, तीन अथवा चारों तरफ T आकार की सड़कें हों (Plot facing two side Road, three side or all side Roads with T Junction)

◆ ◆ ◆ ◆ ◆
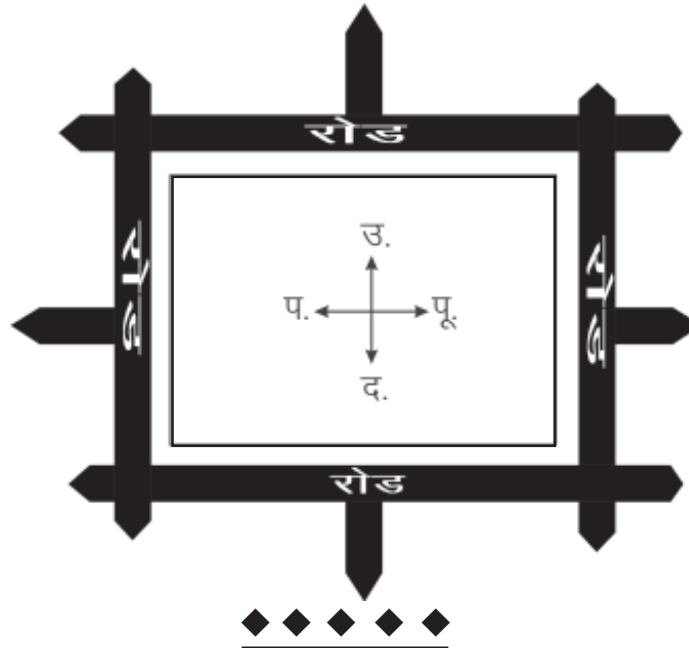
10. भूखंड में ऊर्जा का स्तर

प्रत्येक भूखंड विचित्र प्रकार की ऊर्जा एवं चुंबकीय फील्ड से भरा होता है। यह ऊर्जा उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव की ओर चुंबकीय लहरों के रूप में लगातार प्रवाहित होती रहती है। इस ऊर्जा को विद्युत चुंबकीय प्रवाह कहते है। यदि भवन का उत्तरी भाग नीचा और दक्षिणी भाग ऊंचा हो तो यह ऊर्जा सहज ही भवन में प्रवेश कर उसमें वास करने वालों को शुभ प्रभाव देगी। किंतु उत्तरी भाग अधिक ऊंचा होगा तो ऊर्जा का यह प्रवाह रूक जाएगा जो नुकसानदायक रहेगा। भूखंड को चारदीवारी से घेर कर रखना चाहिए ताकि सकारात्मक ऊर्जा एवं विद्युत चुंबकीय लहरों का निर्माण होता रहे। जिस भूखंड में सकारात्मक ऊर्जा एवं विद्युत चुंबकीय लहरों का निर्माण होता है उस पर वास करने वाले सुख, शांति एवं समृद्विपूर्वक जीवन को व्यतीत करते हैं। वर्गाकार भूखंड में चुंबकीय प्रवाह का निर्माण समुचित रूप से होता है जबकि आयताकार भूखंड में ऊर्जा का स्तर साधारण पाया जाता है क्योंकि ईशान से नैर्ऋत्य तक चुंबकीय लहरों को प्रवाहित होने में काफी दूरी तय करनी पड़ती है। फलस्वरूप विद्युत–चुंबकीय ऊर्जा का प्रभाव क्षीण हो जाता है। आयताकार भूखंड की लंबाई–चौड़ाई का अनुपात 2:1 रहने पर सकारात्मक विद्युत–चुंबकीय ऊर्जा का निर्माण होता है। यदि इसकी लंबाई–चौड़ाई का अनुपात दुगने से ज्यादा रहे तो विद्युत चुंबकीय लहरों का प्रभाव काफी कम बन पाता है। ऐसी स्थिति में एक या दो दीवारें खड़ी कर इस दोष को दूर किया जा सकता है।

ऊपर वर्णित सारे नियम Magnetic Meridian दक्षिण–उत्तर दिशा भूखंड के बीच पड़ने पर लागू होंगे। यदि मुख्य दिशा भूखंड के कोने में पड़ती हो तो उस पर ऊर्जा एवं चुंबकीय फील्ड का प्रभाव मध्यम लाभ लिए रहेगा। यद्यपि भवन वास्तु शास्त्र के सिद्वांत के अनुरूप बनायी जाए तो 75% ही लाभ मिल पाता है। इस
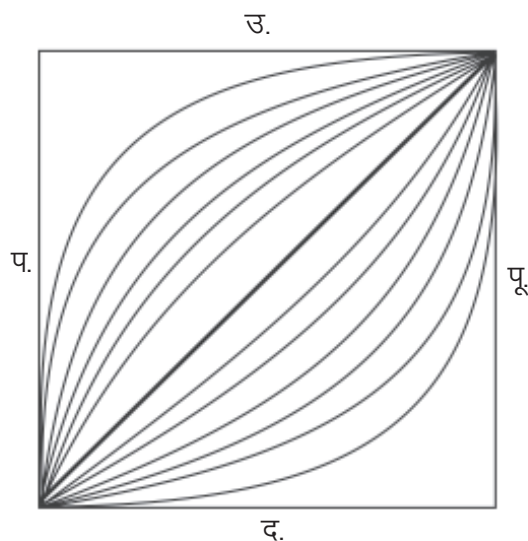
प्रकार देखते हैं कि विद्युत–चुंबकीय ऊर्जा वर्गाकार और Cardinal direction वाले भूखंड में उत्तम प्रभाव देती है जैसा कि ऊपर चित्र में स्पष्ट किया गया है।

विदिशा भूखंडः–

किसी भूखंड पर जब सभी मुख्य दिशा चुंबकीय अक्ष के समानान्तर न पड़कर कोने में पड़ती हो तो इस तरह के भूखंड को विदिशा भूखंड कहते है। आमतौर पर ऐसे भूखंड को नही खरीदना चाहिए क्योंकि इस तरह की भूखंड में बनने वाले चुंबकीय क्षेत्र एवं ऊर्जा का स्तर साधारण होता है जिसके फलस्वरूप भूखंड पर निवास करने वाले को विशेष लाभ नही मिल पाता है। परंतु जिस विदिशा भूखंड के ईशान क्षेत्र में रोड हो तो उस भूखंड का इस्तेमाल आवासीय भूखंड के रूप में किया जा सकता है क्योंकि
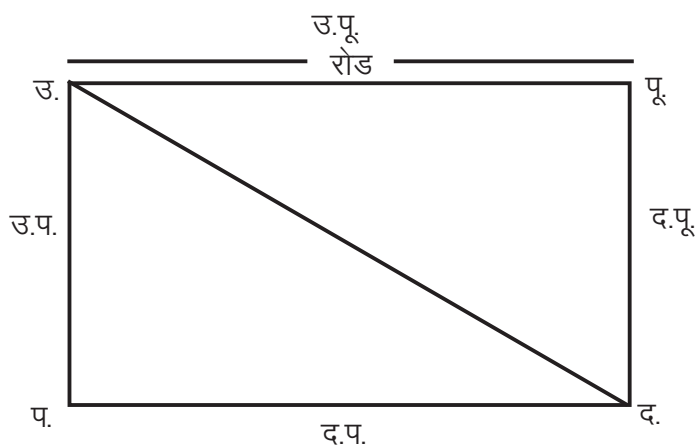
विदिशा भूखंड के ईशान क्षेत्र में स्थित रोड लाभदायक फल देता है। विदिशा भूखंड में भवन चारदीवारी के समानान्तर बनाना चाहिए। इसे मुख्य दिशाओं के समानान्तर भूलकर भी न बनायें। इस तरह की भूखंड में ईशान क्षेत्र में अधिक से अधिक जगह छोडकर निर्माण करें तथा सभी दरवाजे शुभ लाभदायक क्षेत्रो से बनायें। दक्षिण पश्चिम का कोण 90^0 का रखें। तथा जमीन के सतह का ढाल उतर–पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆

11. भूखंड का आकृति मूलक वर्गीकरण
Shape of the Land

(1) **वर्गाकार भूमि : Regular Shape**

Square Shape
AB=BC =CD =DA
AC=BD
सभी कोण समकोण (90^0)
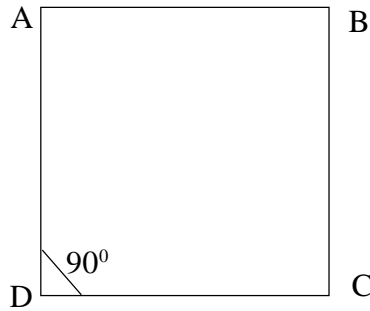
Prosperity (मानसिक शांति एवं आर्थिक संपन्नता अर्थात धनदायक एवं पुष्टिवर्धक)

(2) **आयताकार समकोण भूखंड** : आर्थिक विकास (Financial Growth)
इसमें रहने वाले सुखी सम्पन्न रहते हैं। यह धनदायक एवं पुष्टिवर्धक होता है।
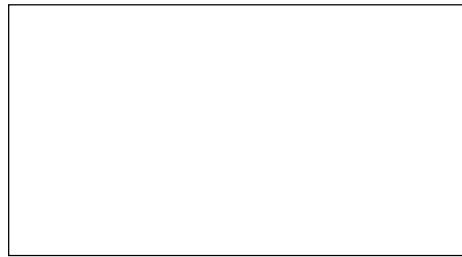
(3) **वृत्ताकार भूखंड (Circular Plot)**

ऐसा भूखंड धन एवं संपन्नता को रोके रखता है। परंतु वृत्ताकार या कुंभ वृत्ताकार भूखंड धन एवं संपन्नता का द्योतक हैं। दिल्ली में रिंग रोड के कनॉट प्लेस के गोल मार्केट, कमला नगर आदि क्षेत्र संपन्नता के जीवंत उदाहरण है।
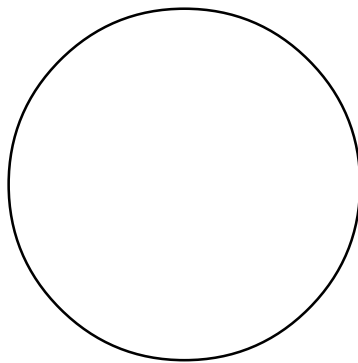
आधुनिक विद्वानों के अनुसार वृत्ताकार भूखंड के अंदर वृत्ताकार वास्तु का निर्माण आवासीय वास्तु के लिए अच्छा फल नहीं देता जबकि वर्गाकार भूमि के अंदर वर्गाकार वास्तु का निर्माण व्यावसायिक वास्तु के लिए अच्छा फल देता है। जैसे – खेल के मैदान, संसद भवन, बुद्ध तथा भारत के अन्य धर्मों के रूप।

(4) **अंडाकार भूखंड (Oval Plot) :**

अंडाकार अत्यंत कष्टदायक होता है। इस पर बने मकान में रहने वालों को हानियों एवं व्याधियों का
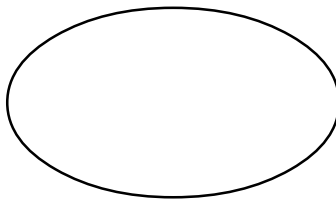
सामना करना पड़ता है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय मकान नहीं बनाना चाहिए।

Varied problems can be used by Carving out the biggest rectangle and rejecting the portion out side the rectangle.

(5) षट्कोण भूखंड (Hexagonal plot) :– यह साधारण फल देने वाला होता है।

Average can cause of govt. punishment can be used for construction by carring out the biggest square or rectangle and leaving the rest portion
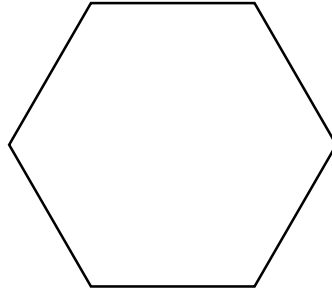
(6) अष्टकोणीय लंबा भूखण्ड :–

यह कष्ट एवं पीड़ा पहुंचाता है। इसमें वास करने वालों को कष्टों से परेशानियों का भय होता है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।
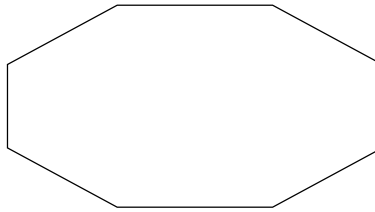
(7) चक्राकार भूखंड (Wheel Shaped Plot) :- धन–हानि का कारक
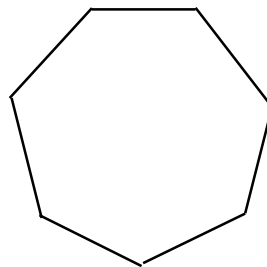
इसमें से वर्गाकार या आयताकार टुकड़ा काटकर उस पर भवन का निर्माण किया जा सकता है।

;**(8) त्रिभुजाकार भूखंड (Trianglular Shape)** – त्रिभुजाकार भूखंड अशुभ होता है। यह मुकदमे, अग्नि के कारण हानि तथा सरकार की अस्थिरता आदि का कारक होता है। अतः इस पर
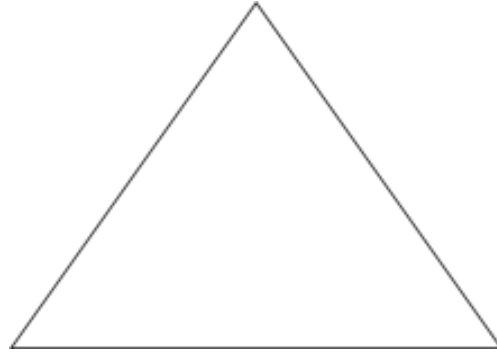
यथासंभव वर्गाकार अथवर आयताकार टुकड़ा काटकर भवन बनाना चाहिए।

(9) अर्द्ध वृताकार भूखण्ड (Semi-circular Plot) :– ऐसा भूखंड भी अशुभ होता है। इस पर बना भवन दुख, दरिद्रता आदि का कारक होता है। अतः इस पर यथासंभव आयताकार टुकड़ा काटकर भवन निर्माण करना चाहिए।
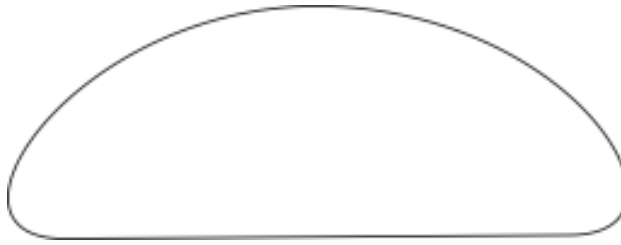
(10) धनुषाकार भूखंड (Bow Shape Plot) ऐसे भूखंड पर रहने वालों के अनेक शत्रु होते हैं। साथ ही उन्हें विभिन्न समस्याओं, भय आदि का सामना करना पड़ता है। अतः इन कष्टकारी एवं अशुभ स्थितियों से बचने के लिए धनुषाकार भूखंड पर यथासंभव आयताकार टुकड़ा काटकर भवन बनाना चाहिए।
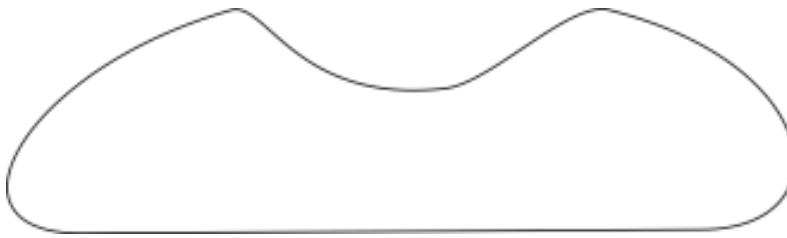
(11) रथ आकृति का भूखंड :– यह भूखंड गृहस्वामी के लिए अत्यंत अशुभ होता है। अतः इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।
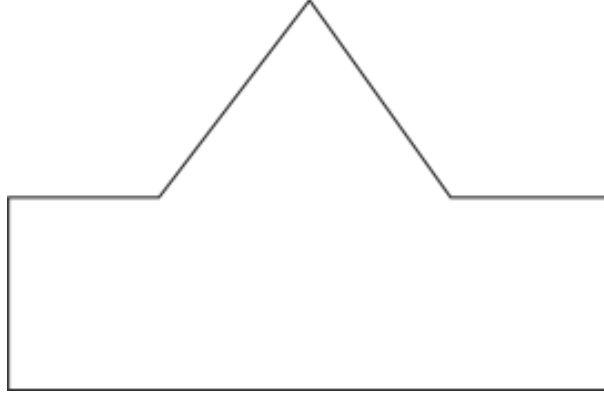
(12) दो जुड़े हुए रथों की आकृति वा भूखंड :–
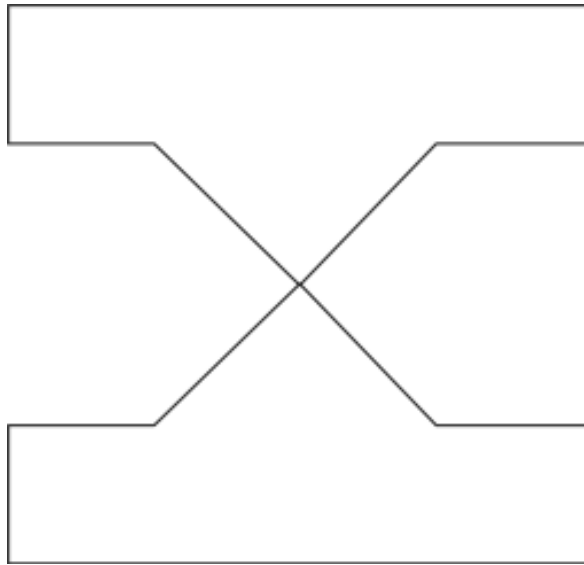
यह भूखंड भी अशुभ होता है। इसका स्वामी परेशानियों से घिरा रहता है। घर में चोरी होती रहती है, फलस्वरूप उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहती। अतः इस पर मकान बनाना श्रेयस्कर नहीं।

(13) बाल्टीनुमा भूखंड :–

इसमें निवास करने वाले ऋणग्रस्त रहते हैं।

(14) मृदंगाकार भूखेड :–

इस भूखंड पर बने भवन का स्वामी परस्त्री कामी होता है एवं घर के धन का इसी काम में अपव्यय करता है। इस तरह मृदंगार भूखंड अशुभ होता है, अतः इस पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।
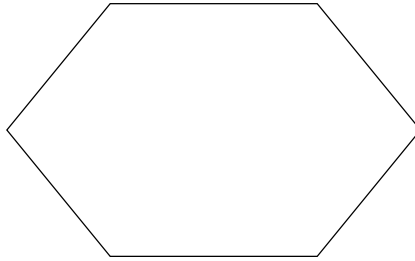
(15) कोणीय भूखंड :–

यह अच्छा नहीं माना गया है। इस पर बने भवन में रहने वाले पति एवं पत्नी के मध्य अक्सर कलह होता रहता है।
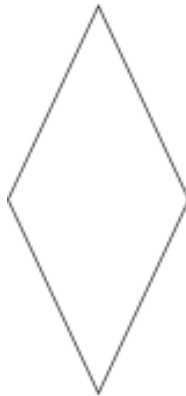
(16) कैप्सूल के आकार का भूखंड

यह मिश्रित फलदायक होता है। यहां वास करने वाला व्यक्ति धन संचय नहीं कर सकता।

(17) ताराकार भूखंड (Star Shape plot) :-

ताराकार भूखंड पर रहने वाले कनूनी अड़चनों और मुकदमों में घिरे रहते हैं। फलस्वरूप उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहती। अतः ऐसे भूखंड पर भवन बनाना श्रेयस्कर नहीं है।
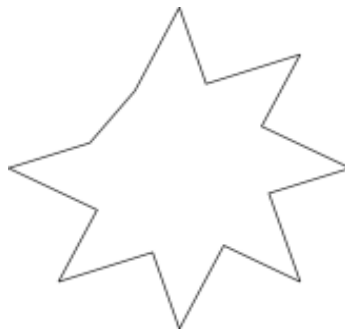
(18) ढोल के आकार का भूखंड :–

ढोल के आकार का भूखंड अशुभ होता है। ऐसे भूखंड पर रहने वाला दुर्बल होता है और उसकी पत्नी की असामाजिक मृत्यु होती है।
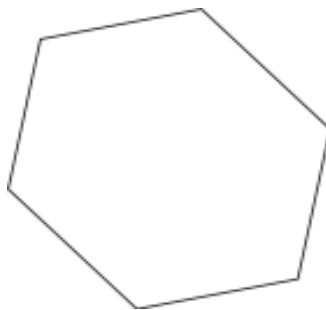
(19) हाथ के पंखे के आकार का भूखंड :—

यह भूखंड अत्यंत अशुभ होता है। यह धन तथा मवेशी की हानि का कारक होता है। इस पर रहने वाले को भीख मांगने तक की नौबत आ सकती है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।
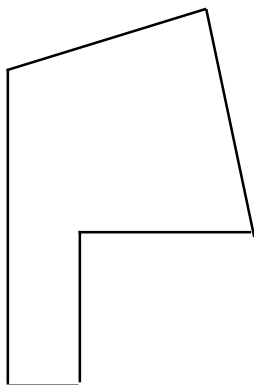
(20) मंदिरनुमा भूखंड :—

इस प्रकार के भूखंड पर वास करने वाले फक्कड़ किस्म के होते हैं। गृहस्वामी बैरागी बनकर गृह त्याग देता है। इस तरह सुखी पारिवारिक जीवन के लिए यह भूखंड उपयुक्त नहीं होता।
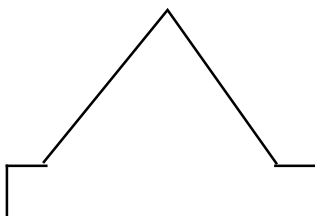
(21) अंग्रजी के T अक्षर के आकार वाला भूखंड :—

इस भूखंड पर बने मकान में रहने वाला चार या पांच वर्ष में मकान बेच देता है।किंतु इसका पांचवा खरीददार कुछ हद तक स्थिर रहता है।
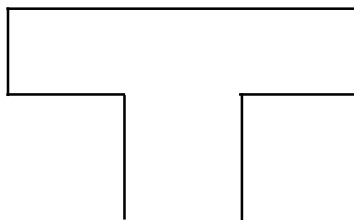
(21) गौमुखी भुखंड :–

जो भूखंड आगे से संकरा एवं पीछे से चौड़ा हो उसे काकमुखी या गौमुखी भूखंड कहते हैं। यह भूखंड अच्छा फल देने वाला माना गया है। गौमुखी भवन वही शुभ होता है जिस का प्रवेश दक्षिण या पश्चिम दिशा से हो। चित्र में दिखाए गए गौमुखी भूखंड में उत्तर–पूर्व बढ़ा हुआ है। इस पर बने मकान में रहने वाले को यश, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, मानसिक एवं आर्थिक प्राप्ति होती है और उसका समुचित विकास होता है। इस तरह के भवन में सोए हुए भाग्य जाग जाते हैं। ऐसा भूखंड भाग्य से मिलता है। इस तरह के भवन में वास करने वाले की लोकप्रियता दूर–दूर तक फैली रहती है और उसकी सारी आकांक्षाएं पूरी होती हैं।
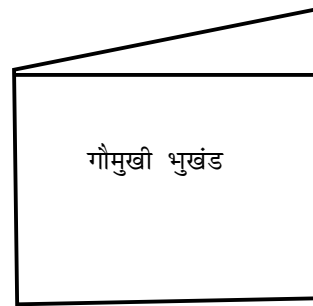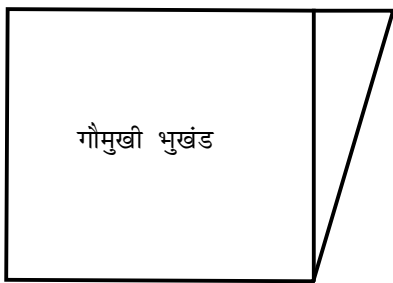
लेकिन प्रत्येक गौमुखी भूखंड अच्छा नहीं होता है। उत्तर–पूर्व से काटकर बना गौमुखी भवन तो शुभ फलदायक नहीं होता। घर में समृद्धि, सुख, त्रान्ति आदि की कमी बनी रहती है। दरिद्रता, दुर्घटनाएं आदि पीछा नहीं छोड़तीं। बीमारियों से ग्रस्त होते रहते हैं। कुछ अशुभ गौमुखी भूखंडों के चित्र यहां प्रस्तुत हैं।
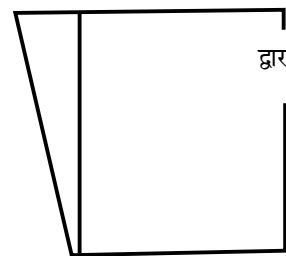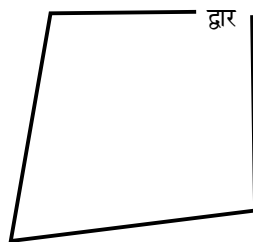
उक्त भूखंड अकस्मात दुर्घटना के कारक होते हैं। इन पर रहने वालों में आत्महत्या की प्रवृत्ति आ जाती है व मुकदमों में उलझे रहते हैं। अतः ऐसे भूखंड पर भवन बनाने से पूर्व उसे दोषमुक्त करना लेना चाहिए।

(22) व्याघ्रमुखी भूखंड :

जो भूखंड आगे से चौड़ा एवं पीछे से पतला होता है उसे व्याघ्रमुखी भूखंड या छाजमुखी भूखंड कहते हैं। यह रोग, शोक एवं दुख देने वाला होता है। इस बने भवन में रहने वाले को मुसीबतें, आपदाएं आदि घेरे रहती हैं। गरीबी, कर्ज, शोक, दुख आदि साथ नहीं छोड़ते। साथ ही भाग्य सो जाता है। अतः इस तरह के भूखंड का इस्तेमाल सुधार किए बिना नहीं करना चाहिए।
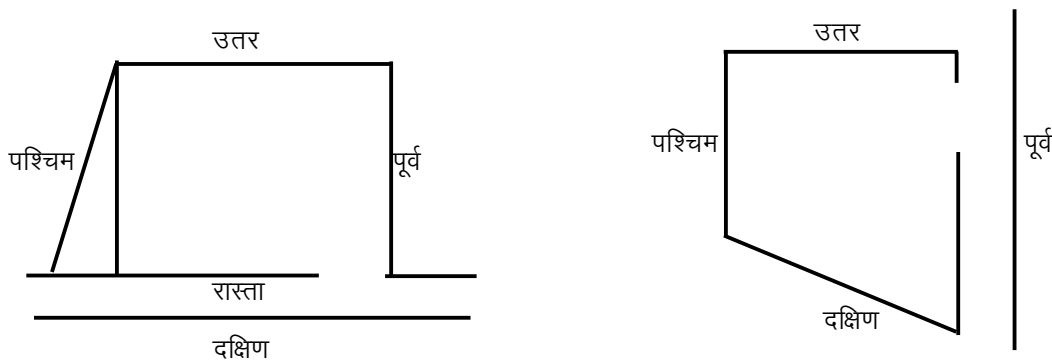
लेकिन उत्तर–पूर्व में बढ़ते हुए अगर व्याघ्रमुखी भूखंड बने तो वह सुख, समृद्धि एवं शांति देने वाला होगा।
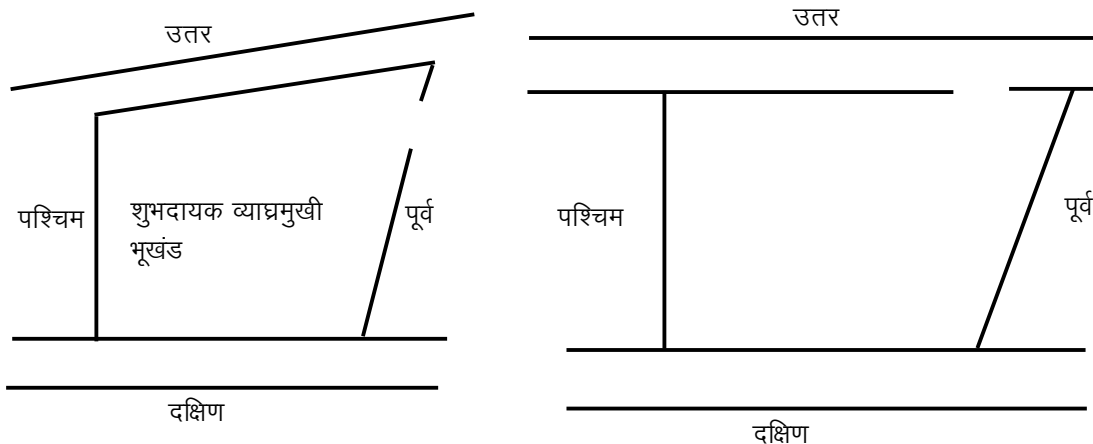
इस पर रहने वाले को यश, प्रतिष्ठा, मान सम्मान के साथ सभी सुखों की प्राप्ति होती है। उसका समुचित आर्थिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं मानसिक विकास होता है। उसकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होती है। जिस व्याघ्रमुखी भूखंड का ईशान बढ़ा हुआ हो, वह शुभ होता है।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆

12. पहाडी क्षेत्र में कमर्शियल काम्पलेक्स हेतु शुभ जगह

किसी भी भूखंड के पीछे दक्षिण और पश्चिम दिशा में पठार या ऊँची बड़ी ईमारतें हों तथा सामने ऊतर और पूर्व दिशा में नदी, जलाशय या बगीचा हो तो यह कमाई देनेवाला उत्तम भूखंड होता है। इस तरह के भूखंड पर व्यवसायिक या औद्योगिक कार्यो की प्रगति काफी अच्छी होती है। यदि भूखंड के चारो ओर ऊँचाईदार पर्वत है, तो भूखंड कमाई नही देगा। इस तरह का भूखंड पर व्यवसायिक कार्य नही करना चाहिए।

पहाड़ी क्षेत्र में होटल हेतु शुभ स्थानः–

यदि भूखंड के पीछे दक्षिण और पश्चिम के क्षेत्र में सुरक्षा कवच के रूप में ऊँची या गोलाई लिए हुए पहाडी हो तथा सामने उतर और पूर्व में खुला मैदान या दरिया हो तो यह होटल के लिए काफी शुभफलप्रद होता है। इस तरह के भूखंड पर होटल की प्रसिद्धि दूर–दूर तक होती है तथा वह क्षेत्र पर्यटकों के लिए आकर्षक का क्षेत्र बन जाता है।

पहाडी क्षेत्र में होटल हेतु प्रतिकूल स्थानः–

यदि हाटल के चारों ओर डरावने एवं ऊंटपटांग पर्वत हो, खासकर उतर और पूर्व दिशा में पर्वत हो तथा दक्षिण और पश्चिम में नदी या तलाब हों तो ऐसे भूखंड होटल व्यवसाय के लिए प्रतिकूल होता है। इस तरह के भूखंड पर होटल व्यवसाय नही करना चाहिए।

कमर्शियल काम्पलेक्स के सामने राजमार्ग के उस पार जमीन ऊँचीः–

यदि कमर्शियल काम्पलेक्स के सामने राजमार्ग के उस पार की जमीन ऊँची या पठारी हो तो प्रवेश द्वार पीछे की ओर खुले मैदान में रखें। बरसाती जल एवं प्राकृतिक प्रकोप से सुरक्षित रहेगा, आवक भी अच्छी रहेगी। अन्यथा प्रवेश द्वार वेद्य से ग्रसित हो जाएगा जिसके फलस्वरूप प्रयास के बावजूद उसका पूर्ण विकास नही हो पाएगा।

कमर्शियल काम्पलेक्स हेतु शुभ स्थानः–

यदि आप पठारी क्षेत्र में कमर्शियल काम्पलेक्स या होटल हेतु भूखंड खरीदने जा रहे है अगर भूखंड के दक्षिण एवं पश्चिम भाग में पर्वत, चट्टानें, बड़े पाषाण खण्ड है, साथ ही उतर और पूर्व दिशा में खुला हुआ मैदान या दरिया हो तो ऐसा भूखंड काफी शुभफलदायक होता है, तथा स्वास्थ्य एवं धन दोनों प्रकार के लाभ देता है। इस तरह के भूखंड पर कार्य करने से कार्य की प्रगति काफी अच्छे तरीके से होती है।

त्याज्य भूखंडः–

जिसके भूखंड के उतर या पूर्व में पहाड़ या दक्षिण और पश्चिम में दरिया या समुद्र हो तो वैसी भूमि पर किसी भी तरह का व्यवसायिक या औद्योगिक कार्य नही करना चाहिए। इस तरह के भूखंड पर

दो बड़े भूखंडों के मध्य छोटा भूखंड नलेः–

किसी भी व्यवसायिक भूंखड दो बड़े भूखंडो के मध्य छोटा भूखंड जमीन कीमती रहने पर भी उसे न खरीदें। ऐसा भूखंड व्यापार में घाटा देगा एवं भूस्वामी को दरिद्र बना देगा।

व्यवसायिक भूखंड के उत्तर, पूर्व में पानी रहने परः–

यदि किसी कमर्शियल काम्पलेक्स, हॉस्पिटल, विद्यालय या बड़े बहुउद्वेशीय भूखंड के ईशान या पूर्व दिशा की ओर नदी, नहर या पानी का कुदरती स्त्रोत है तो वह जमीन सोना उगलेगी। यदि इस दिशा में बनावटी स्त्रोत नलकूप या कुआं है तो भी श्रेष्ठ हैं। ऐसे अस्पताल में रहनेवाले रोगी तुरंत ठीक होंगें, स्कूल है तो बच्चे विद्या के क्षेत्र में कामयाब होंगें। व्यवसायिक भवन है तो इसमें व्यापार करने वाले सभी लोग समृद्ध एवं धनी होंगे।

रेस्ट हाउस या होटल का नैऋत्य हमेशा भारी रखेंः–

वास्तु शास्त्र के अनुसार नैऋत्य दिशा ऊँचा होना चाहिए। सबसे अधिक ऊँचा नैऋत्य उसके बाद आग्नेय , वायव्य एवं सबसे कम ऊँचा ईशान्य रखें। नैऋत्य का दीवार भी मोटा एवं मजबूत होनी चाहिए। होटल, रेस्ट हाउस एवं धर्मशाला में इस नियम का मजबूती से पालन करना चाहिए।

फैक्ट्री या दुकान में ईशान खाली रखेंः–

फैक्ट्री या व्यवसायिक कार्य वाले भूखंड में ईशान्य क्षेत्र में खाली या कम निर्माण करना चाहिए। नैऋत्य एवं अग्नि कोण की ओर किया गया भारी निर्माण धनदायक होता है। जबकि ईशान में भारी निर्माण शुभ नही होता।

व्यवसायिक भूखंड के नियमः–

व्यवसायिक रूप से समृद्ध क्षेत्र वाले राजमार्ग पर कोई भूखंड खरीदा गया है तथा दुकान एवं ऑफिसों का निर्माण करा रहे हों तो आस–पड़ोस की दुकानों तथा मकानों की ऊँचाई के अनुपात में ही अपना व्यवसायिक प्रतिष्ठान बनायें। यदि उनसे ऊँचा, लम्बा या बेढंगा तरीके से बनाया गया हो तो व्यवसाय के लिए यह निर्माण अनुकूल नही होगा।

13. भूखंड का विस्तार
Extention of the Plot

जिस भूखंड के चारो कोण समकोण हो वह सर्वोत्कृष्ट भूखंड माना जाता है। लेकिन आमतौर पर वर्गाकार या आयताकार भूखंड मिलने में कठिनाई होती है। किसी भूखंड का कोई क्षेत्र बढ़ा हो तो उसका क्या फल होगा यह बात भूखंड के आकार प्रकार पर निर्भर करती है। कभी कभी कोई कोण 90 अंश से छोटा बड़ा भी होता है।

ईशान वृद्धि भूखंड :–

ईशान्य कोण मे जमीन बढी हुई हो इस वृद्धि को ईश वृद्धि या गुरू वृद्धि भूखंड कहते हैं। उत्तर पूर्व अर्थात ईशान क्षेत्र में परम पिता परमेश्वर अर्थात ईश्वर का वास माना जाता है। साथ ही ग्रहों में गुरू (वृहस्पति)
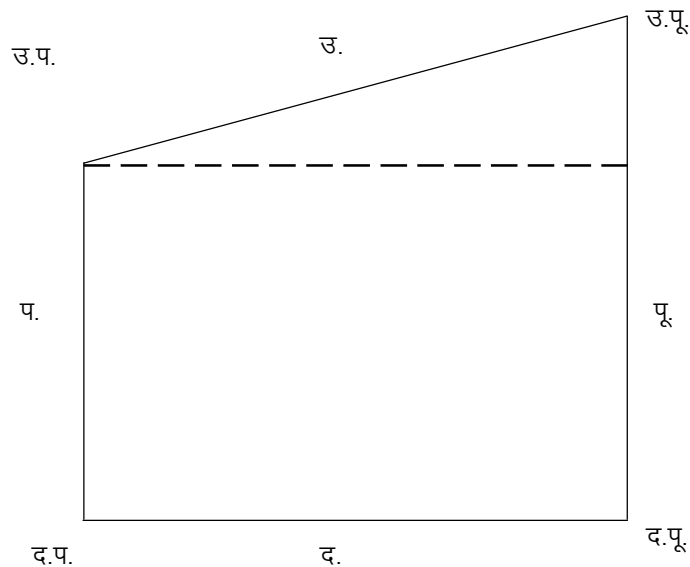
का वास भी यहॉ होता है। उत्तर–पूर्व की दिशा में जमीन बढ़ी हुई होने से अध्यात्मिक चेतना का विकास, होता है साथ ही धर्म, अर्थ, संतान, बुजुर्गों का सुख तथा सत्य गुणी कार्यो के कारक वृहस्पति के तरफ की जमीन बढी हुई होने पर वृहस्पति की कारक चीजों में वृद्धि होती है, तथा उसपर मकान बनाकर रहने वाले को ऐश्वर्य, समृद्धि और भाग्य की प्राप्ति होती है। इस तरह का भूखंड उच्च शिक्षा एवं प्रतिष्ठा देने वाला होता है। उत्तर दिशा में मनस चेतना के कारक ग्रह बुद्ध एवं कुबेर का वास होता है। इसलिए विस्तृत ईशान वाले भूखंड में ईशान कोण ही नही बल्कि उत्तर की ओर की जमीन भी बढ़ी हुई रहती

है। जिसके फलस्वरूप घर में मानसिक विकास एवं खुशियॉ भी बनी रहती है। साथ ही अच्छे स्वास्थ्य एवं नाम, यश, मान–सम्मान के साथ लोग जीवन यापन करते है। हर कदम पर लोकप्रियता मिलती है। इसमें निवास करने वाले ईश्वर तुल्य समझे जाते है। घर में आने जाने वालों का तॉता लगा रहता है। साथ ही सभी ईच्छाए पूरी होती है। किसी तरह की कोई कमी नहीं रहती है। इस तरह के भूखंड पर निवास करने वाले लोग गुणों में धर्म, नैतिकता, त्याग, सात्विकता, ज्ञान एवं परोपकार के भावना से युक्त होते हैं। अतः ईशान वृद्धि भूखंड शिक्षक, न्यायविद्व, धर्मशास्त्र के ज्ञाता, अंतरिक्ष यात्री, इंजिनीयर ,गणितज्ञ, ज्योतिषी, मंत्री एवं उच्च पद को सुशोभित करने वाले के लिए विशेष लाभप्रद होता है। परंतु ऐसे भूखंड में रहने वाले में अहंकार की भावना भी रहती है। इसका कारण यह है कि वृहस्पति सात्विकता के साथ–साथ अहंकार भी देता है।

वायव्य वृद्धि भूखंड :

उतर–पश्चिम अर्थात वायव्य में चंद्र ग्रह का अधिकार एवं देवतओं में पवन देव का वास माना जाता है। वायव्य में भूमि बढ़ी होने से चंद्र की कारक वस्तुओं में वृद्धि होती है।**चंद्रमा मनसों जातः** अर्थात चंद्रमा व्यक्ति के मन का प्रतिनिधित्व करता है। चंद्रमा मातृस्नेह माता , स्नेह, संवेदना, स्वभाव, नम्रता आदि का कारक भी माना गया है। साथ ही जल एवं रक्त संचार का कारक है। ऐसे भूखंड पर बने मकान में
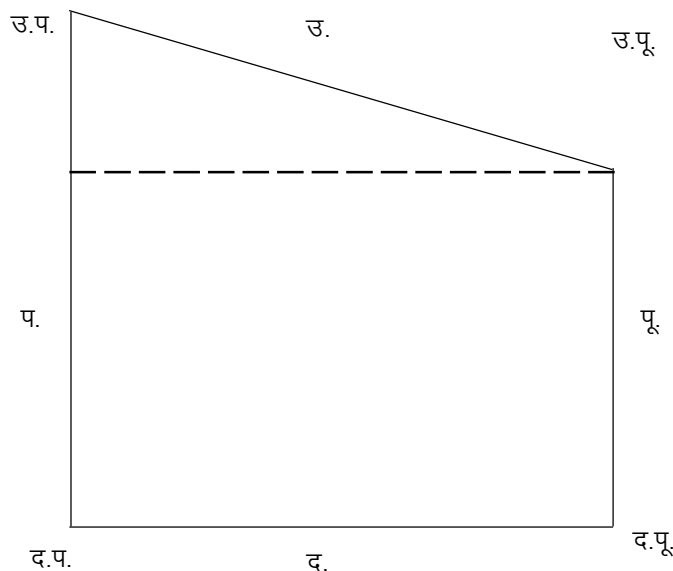
रहनेवालों को माता का उत्तम सुख मिलता हैं। चंद्र यात्रा और प्रवास का भी कारक है इस कारण ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवाले भ्रमणशील होते हैं। वे कार्यो के कारण बार–बार अपने आवास बदलते हैं । चंद्रमा के नौकरी के साथ संबंध होने से ऐसे मकान में रहने वालों को प्रायः अच्छी नौकरी मिलती है और परिवार के प्रायः सभी सदस्य घर के बाहर जाकर नौकरी करतें हैं। घर के बाहरी स्थानों से

भी इनका संबंध अच्छा रहता है। चंद्र औषधि का कारक है अतः ऐस भूखंड पर बने मकान में रहने वालों को चंद्र का शुभ प्रभाव प्राप्त होता है। उनके धन–धान्य में वृद्धि होती है। साथ ही घर में खाद्यय पदार्थो की नियमित व्यवस्था बनी रहती हैं।

चंद्रमा के बढे हुए प्रभाव होने के कारण घर में निवास करने वालों में रक्त विकार एवं चंचलता बनी रहती है। परिवार में आपस में मतभेद बना रहता है तथा गृहस्वामी के मन में उन्माद, उत्पात तथा चिंता बनी रहती है। पूर्णमासी के दिन कई व्यक्ति में पागलपन या उन्माद देखने को मिलता है। यही बात इस भूखंड पर बनी मकान में रहने वालों में भी दिखाई देती है। ऐसे मकान में रहने वाले लगनशील परंतु कल्पना एवं तर्क करने वाले होते हैं। वायव्य क्षेत्र में वायु देवता का वास होता है। वायु का स्वभाव चंचल होता है। शरीर में वायु गुण के कारण चिंता, उन्माद एवं मानसिक दुर्बलता की अधिकता रहती है। फलस्वरूप इस तरह के भूखंड पर निवास करने वाले का बाल असमय सफेद हो जाता है। बुढापे के लक्षण जल्द ही दिखाई पड़ने लगते हैं।

आग्नेय वृद्धि भूखंड :

ऐसे भूखंड का दक्षिण–पूर्व भाग का क्षेत्र बढा होता है। आग्नेय कोण में अग्नि देवता तथा शुक्र ग्रह का वास होता है। शुक्र ग्रह को कामवासना, विलास एवं सुखो का कारक ग्रह मानते है। इसके अलावा मौज–मस्ती, शयन कक्ष, संगीत, चित्रकारी, नृत्य आदि कला तथा श्रृगांर आदि पर शुक्र का कारकत्व है। शुक्र स्त्री वर्ग का भी कारक है। ऐसे भूमि पर बने मकान में रहने वाले कामासक्त होते हैं। ये मौज–मस्ती करने वाले होते हैं। इनमें ग्लैमर के प्रति आकर्षण तथा संगीत , गायन, नृत्य, सिनेमा, नाटक आदि कलाओं में रूची होती है। पहले राजा महाराजा भूखंड के आग्नेय कोण में ही नाट्यशाला, नृत्यशाला, संगीत कक्ष उद्यान तथा पुष्पवाटिका आदि बनाते थे। ऐसे भूखंड पर बने मकान में शुक्र क्षेत्र के बढे होने के कारण परिवार पर स्त्री का प्रभाव रहता है। अर्थात ऐसे घरो में रूपवान स्त्री या पत्नी की बात को ज्यादा तरजीह दी जाती है। साथ ही सुदंरता के कारक प्रत्येक उस पदार्थ जो सुदंरता को बढाता है
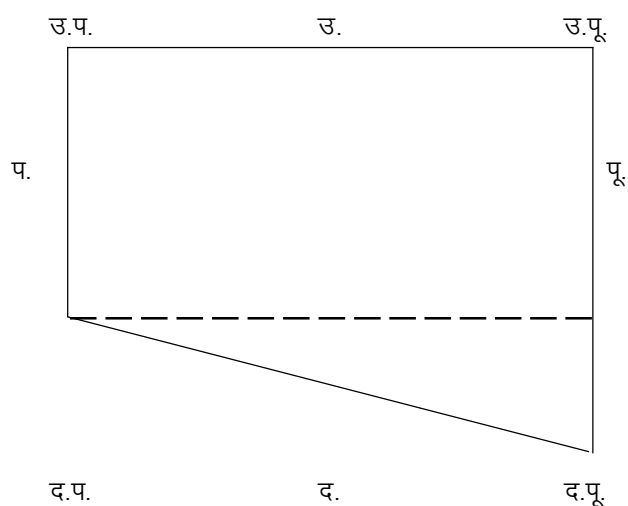
जैसे पाउडर, लिप्स्टिक क्रीम, ब्यूटी पार्लर आदि से संबंधित कार्य के लिए यह क्षेत्र शुभफलदायक होता है। ऐसी भूमि पर बने मकान में रहने वाले पर राजसी वृतियों का प्रभुत्व रहता है। परंतु ऐसे भूखंड पर यम् की दक्षिण दिशा और आग्नेय क्षेत्र के बढे होने के कारण यहॉं रहने वाले को यम् एवं अग्नि का भय हमेशा बना रहता है। साथ ही ऐसे भूखंड पर रहने वालो को शत्रु वृद्धि, चोरो का भय एवं चिंता प्रायः बनी रहती है। झगडा झंझट, भारी खर्च, स्वास्थ्य में कमी एवं आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ता है। इस तरह से बच्चों की वृद्धि और स्त्रियों के विकास में बाधक होता है।

नैऋत्य वृद्धि भूखंडः

जिस भूखंड के दक्षिण–पश्चिम की भूमि बढी हुई हो उसे नैऋत्य वृद्धि भूखंड कहते है। नैऋत्य में राहु या नैऋृत्य नामक राक्षस का वास होता है। इस कोणों मे भूमि के बढे होने का अर्थ है तमोगुण में अधिकता क्योंकि राहु तमोगुणी ग्रह है। ऐंसे भूखंड पर भूत, प्रेत एवं आसुरी शक्तियों का वास होता है। क्योकि भूत–प्रेत का कारक राहु है। इस तरह के भूखंड पर रहने वाले लोगों में परस्पर वैमनस्य बनी रहती है। पति–पत्नी, पिता–पुत्र, माता–पुत्र में परस्पर मधुर संबंध नहीं रहते। परिवार के लोग अत्यंत क्रोधी एवं उग्र होते है। परिवार में आग, विषपान, शस्त्र प्रयोग एवं उग्रता आदि बातें अक्सर देखने को मिलती है। साथ ही आत्महत्या जैसी घटनाएं भी होती है। ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहने वाले अंध
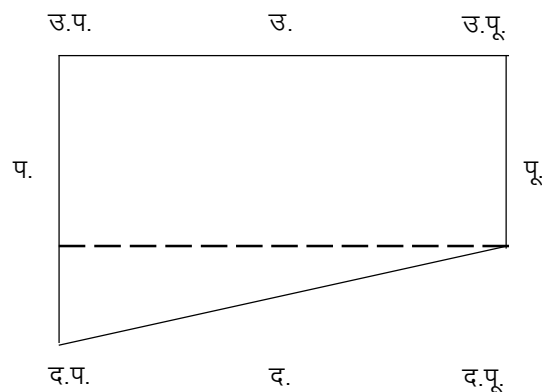
विश्वास के शिकार होते हैं तथा जादू टोना, तंत्र मंत्र पर अधिक विश्वास करते है। घर में भूत–प्रेत से संबंधित घटनायें होती रहती है। घर मे निवास करने वाले लोगों के बीच छल, कपट– प्रपंच ,झूठ एवं फरेबी में वृद्धि देखने को मिलती है। घर के लोग अनैतिक एवं अमर्यादित कार्यो में संलग्न होते है। संतान को मादक पदार्थ की लत लग जाती है। आकस्मिक घटना, दुर्घटनायें एवं आत्महत्या जैसे प्रवृति की वृद्धि हो जाती है। गृहस्वामी के दाम्पत्य जीवन में कलह एंव वेदना देखने को मिलती है। परिवार की सदस्यों को विभिन्न प्रकार के कष्ट एवं परेशानियॉं बनी रहती है। अतः इस तरह का भूखंड स्वास्थ्य में कमी, मानसिक खुशियों में कमी, धन में कमी तथा सुख–समृद्धि में कमी देता है। इस तरह के भूखंड पर बने

भवन हर तरह की मुसीबत, संकट और आफत देते रहते है। भाग्य सो जाता है, आपदाएं, संकट, महादरिद्री, कर्ज और ब्याज का बोझ से इसमें निवास करने वाले लोग दब जाते है। सभी तरफ के मुसीबतें अपने आप आकर्षित होते रहती है। इस भूखंड में दिए गए चित्र में बिंदु रेखा की दो सीमा तक ही भवन निर्माण करना चाहिए। बढ़े हुए नैर्ऋत्य की त्रिभूजाकार भूमि को खाली रखें तो भी कष्ट सहने होंगे। वास्तु निर्माण भले ही चौरस या लम्बचौरस जगह में करें, समग्र भूखंड का आकार ही भूमि निर्माण के लिए निषिद्ध है।

इस प्रकार चारो कोण में बढी हुई भूखंड को देखने से पता लगता है कि ईशान में बढा हुआ भूखंड विशेष शुभ और बिना दिक्कत देनेवाला होता है। इस तरह की भूखंड पर धन और धर्म दोनों की वृद्धि होती हैं। जबकि वायव्य एवं आग्नेय की वृद्धि वाले भूखंड मे शुभाशुभ दोनो प्रकार के फल की प्राप्ति होती है। नैऋत्य वृद्धि युक्त भूखंड में अनिष्ठ फल की प्राप्ति अधिक होती है। अतः इस तरह के भूखंड पर भवन निर्माण नही करना चाहिए।

14. छिद्रिल कोणयुक्त भूखंड
Extention of the Plot

कोण वृद्धि से विपरीत स्थिति कोणछेदी भूखंड की होती है। कोणवृद्धि भूखंड में किसी कोण के बढ़े होने से उस कोण से संबंधित ग्रह के देवता की शक्ति में वृद्धि होती है, जिससे ग्रह या देवता से संबंधित विषयों में वृद्धि देखने को मिलती है। इसके विपरीत कोण छेदन होने से उस कोण से संबंधित ग्रहों तथा देवताओं के प्रभाव में कमी देखने को मिलती है।

ईशान छेदी भूखंड

भूखंड का ईशान कटा हुआ रहने पर धनागम में कमी, धर्म में कमी, गृहसुख या पितृसुख में कमी, दानशीलता एवं सात्विकता में कमी तथा वंश वृद्धि में अवरोध या संतान को कष्ट होता है। इसके अतिरिक्त ऐसे भूखंड पर रहने वालों की स्मरणशक्ति कमजोर होती है तथा दुख, निर्धनता, बीमारी,
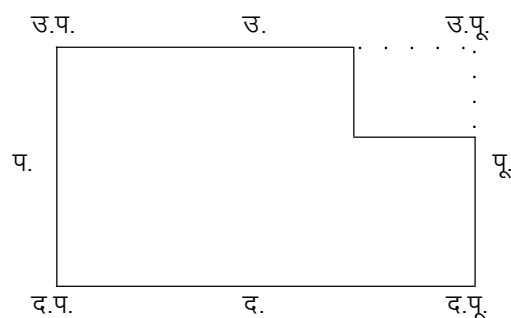
महापातकी घरों में प्रवेश कर जाती है। ईशान कोण में छेद रहने पर ईश या बृहस्पति भूखंड के बाहर रह जाते हैं। फलतः बृहस्पति की वस्तुओं में कमी रहती है। ऐसे भूखंड के कोण 6 होते हैं। वास्तुशास्त्र में चार कोनेवाले भूखंड के अलावा 3, 5 एवं 7 कोण के भूखंड निर्माण हेतु निषिद्ध माने गए हैं। इसलिए ऐसा भूखंड कभी नहीं खरीदना चाहिए। ईशान में ईश्वर का वास होता है, इसलिए इसके कटे होने पर सुख, शांति, ऐश्वर्य—वैभव आदि की प्राप्ति नहीं हो पाएगी। सभी ग्रहों में बृहस्पति का महत्व सर्वाधिक है। अन्य ग्रहों के अनिष्ट से बचाने की शक्ति केवल देवगुरु बृहस्पति में ही है। अतः यदि बृहस्पति का ही छेदन हो तो उस मकान में कष्टों से बचाव और शुभत्व की आशा कैसे की जा सकती है।

छिद्रयुक्त नैर्ऋत्य वाला भूखंड

वास्तु शास्त्र चार से कम या अधिक कोणों से युक्त भूखंड को मकान के लिए उपयुक्त नहीं मानते।
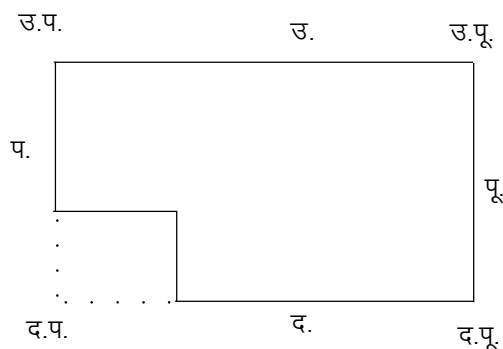
दक्षिण–पश्चिम अर्थात नैऋत्य का क्षेत्र जिसपर राहु ग्रह का आधिपत्य है पृथ्वी तत्व के लिए निर्धारित है। यह सभी तत्वों से स्थिर है। यह क्षेत्र के कट जाने से आयु में कमी, निर्णय लेने की क्षमताओं में कमी, भाग्य में कमी एवं प्रभाव में कमी देखने को मिलता है। नैऋत्य क्षेत्र के कट जाने से दक्षिणी ध्रुव से मिलने वाले चुंबकीय प्रभाव में कमी हो जाती है जिसके फलस्वरूप खुशहाली, समृद्धि, मान–सम्मान, यश् एवं प्रतिष्ठा सबकुछ देखते–देखते खत्म हो जाता है। बीमारियां, खर्च, दुख ये सभी साथ हो जाते हैं। घर में दुखों का पहाड टुट जाता है तथा जिंदगी जीने का मजा खत्म हो जाता है। यद्यपि नैर्ऋत्य के कट जाने पर आसुरी वृत्तियां एवं राहु से संबंधित अनिष्ट दूर हो जाते हैं और भूत–प्रेत भवन में प्रवेश नहीं कर पाते। अंधविश्वास से परिवार मुक्त रहता है। अनिष्ट दूर हो जाते हैं साथ ही राहु या नैऋत राक्षस की शक्तियां प्रभावहीन हो जाती हैं।

छिद्रयुक्त वायव्य वाला भूखंड

वायव्य में चंद्र का वास होता है। चंद्र के मन का कारक होने के कारण ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवालों की मानसिक शक्ति क्षीण होती है। परिवार के लोगों में विषाद एवं पागलपन के लक्षण उत्पन्न होते हैं। यह दिशा के कट जाने से परिवार जनों के बीच आपसी संबंधो में टकराव देखने को मिलती
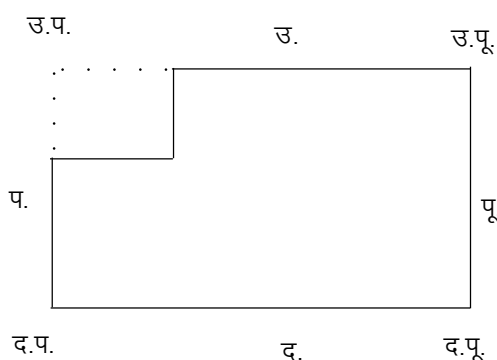
है क्योंकि यह दिशा आपसी संबंध एवं मित्रता को दर्शाता हैं। चंद्र रक्त संचार का कारक भी है, इसलिए परिवार के एक से अधिक सदस्य निम्न रक्तचाप से ग्रस्त रहते हैं। चंद्र के जल तत्व का कारक होने से ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवालों को सर्दी–जुकाम, श्वासरोध, मूत्रविकार, मस्तिष्क ज्वर आदि होने की संभावना रहती है। उनकी दाहिनी आंख के नीचे काली छाई हो जाती है और किसी–न–किसी कारण से आंख की ज्योति क्षीण हो जाती है। चंद्र स्त्री या माता का कारक भी है। इसलिए घर की स्त्रियों को पागलपन, निराशा, मानसिक तनाव, गर्भाशय, मासिक धर्म या मूत्राशय संबंधी रोग होते हैं।

चंद्र के धन–धान्य का कारक होने कारण ऐसे मकानों में अनाज सड़ जाता है या उसकी कमी रहती है। वायव्य छेदी भूखंड पेड़–पौधे लगाने से उनका भी क्षय हो जाता है। वायव्य में वायु देवता का वास होता है। इसलिए इस कोण के कटे होने पर इसमें रहनेवालों को वात रोग नहीं होते किंतु कफ प्रकृति में वृद्धि होने के कारण वे क्रोधी तथा आलसी होते हैं।

आग्नेय छेदी भूखंड

आग्नेय छेदी भूखंड शुक्र का कोण है। इस क्षेत्र के कटे होने पर शुक्र से संबंधि विषय जैसे आमोद–प्रमोद, मौज–मस्ती, शौक, शृंगार, स्त्री सुख, कामप्रवृत्ति आदि में कमी आती है। ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवाले पुरुष में पौरुष शक्ति की कमी होती है। पौरुष शक्ति का कारक शुक्र है, इसलिए
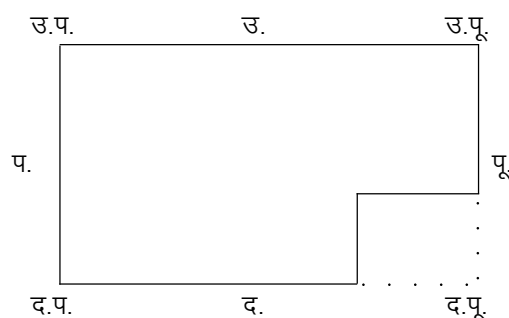
इस क्षेत्र के कटे होने की स्थिति में इस शक्ति का ह्रास होता है। अग्नि शरीर का प्राण है। अतः कटे हुए आग्नेय वाले भूखंड पर बने मकान में रहनेवाले की जठराग्नि तथा कामाग्नि मंद होती है। ऐसे लोगों में प्रायः शारिरिक कमजोरी रहती है। आग्नेय कटे हुए भूखंड स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नही होता। साथ ही समाज में उनकी मान–सम्मान एवं प्रभाव में कमी देखने को मिलती है।

ऐसा भूखंड पिस्तौल या कुल्हाड़ी सा प्रतीत होता है। वास्तु शास्त्र में ऐसा भूखंड अच्छा नहीं माना गया है।

15. वेध
Obstructions

वेध का तार्त्पय है प्रकाश और वायु के मार्ग में रुकावट। मकान में वेध कई तरह के होते हैं। कुछ प्रमुख वेधों का विवरण यहां प्रस्तुत है।

1. द्वार वेध :

मुख्य द्वार के सामने किसी तरह की बाधा होती है उसे द्वार वेद्य की संज्ञा दी जाती है।

इस संबंध में वास्तु राजबल्लभ में कहा गया है –

द्वावारां विद्धमशोभन्स्च तरूणा कोणभ्रमस्तम्भकैः।
उच्छायाद्वद्विगुणा विहाय पृथ्वी वेधो न भित्यन्तरे
प्राकारान्तर राजमार्गपस्तों वेधो न कोणद् वये।

अर्थात द्वार के सामने वृक्ष, कोण, कोल्हु, खंभा, कुआं, आम रास्ता, मंदिर या कील वेध हो तो द्वार के लिए शुभ नही है। मुख्य द्वार के सामने बिजली या टेलीफोन के पोल, पेड–पौधे या पानी का टंकी होना भी द्वार वेद्य कहलाता है। मुख्य द्वार के सामने कुऑं, हैंडपम्प या पानी की व्यवस्था हो तो मानसिक असंतुलन बना रहता है तथा घर में धन की कमी बनी रहती है। अतः इस वेद्य के कारण मकान में रहने वाले हमेशा परेशान रहते हैं। मुख्य द्वार के सामने वृक्ष वेद्य का होना बच्चों के विकास में बाधक होता है। विद्युत या टेलीफोन के खंभे रहने से भी घर में निवास करने वाले हमेशा परेशान रहते है तथा बेवजह रोगो का सामना करना पड़ता है तथा घर में लक्ष्मी का अभाव बना रहता है। परंतु मकान की ऊँचाई से दुगुनी ऊँचाई की दुरी पर कोई द्वार वेद्य हो तो उसे वेद्य नही माना जाता है। उदाहरणार्थ यदि किसी मकान की ऊँचाई 25 फीट हो और वेद्य 50 फीट की दुरी पर हो तो वह द्वार वेद्य नही कही जाएगी किन्तु वह 45 फीट की दुरी पर हो तो उसे द्वार वेद्य माना जायेगा। अतः भवन के मुख्य द्वार के सामने किसी भी तरह के रुकावट या व्यवधान नहीं होना चाहिए। द्वार के आंतरिक वेधों से बचने के लिए सभी प्रमुख द्वारों को एक दूसरे के ठीक सामने इस प्रकार नही बनाना चाहिए कि एक दूसरे को काट रहें हों। बडे द्वार के सामने छोटा द्वार तो कभी नही बनाना चाहिए। लेकिन दो सामान आकार के द्वार को एक दूसरे के सामने रखा जा सकता है। तीन द्वार एक दूसरे के सामने बिल्कुल नही रखना चाहिए चाहे वे एक दूसरे के सामान आकार के ही क्यों न हो।

2. स्वर वेध :

दरवाजा खोलते या लगाते समय कर्कश आवाज होना स्वर वेध कहलाता है। स्वतः दरवाजे का खुलना या बंद होना दरवाजे को दीवार या भूमि आदि से रगडते खुलना या बंद होना तथा दरवाजे के आर पार किसी भी तरह का छिद्र का होना यह अच्छा फल नही देता है। यह भवन में निवास करने वाले के लिए

नाना प्रकार के विघ्न बाधा एवं संकट उत्पन्न करता है। अतः भवन को इस दोष से मुक्त होना चाहिए।

3. कोण वेध :

मकान में कोई कोण छोटा हो तो इसे कोण वेध कहते हैं। ऐसे मकान में रहने वालों को मृत्यु तुल्य कष्ट झेलना पड़ता है जो असमय ही जिन्दगी का नाश कर देता है। अतः मकान के चारों कोण समकोण होने चाहिए। यदि कोई कोण 90^0 से छोटा हो तो उसमें अलमारी नहीं रखनी चाहिए । यदि मकान के 3, 5 या अधिक कोने हों तो भी कोण वेध होता है। ऐसे मकान में रहनेवालों को विभिन्न बीमारियां होने की संभावना रहती है।

4. कूपवेध :

भवन के मुख्य द्वार के सामने सेप्टिक टैंक, पानी की भूमिगत टंकी, हैंडपंप, नल, भूमिगत नाली या नहर का होना कूपवेध कहलता है। इसे वेध के फलस्वरूप धन की कमी बनी रहती है अतः भवन को इस दोष से मुक्त रखना चाहिए।

5. ब्रह्मवेध :

भवन के मुख्य द्वार के सामने तेल पेरने की अथवा गेहूं पीसने की मशीन आदि का होना ब्रह्मवेध कहलाता है। इस दोष से युक्त भवन में रहने वालों का जीवन अस्त व्यस्त तथा परिवार में कलह बना रहता है। फेंगसुई के द्वारा इस वेध को ठीक किया जा सकता है।

6. कीलवेध :

प्रवेशद्वार के पास गाय, बकरी या अन्य कोई जानवर बांधने की कील या खूंटा होना कीलवेध कहलाता है। इस वेध के कारण गृहस्वामी की प्रगति बाधित होती है।

7. स्तंभवेध :

मुख्य दरवाजे के सामने बिजली, डी पी या टेलीफोन के खंभे का होना एक गंभीर दोष है। इसे स्तंभवेध कहते हैं। इस वेध के फलस्वरूप परिवार के सदस्यों में वैमनस्य रहता है।

8. वास्तुवेध :

मुख्य द्वार के सामने स्टोर रूम, गैरेज, वाचमैन केबिन आदि का होना वास्तुवेध कहलाता है। इसके फलस्वरूप धन की कमी बनी रहती है।

9. मकान की लंबाई या चौड़ाई के बीचोंबीच मुख्य द्वार का होना एक वेध है। इसे इस स्थान से एक तरफ होना चाहिए।

10. मुख्य दरवाजे के सामने पानी का नल नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे हमेशा पानी बहता रहेगा। नल की यह स्थिति संतान के लिए नुकसानदायक होती है तथा धन का अपव्यय करती है।

11. चित्र वेध :

मकान में बाघ, सिंह, कुत्ते, तेंदुए जैसे क्रूर या कौए, उल्लू, गिद्ध जैसे हिंसक पक्षियों एवं भूत–प्रेत, युद्ध आदि के चित्रों का होना चित्रवेध कहलाता है। ऐसे जानवरों के सींग आदि भी शो पीस के तौर पर नहीं

रखने चाहिए। मकान में कबूतर का वास अशुभ होता है।

12. शिल्पवेध :

चित्रवेध में वर्णित क्रूर पशु–पक्षियों के शिल्प, मॉडल, मूर्तियों आदि का होना शिल्पवेध माना जाता है। राजतंत्र के समय में राजे महाराजे बाघ, सिंह आदि के शिकार कर उनकी खल में मसाले भरकर उन्हें अपने ड्राइंगरूम में सजाकर रखते थे। आज भी कई घरों में ये पाए जाते हैं। जानवरों की खालों का इस तरह रखा जाना शिल्पवेध है। इस वेध से युक्त मकान में रहनेवालों की आयु घटती है।

13. समवेध :

एक मंजिल पर दूसरी मंजिल बनानी हो और दोनों की ऊंचाई समान हो तो इसे समवेध कहते हैं। समवेध के कारण परिवार का विनाश हो जाता है इसलिए निचली मंजिल से ऊपर की मंजिल की ऊंचाई 1/12 हिस्से जितनी कम रखनी चाहिए।

14 अंतर्वेध :

दो मकानों के बीच एक प्रवेश द्वार का होना अंतर्वेध कहलाता है। ऐसे मकान में रहने वाले क्रोधी होते हैं।

15. छायावेध :

मकान पर पेड़, मंदिर, पहाड़, ध्वजा आदि छाया नहीं पड़नी चाहिए। इसे छायावेध कहते हैं। यह मुख्यतः पांच प्रकार का होता है–

(a) **मंदिर छाया वेध**– भवन पर पूर्वाहन 10 बजे से अपराहन 3 बजे तक पड़ने वाली किसी मंदिर की छाया से होने वाले वेध को छायावेध कहते हैं। इसके फलस्वरुप परिवार में अशांति रहती है, व्यवसाय में नुकसान और बच्चों के विवाह एवं संतान में विलंव होता है।

(b) **ध्वज छाया वेधः**– मकान पर पड़नेवाली ध्वज छाया को छायावेध कहते हैं।शास्त्रों के अनुसार यदि मंदिर से 100 फीट के अंदर मकान का निर्माण किया जाए तो उसमें रहने वाले सदस्य ध्वज वेध से पीडित हो सकते है इसके फलस्वरूप हृदय रोग, मंद बुद्दि, उन्ममाद, लकवा आदि रोगों के शिकार हो जाते है। साथ ही इस वेध से युक्त घर में रहने वालों का स्वास्थ्य खराब रहता है ।

(c) **पर्वत छाया वेधः**– मकान के पूर्व स्थिति किसी पर्वत की छाया मकान पर पड़े तो यह पर्वत छाया वेध कहलाता है। यह प्रगति में रुकावट और ख्याति में कमी का कारक होता है। अतः ऐसे स्थान पर मकान नहीं बनाना चाहिए।

(d) **वृक्ष छाया वेधः**– मकान पर किसी वृक्ष की छाया 10 बजे से संध्या तीन बजे तक पड़े तो उसे वृक्ष छाया वेध कहते हैं। यह विकास को रोकता है। अतः किसी बड़े वृक्ष के समीप मकान नहीं बनाना चाहिए।

(e) **भवन छाया वेधः**– अगर मकान की छाया कुएं या बोरिंग पर पड़े तो इसे भवन छाया वेध कहते हैं। यह धन हानि का कारक होता है।

16. मकान के सामने बेर, खजूर, अनार, बबूल या किसी अन्य कटीले वृक्ष होना अशुभ होता है। इसके फलस्वरूप मकान मालिक का जीवन बरबाद हो जाता है।

(a) घर के सामने पलाश का वृक्ष हो तो गृहस्वामी हमेशा पराजित होता रहता है।

(b) प्रवेश द्वार के सामने इमली का पेड़ हो तो गृहस्वामी की मृत्यु आकस्मिक होती है।

(c) गूलर का पेड़ मकान के सामने हो तो उसमें रहने वाले नेत्र से पीड़ित रहते हैं।

(d) घर पर किसी पेड़ की छाया पड़ती हो तो उस पर निद्रा देवी का राज रहता है। ऐसे घर में रहने वाले तमोगुणी और अंध विश्वासी होते हैं। वे अस्थि पीड़ा, पित्तजन्य, कष्ट, तपेदिक सायटिका एवं संधिवात जैसे भयानक रोगों से पीड़ित रहते हैं। ऐसे मकान में रहनेवालों की बीमारी का निदान डॉक्टर भी नहीं कर पाते। अतः मकान पर किसी भी तरह की छाया नहीं पड़नी चाहिए।

(e) आंगन में दूध वाले वृक्ष धन नाशक होते हैं, इसलिए बरगद, आक, मदार आदि के पेड़ कभी नहीं लगाने चाािहए।

(f) केले, बादाम, खजूर, आम, अंगूर, बेर आदि के पेड़ भी आंगन में न लगाएं।

(g) देवताओं का वृक्ष भी आंगन में नहीं लगाना चाहिए। केला गंधर्व का पेड़ है तो लाल कनेर सूर्यदेव का। इसलिए ऐसे वृक्ष आंगन में नहीं होने चाहिए। पीपल एवं चंदन का पेड़ आंगन में लगा सकते हैं परंतु प्रवेश द्वार के सामने नहीं। तुलसी का पौधा अवश्य लगाना चाहिए। घर के पश्चिम में पीपल पूर्व में बरगद, दक्षिण में गूलर और उत्तर में कैथ का पेड़ लगाने का संकेत वास्तुशास्त्र में मिलता है। आंगन में धनिया लगाने से गृहस्वामी को स्थान परिवर्तन करना पड़ता है। यदि वह नौकरी पेशा हो, तो उसका तबादला हो जाता है।

17. स्थिति वेध :

कई बार ऐसा देखने को मिलता है कि किसी भी गली या सड़क आगे जाकर बंद हो जाती है और उस स्थान पर कई भूखंड होते है। अतः जो इस प्रकार के भूखंड होते है उनमें मार्ग के अंत वाला भूखंड बंद या कैदी भूखंड कहलाता है। यह भूखंड रिहायशी अर्थात अवासीय दृष्टिकोण से शुभ एवं उपयोगी नहीं होता अतः इस तरह के भूखंड को त्याग देना चाहिए।

18. स्थान वेध :

किसी मकान के सामने लोहार की भट्टी धोबी का घर आटा पिसने की चक्की या निःसंतान का मकान हो तो स्थान वेध कहलाता है। साथ ही घर के पास शमशान, कब्रगाह हो तो उसे स्थान वेध कहा जाता है। इस तरह के स्थान पर निवास स्थान नही बनानी चाहिए।

19. दृष्टि वेध :

मकान में प्रवेश करते ही मकान सुना–सुना या डर जैसी स्थिति महसूस हो तो ऐसे मकानों का दृष्टि वेधयुक्त मकान कहा जाता है। ऐसे भवन में रहने वाले लोग की आर्थिक एवं मानसिक स्थिति अच्छी नहीं

रहती है।

मंदिर के पास मकान का फल :

किसी मंदिर के समीपस्थ मकान के लोग बार–बार मंदिर में स्थित देवताओं के दोष में आते हैं जिसे देवालय वेध कहा जाता है। शिवपुराण के अनुसार मंदिर के आसपास 100 फूट के विस्तार में मकान नहीं होना चाहिए यदि ऐसा हो तो उसमें रहनेवालों को ध्वजदोष के कारण पीड़ा होती है। वास्तव में देखा जाए तो मकान मंदिर के समीप होने पर उस मकान के लोग बार–बार मंदिर में स्थित देवताओं के दोष में आते है। शास्त्रों में वर्णन है कि मंदिर के परिसर के 100 फीट तक मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए ऐसा करने पर देव–दोष से पीडित होते है। किसी शिवमंदिर के पास रहना अशुभ होता है। रुद्र के साथ उनके गण, भूत–प्रेत भी मंदिर में वास करते हैं। वे मंदिर के पास रहनेवालों को कई प्रकार की पीड़ाएं पहुंचाते हैं। रुद्रदेव के उग्र होने से शिवालय के पास रहनेवालों का स्वभाव भी उग्र होता है। परिवार में भाई–भाई और पिता–पुत्र में कलह होता रहता है। अगर मंदिर, मठ, घर के भगवान उग्र स्वरूप के हो तो परिवार को अधिक कष्ट भोगने पड़ते हैं। हनुमान जी मंदिर के पास रहने वालों को शोक दुखः एवं दरिदता का शिकार होना पड़ता है। कालिका, चामुंडा जैसी देवियों तथा रुद्र जैसे भगवान का स्वरूप उग्र होता है इसलिए घर के भीतर मंदिर नहीं बनवाएं। लक्ष्मी और पार्वती जैसी देवियां और विष्णु, बालाजी जैसे भगवान सात्विक एवं शांत होते हैं। विष्णु, कृष्ण, राम–सीता जैसे शांत देवी–देवता के मंदिर अनुकूल होते हैं। शयन कक्ष में देवी देवताओं के फोटो या प्रतिमा नही रखनी चाहिए। अतः पूजा कक्ष को शयन कक्ष से अलग रखना चाहिए। घर में पूजा स्थल पर देवी देवता की प्राण प्रतिष्ठा कभी नहीं करनी चाहिए। इस स्थान का उपयोग मात्र पूजा–पाठ तथा चित्रादि रखने के लिए ही करना चाहिए।

16. कार्यालय (Office)

किसी भी कार्यालय को विकसित करने के पूर्व भूखंड का चयन आवश्यक है। कार्यालय के लिए आयताकार या वर्गाकार भूखंड का चयन सर्वश्रेष्ठ होता है। ईशान वृद्धि भूखंड पर भी कार्यालय का निर्माण लाभप्रद होता है। भूखंड के दक्षिण और पश्चिम में बड़ी–बड़ी ईमारतें, पेड़–पौधा तथा उत्तर और पूर्व में खुला मैदान, दरिया, तालाब या कृत्रिम पानी का स्थान, कार्यालय के समृद्धि में चार चांद लगाता है। अर्थात् धन–धान्य, दौलत, संपत्ति में बढ़ोत्तरी कर सुख और ऐश्वर्य की वृद्धि करती है। कार्यालय के उतर, उतर–पूर्व एवं पूर्व दिशा में अधिक से अधिक तथा दक्षिण और पश्चिम दिशा में कम से कम खुली जगहें रखना लाभप्रद होता है।

कार्यालय के प्रवेश द्वार उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व दिशा की ओर से रखनी चाहिए। प्रवेश द्वार पर किसी प्रकार की रूकावटें एवं वेध न रहे। दरवाजे के खुलने या बंद होने के समय किसी तरह की कर्कश आवाज उत्पन्न नहीं होनी चाहिए, इससे अशुभ ऊर्जा उत्पन्न होती है तथा शक्ति क्षीण होती है।

मुख्य अधिकारी, प्रबंध निदेशक या स्वामी को भवन के दक्षिण–पश्चिम में बैठकर कार्य करने के लिए जगह निर्धारित करनी चाहिए। कार्यालय के स्वामी का कक्ष सबसे बड़ा अर्थात् अन्य कमरों से बड़ा होना चाहिए। कार्यालय स्वामी या मुख्य व्यक्ति को बैठने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान कक्ष एवं कमरे के दक्षिण–पश्चिम की दिशा में होता है। इस स्थान पर बैठकर कार्य करने से उचित निर्णय लेने की क्षमताओं एवं शक्तियों में वृद्धि होती है। दिमागी कार्य द्वारा लोगों की सेवा करने वाले व्यक्ति जैसे–डॉक्टर, वकील, ज्योतिषी, प्रोफेसर एवं अधिकारीगण को वास्तुशास्त्र के निर्देशों के अनुसार हमेशा कक्ष के दक्षिण–पश्चिम दिशा में पूर्वाभिमुख होकर बैठना चाहिए तथा वस्तु का क्रय–विक्रय करने वाले व्यापारीगण को अधिक संपन्नता के लिए उत्तराभिमुख होकर बैठना चाहिए।

मुख्य व्यक्ति या पदाधिकारी को बीम, शहतीर या सिल्ली के नीचे बैठकर कार्य नहीं करना चाहिए। इसके नीचे बैठकर कार्य करने पर कार्यों में गतिरोध आती है तथा व्यक्ति तनावग्रस्त रहता है। शहतीर अथवा बीम छतों का भार अपने ऊपर उठाये रहता है, अतः इनके ऊपर असाधारण भार रखा होता है। वजन नीचे की दिशा में गुरूत्वाकर्षण के नियम के अनुसार कार्य करता है। फलस्वरूप असाधारण गुरूत्वाकर्षण बल शहतीर या बीम के नीचे बैठकर कार्य करने वाले व्यक्तियों पर भी पड़ता है। इसके कारण काफी असहज सा महसूस होता है। फलस्वरूप कार्य ठीक से नही पाता एवं असफल होने की संभावना बनी रहती है।

मुख्य व्यक्ति या पदाधिकारी के बैठने के स्थान के पीछे ठोस दीवार का होना आवश्यक है। पीठ पीछे दरवाजा, खिडकी या कॉच होने के कारण व्यक्ति अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हुए भयभीत रहता है तथा सहयोगियों से धोखा पाता है। कार्यालय में मुख्य व्यक्ति का मेज अन्य दूसरों लोगों की मेज से बड़ा होना चाहिए। चौकोर मेज के सामने इस तरह बैठना चाहिए कि उसका बीच का हिस्सा

कार्यालय प्रमुख की तरफ रहे। भूलकर मेज की कोने वाले भाग की ओर न बैठे। त्रिकोणात्मक कोने के सामने बैठने से अशुभ ऊर्जा के कारण कार्य के प्रति उदासीनता, थकान एवं तनावग्रस्त हो जाते हैं। दरवाजे के ठीक सामने बैठना शुभ नही होता। दरवाजे से थोड़ी सी कोणीय आकार लेते हुए मेज–कुर्सी लगावें।

N

बिक्री एवं विपणन विभाग	लेखा विभाग	स्वागत कक्ष
अधिकारी कक्ष	सभाकक्ष	प्रशासकीय विभाग
मुख्य अधिकारी या स्वामी कक्ष	अधिकारी कक्ष	शोध, विकास और रचनात्मक विभाग

W (left) — E (right)

S
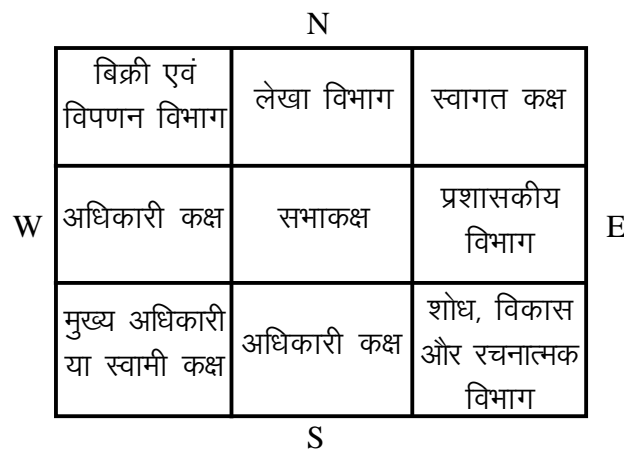
मुख्य व्यक्ति के कमरे में टेलीफोन और फैक्स उपकरण दक्षिण–पूर्व या उतर–पश्चिम भाग में रखना चाहिए। जल से संबंधित वस्तुएं जैसे पानी का ग्लास, चाय का कप आदि टेलीफोन या फैक्स के पास न रखें। कम्प्यूटर को मेज पर हमेशा दायीं ओर रखें। टेबल के उपर पूर्व दिशा में ताजे फूल का गुलदस्ता रखें। दक्षिण–पूर्व में छोटा सा हरा भरा और स्वस्थ पौधा रखें इससे व्यक्तित्व का विकास होता है और उन्नति के नए मार्ग खुलते है। दक्षिण–पश्चिम दिशा में क्रिस्टल बॉल या रत्नों का पेड रखना चाहिए। इससे कर्मचारियों के साथ मधुर संबंध बने रहते हैं।

लेखा विभाग कार्यालय के उत्तर दिशा में होना चाहिए। वित्तीय कार्यालयों के लिए खासतौर पर उतर का दिशा लाभप्रद होता है। इससे कार्यालय की संपन्नता बनी रहती है। मुख्य खजांची या अंकेक्षक को उतर दिशा की ओर मुंह कर बैठना चाहिए। यदि खजांची का मुँह पूर्व की तरफ हो तो कैश काउंटर उसके दाहिनी ओर रखनी चाहिए तथा खजांची का मुँह उतर की तरफ हो तो कैश काउंटर उसके बाएं तरफ रखनी चाहिए।

प्रशासन विभाग जिस स्थान से पुरे कार्यालय की प्रशासकीय गतिविधियां संचालित होती है उसे पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए। विपणन और विक्री विभाग को भूखंड के वायव्य कोण में रखना चाहिए। शोध विकास और रचनात्मक दीवार दक्षिण–पूर्व में रखना चाहिए।

कार्यालय के दक्षिण पूर्व हिस्सा में कैंटीन, रसोईयान, ट्रॉंसफरमर, जेनरेटर, इनर्भटर आदि रखें। इलेक्ट्रानिक एवं बिजली संयंत्रो को भी दक्षिण पूर्व हिस्सा में रखना चाहिए। इससे कर्मचारियों की ऊर्जा, स्फूर्ति एवं उत्साह बनी रहती है।

कार्यालय के ब्रह्म स्थान में कोई भी पार्टीशन, कील और भारी वस्तु न रखें। ब्रह्म स्थान को हमेशा खाली और साफ–सुथरा रखें। कार्यालय या दफ्तर के ईशान्य कोण को हमेशा स्वच्छ तथा साफ–सुथरा रखें। इस स्थान को गंदगी एवं कचड़े से मुक्त रखें। इस कोण में चूँकी परमपिता परमेश्वर ईश्वर एवं ग्रहों में गुरू जो अध्यात्मिक चेतना का कारक ग्रह है का वास होता है। अतः कोण को जागृत रखने के लिए अपने ईष्ट देव की मूर्ति या तस्वीर लगायें और प्रतिदिन वहां धूप, दीप दिखायें। कार्यालय के उतर–पूर्व में जलचर प्राणी संग्रह या छोटा सा पानी फब्वारा लगायें। कार्यालय के बाहर देखते समय मुख्य द्वार के बायीं ओर रखा पानी फब्वारा कार्यालय के समृद्धि को बढ़ाता है। ये कार्यालय में उल्लासपूर्ण वातावरण बनाने में मदद करते है।

कार्यालय में ऐसे चित्र लगाने चाहिए जिनमें प्राकृतिक दृश्य, कलात्मक भवन या शांति के प्रतीक चित्र हो। इसे उतर या पूर्व की दीवारों पर लगाया जा सकता है। झरने या कछुऐं का चित्र उतरी दीवार पर लगाने से आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होती है। कार्यालय में कमल के फूल, उद्यान, झील में तैरते पछी, हंस, बतख या सारस के चित्रों का प्रभाव बहुत ही शुभ होता है। गाती या नाचती हुई सुंदर, भाव मग्न औरतों की चित्रों की मूर्ति का प्रभाव भी शुभ होता है। पालतु पक्षियों, तोता, मोर आदि का चित्र भी वास्तु के दृष्टिकोण से लाभपद्र है। श्री कृष्ण के गीता उपदेश का चित्र भी लगाया जा सकता है। साथ ही स्वास्तिक और ऊँ का चिन्ह कार्यालय के अंदर लगाना काफी शुभफलप्रद होता है। शक्ति और स्थायित्व के लिए दक्षिण–पश्चिम की दीवार पर जल रहित ऊँचे पर्वतों जैसे– एवरेस्ट अथवा कैलाश पर्वत के चित्र या पोस्टर लगाना चाहिए।

रामायण या महाभारत के युद्ध दृश्यों का चित्र, तलवारबाजी का चित्र, इन्द्रजाल, जादू, दैत्य, भूत–प्रेतों की मूर्तियां, रोते या कराहते हुए व्यक्तियों के चित्र को कार्यालय के अंदर नही लगाना चाहिए। इस तरह का चित्र मानसिक परेशानियां एवं तनाव देते हैं।

कार्यालय को पार्किंग या गैरेज के उपर न रखें। गाड़ी के अत्यधिक आवागमन से कार्य करने वाले कर्मचारियों के ऊपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कार्यालय में प्रकाश की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। कमरे में पर्याप्त प्रकाश का न होना बेचैन एवं असहज बनाता है। जब आप दायें हाथ से लिख रहें हों तो बाएं कंधे की ओर से प्रकाश आना चाहिए तथा बाएं हाथ से लिखते हों तो दाएं तरफ के कंधे से प्रकाश आनी चाहिए। कार्यालय के कैश बौक्स या लॉकर को कभी खाली न रखें।

रंगो का वास्तु में बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। कार्यालय में काले और गहरे रंगों के प्रयोग से बचना चाहिए अन्यथा उत्तेजना और तामसिक विचारो के उत्पन्न होने का भय बना रहता है। जहां तक संभव हो हल्के रंगो का प्रयोग करें। हल्का आसमानी, पीला, गुलाबी, नीला रंग का प्रयोग लाभप्रद होता है।

17. दुकान (Shop)

व्यवसायिक कार्य करने के लिए आयताकार या वर्गाकार भूखंड सर्वश्रेष्ठ होता है। आयताकार भूखंड को 1:2 अनुपात से अधिक नही रखना चाहिए। भूखंड के दक्षिण–पश्चिम भाग की सतह ऊँचा होना चाहिए। दक्षिण पश्चिम में निर्माण कार्य अधिक से अधिक करना चाहिए। उत्तर–पूर्व भाग की सतह नीचा और अधिक से अधिक खुला रखना चाहिए। क्योंकि इनके खुला रखने तथा उत्तर–पूर्व की ओर ढलान होने से लक्ष्मी की स्वतः वृद्धि होती है। ईश्वर, गंगा और लक्ष्मी उत्तर–पूर्व में निवास करते हैं। अतः यह स्थल नीचा खुला पानी भरा हो तो कार्य करने वाले लोग धनाढ्य तथा बडे से बड़े सुख भोगते हैं। थोडी सी मेहनत करने पर ज्यादा से ज्यादा सफलता मिलती है और भाग्य को जगा कर सौभाग्यशाली बना देता है। व्यवसायी लोग अपने व्यवसाय, कारखाने या उद्योगों के उत्तर–पूर्व में पानी का अंडरग्राउंड टैंक, तालाब, स्वीमिंग पुल बनाकर अपने डूबते व्यवसाय को चार चॉद लगा सकते है। ऐसा करने पर कर्ज, मुकदमे आदि की समस्या का शीघ्र ही समाधान हो जाता है। तालाब या पानी की व्यवस्था भूखंड के ईशान्य क्षेत्र में हो या भूखंड में लक्ष्मी या कुबेर के स्थान पर हो तो धन की कोई कमी नही रहती। व्यवसायिक स्थल के आसपास दरिद्रता स्वप्न में भी नजर नही आते तथा सोया भाग्य जाता हैं। प्रत्येक कदम पर लोकप्रियता मिलने लगती है।

उत्तर–पश्चिम से लेकर उत्तर–पूर्व तक किसी तरह का निर्माण भूलकर भी नही करना चाहिए। अन्यथा धन–दौलत, काम–काज, दुकान, फैक्ट्री सभी बंद हो जाते हैं। सभी जगह बंधन लग जाता है। साझेदार, मित्र और रिस्तेदारों से संबंध खराब हो जाता है। मुकदमे आदि की वृद्धि हो जाती है। इसे ठीक करने के लिए उत्तर–पश्चिम से उत्तर–पूर्व में अधिक से अधिक खाली जगह, पानी एवं आने जाने का रास्ता रखना है। इससे महादरिद्रता एवं महापातकी में सुधार होता है। व्यवसायिक स्थल के दक्षिण–पश्चिम की सतहें या चारदीवारी ऊँचा रखने से धन एवं आवक अच्छी रहती है। व्यवसायिक स्थल का वातावरण शांत रहता है उस स्थान पर बैठकर कार्य करने से मनुष्य को राजा जैसा सुख की प्राप्ति होती है। दुकान का मालिक कार्यो तथा कर्मचारियों पर अपना पूर्ण नियंत्रण बनाये रखता है। कर्मचारी पूछे बिना कोई कार्य नही करते। सारे शक्तिशाली ग्रह साथ देते हैं।

मालिक या व्यवस्थापक को भूखंड के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र अर्थात नैऋत्य दिशा की ओर बैठना चाहिए। इससे कार्यों पर नियंत्रण बना रहता है। यदि दुकान में एक या दो कर्मचारी कार्यरत हों तो ऐसे स्थिति में भूखंड के पूर्व या उत्तर दिशा में भी बैठने का स्थान निर्धारित की जा सकती है। मालिक या व्यवस्थापक की कूर्सी इस प्रकार व्यवस्थित होना चाहिए कि बैठने पर चेहरा उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ रहे। पूर्व मार्गों पर स्थित भूखंड के दुकान में मालिक या व्यवस्थापक को दक्षिण दिशा की ओर उत्तर की तरफ चेहरा कर बैठना चाहिए। पश्चिम मार्गों पर स्थित भूखंड में मालिक या व्यवस्थापक को दक्षिण की ओर चेहरा कर बैठ सकते हैं। इसी तरह दक्षिण मार्गों पर स्थित भूखंड में दक्षिण–पश्चिम में पूर्व की ओर चेहरा कर बैठ सकते हैं। जिस दुकान में काफी कर्मचारी काम करते हों उन्हें वायव्य या ईशान क्षेत्र में बैठकर

नहीं कार्य करना चाहिए। साथ ही उन्हें कभी भी दक्षिण या नैऋत्य की ओर चेहरा कर नहीं बैठना चाहिए। अर्थात् उन्हें हमेशा दक्षिण–पश्चिम में उत्तर या पूर्व की ओर चेहरा कर कार्य करना चाहिए। दुकान बड़ी है और मालिक या व्यवस्थापक का कमरा अलग है तो उस कमरे का फर्श को अन्य स्थानों की तुलना में ऊँचा होना चाहिए। मुख्य मालिक या प्रबंधक के उपयोग करने वाली कुर्सी के पीछे ठोस दीवार का होना अनिवार्य है। बैठने के पीछे किसी भी तरह का खिडकी, या झरोखा भी नही रखना चाहिए। अन्यथा निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होगी। साथ ही बैठनेवाली कुर्सी की पीठ कभी भी इतनी ऊँची न रखें कि वह सिर से बहुत ऊँची चली जाए। मालिक, व्यवस्थापक या खजांची को लटकता हुआ बीम के नीचे बैठकर कार्य नही करना चाहिए। अन्यथा व्यक्ति के मानसिक तनाव से ग्रस्त तथा उसकी कार्यक्षमता के प्रभावित होने का भय बराबर बना रहता हैं।

उत्तर

पश्चिम				पूर्व
	बिक्री योग्य समान, एयर कंडिशनर, दुध, दही, शराब एवं चांदी	कैश काउंटर, प्रवेश द्वार, फूल का कार्य, जेनरल स्टोर, ज्वेलरी एवं कपड़े का कार्य	बैंकिंग कार्य, वस्त्र एवं धार्मिक पुस्तक प्रकाशन का कार्य	
पश्चिम	शोकेश, आलमारी, चमड़ा, कोयला एवं लोहे का समान		प्रवेश द्वार, दवा, ऊनी वस्त्र, औषधि, एवं अनाज	पूर्व
	भारी समान , चमड़े, बेत, मधु एवं बिजली से संबंधित कार्य के लिए उपर्युक्त स्थान	भारी समान,रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर, बार, कैसिनों, क्लब एवं डिस्को	रेस्तरां, बेकरी, स्वर्ण एवं लोहे से संबंधित व्यवसाय के लिए उपर्युक्त स्थान	

दक्षिण

मालिक या व्यवस्थापक को अपनी जगह से सारी दुकान का प्रत्येक कोना नजर आना चाहिए। प्रवेश द्वार भी दिखाई देनी चाहिए। खंभो और स्तंभो में तीक्ष्ण कोन नही रखनी चाहिए। यदि हो तो इसे ढ़ंक कर रखें। बिजली और टेलीफोन के तार ढ़ंके होने चाहिए। प्रकाश सामान रूप से सारे दुकान में फैला हुआ होना चाहिए। दुकान का फर्श एवं सतहें सड़क से ऊँचा या बराबर रखें। परंतु इसे सड़क से नीचा कभी न रखें। दुकान को तहखाना या खड्डे में नही होना चाहिए।

दुकान या व्यवसायिक स्थल का प्रवेश द्वार साफ–सुथरा, आकर्षक एवं पर्याप्त प्रकाशमय रहनी चाहिए। दुकान के पूर्व या उतर में सड़क का होना तथा प्रवेश उतर या पूर्व से रहे तो काफी समृद्धि मिलती है। कारोबार का आवक काफी अच्छा रहता है। 10 से 20 वर्ष वाले के लिए दुकान का प्रवेश आग्नेय या वायव्य की ओर से रहना लाभप्रद रहता है। परंतु व्यवसाय में धीरे–धीरे गिरावटें आने लगती है। इस तरह की घटना वास्तु निरीक्षण के दौरान 75 प्रतिशत देखने को मिलती है। परंतु 25 प्रतिशत अपवाद भी मिलता है। किसी भी दुकान का दरवाजा हमेशा अंदर की ओर खुलना चाहिए। ऐसा होने से लक्ष्मी एवं संपन्नता दुकान में प्रवेश करती है साथ ही दुकान का प्रवेश द्वार संकरा न होकर चौड़ा होना चाहिए
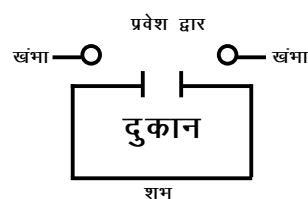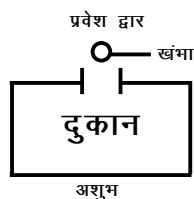
इससे दुकान की संपन्नता एवं आवक बढ़ती है। प्रवेश द्वार के ठीक सामने वेद्य करते हुए किसी भी तरह का खंभा या विज्ञापन बोर्ड आदि नही लगानी चाहिए। इसे प्रवेश द्वार के दोनों ओर लगाना चाहिए।

दुकान में काउंटर दक्षिण–पश्चिम, दक्षिण, दक्षिण–पूर्व, पश्चिम या उतर–पश्चिम में रखना श्रेष्ठ होता है। काउंटर के फर्नीचर में लकडी का इस्तेमाल अधिक से अधिक करना चाहिए। दुकान की छत एकतरफा खासकर दक्षिण और पश्चिम की ओर झुकी हुई ठीक नही होती। छत का अत्यधिक झुकाव दुकान की लक्ष्मी को बाहर धकेल देता है।

दुकान के छत का ढलान उतर, पूर्व या ईशान्य दिशा में होना चाहिए। बरसात के पानी का निष्कासन भी ईशान्य एवं पूर्व दिशा से रखना चाहिए। मुख्य द्वार पर गंदे पानी का नाला या कीचड़ न रखें। खासकर दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में गंदे पानी का जमाव नही होना चाहिए। अन्यथा यह दुकान की संपन्नता को रोककर मालिक को कर्जदार बना देता है।

किसी भी दुकान या व्यवसायिक परिसर के आस–पास अति व्यस्त ट्रैफिक व्यवसाय के समृद्धि के लिए नुकसानदायक होता है। वहॉं लाभ की गति मंद पड़ जाती है। जिस स्थान पर ट्रैफिक कम तथा अच्छी पार्किंग की व्यवस्था होती है, उस जगह पर व्यवसायिक सफलता काफी अच्छी होती है।

कैश काउंटर या कैश बॉक्सः–

साधारणतः छोटी दुकान में कैश बॉक्स या कैश काउंटर व्यवस्थापक या मालिक के बिल्कूल पास होता है। जबकि बड़ी दुकान या व्यवसायिक स्थल में इसके लिए अलग से काउंटर बनाया जाता है। कैश काउंटर का आकार वर्गाकार या आयताकार होना अच्छा होता है। कैश काउंटर की व्यवस्था व्यवसायिक स्थल के मूल रूप से उतर दिशा से ईशान्य तक कहीं भी बनाया जा सकता है। मध्य उतर धन के देवता कुबेर का स्थान है अतः यह स्थान कैश काउंटर के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है।

उतरमुखी दुकान हो तो कैश काउंटर ईशान्य या मध्य पूर्व में बनाना चाहिए। कैश काउंटर पर खजांची का चेहरा हमेशा उतर या ईशान्य की तरफ होना सर्वश्रेष्ठ होता है। पूर्व मुखी दुकन में कैश काउंटर ईशान्य या मध्य उतर में होना शुभ होता है। दक्षिण मुखी दुकान में कैश काउंटर को मध्य पूर्व में होना शुभ होता है। लेकिन काउंटर इस तरह से बना होना चाहिए कि उपयोगकर्ता का चेहरा पूर्व या उतर की तरफ रहे। पश्चिम मुखी दुकान में कैश काउंटर को दक्षिण में होना चाहिए और खजांची का चेहरा उतर की तरफ रखना चाहिएं। कैश बॉक्स खजांची या उपयोगकर्ता के दाहिने तरफ रखना सर्वश्रेष्ठ फलदायक होता है। परंतु उतर मुंह होने पर इस बायीं तरफ भी रखा जा सकता है। दुकान में खजांची के प्रवेश करने पर काउंटर को दाहिने ओर होना शुभ फलदायक माना जाता है। कैश काउंटर को दुसरे अन्य काउंटर के अपेक्षा कुछ ऊँचा रखना चाहिए। यदि ऐसा संभव न हो तो अन्य काउंटर के समकक्ष भी रखी जा सकती है। परंतु नीचा रखना अच्छा रखना शुभ फलदायक नही होता। कैश बॉक्स को खोलते या बंद करते समय किसी तरह का करकस या तेज आवाज नही होना चाहिए।

व्यवसायिक स्थल में रूदन करते हुए व्यक्ति बंद आंखो के प्राणियों के समुह, दुःखी व्यक्ति, सूअर, बाघ, सियार, सांप, उल्लू, खरगोश, बगुला, भयानक आकृतियों वाले और दीनता दर्शाने वाले चित्र कदापि नही लगाने चाहिए। संस्थान से जुड़े कार्यो के चित्र शुभ होते हैं। व्यक्ति को चाहिए कि वह जो व्यापार करता हो वही व्यापार करने वाले विश्व प्रसिद्ध व्यक्तियों, व्यवसाय के संस्थापक या प्रेरणा श्रोत का चित्र अपने कुर्सी के पीछे दीवार पर या संस्थान में उपर्युक्त स्थान पर लगाए।

18. औद्योगिक वास्तु
Industrial Vastu

`कारखाने या उद्योग का निर्माण वास्तु के अनुसार रखने पर, लंबे समय तक लाभदायक फल देता है। जिसके फलस्वरूप समय–समय पर आनेवाली कठिनाईयों का शीघ्रताशीघ्र सामाधान हो जाता है। इसके विपरीत जिस कारखाने या उद्योग का निर्माण वास्तु के नियमों का विरूद्ध होता है उसमें नित्य नयी–नयी परेशानियों का सामना होते देखा गया है। अतः किसी भी औद्योगिक परिसर या कल कारखाने के समुचित विकास एवं विस्तार के लिए निर्माण वास्तु के नियमों के अनुसार करना चाहिए।

किसी भी फैक्ट्री या कल कारखाने के लिए सदैव जीवित भूमि का क्रय करना चाहिए। ऐसी भूमि जिस पर उगे वृक्ष आदि हरे भरे रहते हों तथा अन्न (अनाज) आदि की उपज भी उत्तम हो उसे जीवित भूखंड समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य भूमि अर्थात् अनउपजाऊ एवं बंजर भूमि को मृत भूखंड मानना चाहिए तथा जिस भूमि में दीमक, हड्डी हो अथवा जो भूमि फटी हुई हो उसे कभी भी कल कारखाने के निर्माण हेतु प्रयोग नहीं करना चाहिए। अतः जिस मिटी में अच्छी पैदावार हो पानी की उचित उपलब्धता हो, मिट्टी ठोस हो, वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं के परीक्षण में वह मिट्टी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हो तथा

N

तैयार वस्तु , पार्किंग, गार्ड रूम, कर्मचारियों का आवास स्थल, शौचालय	मुख्य प्रवेश द्वार , लॉन, फब्बारा	मुख्य प्रवेश द्वार, पार्किंग, लॉन, फब्बारा
भारी मशीन, कच्चे माल का संग्रह		प्रशासकीय कक्ष
भारी मशीन, कच्चे वस्तु, व्यवस्थापक या मालिक का कमरा	भारी मशीन,	ट्रॉसफार्मर, बॉयलर, जनरेटर, भट्ठी, गार्ड कक्ष

W (left) — E (right)

S

जिस भूखंड पर कल कारखाने की स्थायित्व हो सके वर्तमान समय में ऐसी भूमि का चयन करना लाभप्रद एवं शुभफलदायी होगा। भूखंड में किसी प्रकार शल्य दोष नहीं होना चाहिए तथा भूखंड के आस–पास शमशान या कब्रिस्तान नहीं होना चाहिए।

कारखाने या उद्योग का भूखंड वर्गाकार या आयताकार होना चाहिए। आयताकर होने पर इसे 1:2 अनुपात में रखना चाहिए। भूखंड के प्रत्येक कोना 90^0 का होना चाहिए। कोई भी कोना का बढ़ा हुआ होना अशुभ होता है। केवल ईशान कोण का बढ़ा हुआ होने से शुभ परिणाम मिलते हैं। औद्योगिक भूखंड के दक्षिण और पश्चिम तरफ की चारदीवारी 90^0 के कंक्रीट एवं पत्थर के बने होने चाहिए। उत्तर एवं पूर्व के ओर की चारदीवारी कंटीले तार से भी बनाई जा सकती है। इसका मुख्य कारण उत्तर एवं पूर्व क्षेत्र को हल्का एवं खुला हुआ रखना है। क्योंकि ईशान क्षेत्र को अवरूद्ध या बंद रखने से कल कारखाने की प्रगति एवं समृद्धि रूक जाती है। आर्थिक स्थिति भी खराब हो जाती है। भूखंड के मध्य स्थान अर्थात् ब्रह्म स्थान को खुला रखना चाहिए। इस स्थान पर किसी भी तरह का निर्माण कार्य करना वास्तु के दृष्टिकोण से निषेध है। इसी तरह वायव्य कोण में भी किसी प्रकार का निर्माण कार्य कर इसे बंद नहीं करना चाहिए। इस क्षेत्र को बंद करने से विकास की गति रूक जाती है।

फैक्ट्री में प्रवेश करने के लिए मुख्य द्वार पूर्व, ईशान, उत्तर में रखना श्रेष्ठ होता है। इसके अलावा पश्चिमी

NW	N	NE
निर्मित वस्तुएॅ		
W		E
SW	S	SE
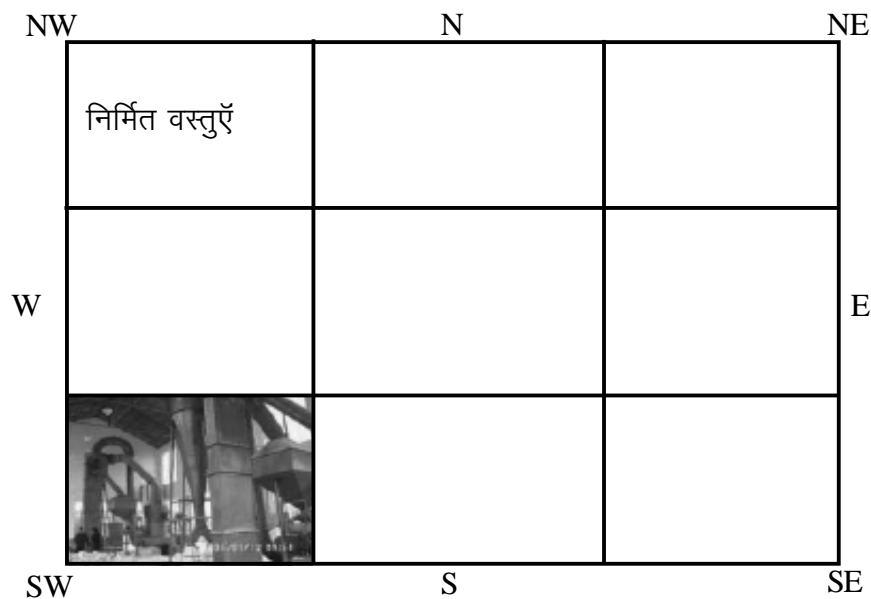
वायव्य, पश्चिम, दक्षिणी आग्नेय एवं दक्षिण दिशा से भी रखा जा सकता है।

फैक्ट्री की जमीन का ढ़ाल हमेशा उत्तर या पूर्व की ओर रखें। इसीतरह औद्योगिक इकाईयों की मुख्य फैक्ट्री के भवन जहां उत्पादन होता है के छत का झुकाव भी उत्तर और पूर्व में रखना श्रेष्ठ होता है। खासकर बड़े उपक्रम में मुख्य फैक्ट्री के ऊपर टीन का शेड लगा हुआ होता है और उनकी झुकाव (ढाल)

दोनों तरफ होती है। यदि छत का ढाल केवल पश्चिम की तरफ हो तो ऐसी इकाईयां निरंतर लाभ में नहीं रहती है अर्थात घाटा में रहती है। अतः इसके दोष निवारण के लिए उसके टीन के शेड का झुकाव दो तरफा बना लेना चाहिए या परिवर्तन के उपरांत ढलान पूर्व या उत्तर में रहे तो दोष का निवारण हो जाता है।

औद्योगिक परिसर के उत्तर, पूर्व, या उत्तर–पूर्व में कुंआ, हैंडपंप, भूमिगत जल व्यवस्था, फब्वारा, आदि रखना काफी शुभफलप्रद होता है। इसके फलस्वरूप लक्ष्मी एवं कुबेर की कृपा निरंतर बनी रहती है तथा कल कारखानों के बढ़ोतरी एवं आमदनी के साधन अनायास बनना साधारण सी बात है। दरिद्रता स्वप्न में भी नजर नहीं आती। छत पर पानी का टैंक पश्चिम, दक्षिण–पश्चिम या वायव्य कोण में रखना चाहिए।

फैक्ट्री या उद्योग में काम करने वाले कर्मचारी एवं मजदूरों के लिए कमरा हमेशा वायव्य क्षेत्र में बनानी चाहिए। कर्मचारियों का यह निवास स्थान पूर्व या उत्तर की दीवार से जुड़े हुए नहीं होना चाहिए तथा कमरे की ऊंचाई मुख्य भवन की ऊंचाई से कम रखनी चाहिए। अन्यथा कर्मचारी, मजदूर या ऑफिसर्स मालिक का बात नहीं मानेंगे। गार्ड या वॉच मैन के लिए कमरा दक्षिण–पूर्व या उत्तर–पश्चिम की तरफ उत्तर एवं पूर्व दीवारों से कम से कम 3 फीट अलग हटकर बनाये।

किसी भी औद्योगिक परिसर में सेप्टिक टैंक भूखंड के ईशान्य क्षेत्र , नैऋत्य क्षेत्र, आग्नेय क्षेत्र और मध्य स्थान की ओर नहीं बनाएं। औद्योगिक परिसर के मध्य, ईशान्य और नैऋत्य में सेप्टिक टैंक पूर्णतः वर्जित है। यह पूरी व्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर डालता है। प्रगति अवरूद्ध हो जाती है। औद्योगिक परिसर में सेप्टिक टैंक वायव्य क्षेत्र में बनाना लाभप्रद होता है। शौचालय भूखंड या भवन के उत्तरी वायव्य एवं पश्चिमी वायव्य की तरफ बनाना चाहिए। दूसरी प्राथमिकता नैर्ऋत्य एवं दक्षिण के मध्य का क्षेत्र है। इस स्थान पर भी शौचालय बनाया जा सकता है।

औद्योगिक परिसर में स्नानागार के लिए सबसे उपयुक्त स्थान पूर्व दिशा है। स्नानागार को सीढ़ीयों के नीचे नही बनाना चाहिए। सीढीयॉ बुध ग्रह के अंतर्गत आता है जबकि स्नानागार में जल के अधिक उपयोग होने के कारण चंद्रमा के अधिपत्य में आता है।बुध ग्रह से चंद्र ग्रह की शत्रुवत संबंध होने के कारण सीढ़ी के नीचे भूलकर भी स्नानागार नही बनाना चाहिए। स्नानागार के जमीन का ढाल उतर–पूर्व में रखें। फर्श से निकलने वाला पानी हर हालत में उत्तर–पूर्व, पूर्व या उत्तर से बहते हुए निकलना चाहिए। नल, झरना आदि उत्तर या पूर्व में रखें।

किसी भी औद्योगिक परिसर के पश्चिम दक्षिण दिशा में तहखाना एवं तालाब भूलकर नहीं बनाना चाहिए। अन्यथा फैक्ट्री विनाश की ओर चली जाती है। भाग्य में कमी तथा आपदाओं का सामना करते देखा गया है। साथ ही क्लेश, कर्ज, महापातकी एवं गरीबी पीछा नहीं छोडता। भाग्य सो जाता है तथा रोजी–रोटी के लिए मोहताज होने लगते है।अतः दक्षिण–पश्चिम में भूलकर भी तहखाने, तालाब , गंदे पानी का जमाव या किसी भी प्रकार गढ्ढे न रखें। अन्यथा सारा परिश्रम एवं धन संग्रह खत्म हो जाएगा।

किसी भी फैक्ट्री के मुख्य द्वार के बाहर कचरा, गंदे पानी का कीचड़ या नाला नही होने चाहिए। यह उद्योग के संपन्नता को रोककर उद्योगपति को कर्जदार बना देता है।

फैक्ट्री के स्वामी या निर्देशक को नैऋत्य क्षेत्र जो पृथ्वी तत्व का क्षेत्र है में उतर या पूर्व की ओर चेहरा कर बैठना लाभप्रद होता है। इससे पूरे फैक्ट्री पर उनकी स्वामीत्व एवं नियंत्रण बनी रहती है।

नैऋत्य क्षेत्र में भारी एवं अनुपयोगी वस्तुओं का भंडारण करना उत्तम होता है। निर्मित वस्तुओं का भंडारण वायव्य क्षेत्र में करना चाहिए। तैयार उत्पाद को वायव्य क्षेत्र में रखने से शीघ्रता शीघ्र बिक्री हो जाती है। तैयार उत्पाद की निकासी उतर या पूर्व की द्वार से करना चाहिए।

फैक्ट्री के मुख्य परिसर में कच्चे माल का प्रवेश अग्नि कोण से और तैयार उत्पाद की निकासी उतर या ईशान्य की तरफ से रखना श्रेष्ठ होता है। अतः फैक्ट्री की बनावट इस प्रकार हो कि कच्चा माल अग्निकोण की तरफ से प्रवेश करे और उसकी प्रोसेसिंग मूल पश्चिम क्षेत्र में हो। इस तरह कच्चा माल उत्तरोत्तर तैयार माल बनकर वायव्य के क्षेत्र में भंडारण होते हुए वितरण के लिए उतर या ईशान्य क्षेत्र से फैक्ट्री से बाहर ले जाना उत्तम होता है।

मशीने जो ज्यादा स्थान घेरे और वजन में भारी हो उन्हे नैऋत्य से मूल दक्षिण और नैऋत्य से मूल पश्चिम की तरफ स्थापित करना चाहिए। यदि भारी मशीनों की श्रृखंला हो तो नैऋत्य से वायव्य की तरफ स्थापित की जा सकती है।

हल्की या हाथ से संचालित होने वाली मशीनों को मूल उतर, पूर्व, या आग्नेय क्षेत्र में स्थापित की जा सकती है। मशीनों को इस तरह से स्थापित करना चाहिए कि प्रयोग में लाने वाले श्रमिकों के चेहरे उतर, या पूर्व की तरफ रहे।

विद्युतीय उपकरण या संयंत्रों जैसेः– बायॅलर, ट्रांसफार्मर आदि के लिए आग्नेय कोण में जगह रखनी चाहिए। लेकिन ट्रांसफार्मर को मूल अग्निकोण से दूर होना चाहिए। ट्रांसफार्मर को दक्षिण क्षेत्र में दक्षिणी आग्नेय तक स्थापित किया जा सकता है। जहां ट्रांसफार्मर हो उसके आस–पास की दीवारों में द्वार नही होना चाहिए। ट्रांसफार्मर में विद्युत आपूर्ति पूर्व से और वितरण पश्चिम की ओर से रखना अच्छा होता है। औद्योगिक परिसर में जेनरेटर का फाउंडेशन इस प्रकार रखना चाहिए कि उपयोगकर्त्ता का चेहरा पूर्व या उतर की तरफ हो।

भट्ठी और बॉयलर मूलतः एक ही प्रकृति के यद्यापि उपयोगकर्त्ता के लिए इनमें मूलभूत अंतर है। भट्ठी में सीधा अग्नि का उपयोग होता है। जबकि बॉयलर में अग्नि मूल तत्व हैं लेकिन यह परोक्ष कार्य करती है। अग्नि से वाष्प (स्टीम) बनाई जाती है और वाष्प का उपयोग आवश्यकतानुसार होता है। भट्ठी को आवश्यकतानुसार मूल दक्षिण से दक्षिणी आग्नेय तक रखी जा सकती है। बायॅलर के लिए भी सबसे उपर्युक्त दक्षिण का क्षेत्र होता है। लेकिन बहुत आवश्यक होने पर मूल पश्चिम या मूल पूर्व में भी स्थापित किया जा सकता है। इसे ईशान्य, वायव्य और मूल उतर में स्थापित नही करना चाहिए।

औद्योगिक परिसर में वार्ताकक्षः–

विशाल औद्योगिक परिसरों में वार्ताकक्ष का होना आवश्यक है। जिसमें उत्पादनकर्त्ताओं, वितरकों, लेखाकारों, आपूर्तिकर्त्ताओं और नीति निर्धारकों बैठकर व्यवसाय को चलाने के लिए आवश्यक निर्णय लेते

हैं। वार्ताकक्ष को वास्तु के अनुरूप नही रहने पर वार्ताकारों में परस्पर वैचारिक सामंजस्य नही रह पाता है। वार्ताकक्ष को वर्गाकार या आयताकार रखना चाहिए, लेकिन आयताकार रखने पर 2:1 से अधिक रखना लाभप्रद नही होता है। क्योंकि इससे वार्ताकक्ष के महत्व नष्ट हो जाती है। वार्ताकक्ष की लंबाई

को पूर्व से पश्चिम की ओर रखना लाभप्रद होता है। वार्ताकक्ष में वार्ता के लिए फर्नीचर हमेशा अंग्रेजी के U आकार का रखना ठीक होता है। गोल या लम्बवत् टेबल अच्छा फल नही देता है। यदि सामने का टेबल काफी लम्बी हो तो उसे कई भागों में बॅटा होना चाहिए। 11 फीट से अधिक एकल टेबल नही होना बेहतर होता है। लेकिन आवश्यकतानुसार टेबल की संख्या बढाकर लम्बाई को पर्याप्त किया जा सकता है। कुर्सीयों की संख्या 6,8,16,26 जैसी सम संख्याओं में रखना अच्छा होता है। इसे 10,20,30,40 जैसे सम संख्याओं में रखना अच्छा नही होता है।

वार्ताकक्ष में भाग लेने वाले व्यक्तियों का मुख किसी भी दिशा में हो सकता है। लेकिन सबसे मुख्य व्यक्ति व मालिक का चेहरा हमेशा उतर या पूर्व की तरफ रखना लाभप्रद होता है। इससे मालिक वार्ताकक्ष में भाग लेने वाले व्यक्तियों पर अपना पूर्ण नियंत्रण एवं दबाव बनाये रखता है।

19. मंदिर (Temple)

मंदिर निर्माण के लिए भूखंड का चयन सावधानी पूर्वक करना चाहिए। मंदिर निर्माण के लिए भूखंड खुले शांत और स्वच्छ स्थान पर होने चाहिए। मंदिर को घनी आबादी से दूर रखना चाहिए। मंदिर के आस पास 100 फीट के विस्तार में मकान नही होना चाहिए। जिससे मंदिर के आस पास शांति एवं स्वच्छता बनी रहती है। साथ ही ध्वजदोष से होने वाली पीड़ा से भी बचाव होता है।

मंदिर निर्माण के लिए सर्वश्रेष्ठ भूखंड आयताकार एवं वर्गाकार होता है। जिस भूखंड के चारो मुख्य दिशा, चुंबकीय कंपास के अनुसार बीच में पडती है वह भूखंड अच्छी होती है। साथ ही मंदिर निर्माण हेतु उपलब्ध भूखंड के उत्तर एवं पूर्व की ओर समुद्र, नदी, झील या झरना आदि हो तो वह भूखंड मंदिर निर्माण हेतु सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इस तरह के भूखंड पर मंदिर के निर्माण करने से शीघ्रताशीघ्र प्रसिद्धि मिलती है।
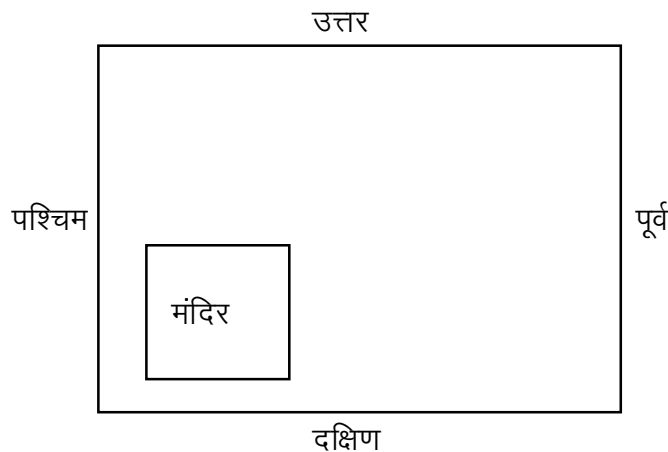
मंदिर को शहर के ऊँचे स्थान या पहाडों के बीच में होना अच्छा होता है। मंदिर शहर के दक्षिण–पश्चिम में होने पर प्रत्येक प्रकार के सुख–समृद्धि एवं यश् देनेवाला होता है। ऐसे मंदिर मनोकामनापूरक मंदिर हो जाता है। इस तरह मंदिर के पूर्व या उत्तर में निवास करने वाले लोग सुख–शांति पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते है। जबकि मंदिर के दक्षिण–पश्चिम में निवास करने वाले लोगों का सुख–शांति खत्म हो जाती है तथा हमेशा परेशानियों का सामना करना पडता है।

मंदिर के चारो ओर खाली जगह रखनी चाहिए। उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक से अधिक खाली जगह रखना लाभप्रद होता है। मंदिर के सतह का ढाल उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व की ओर रखना चाहिए। जिन

मंदिरों के उतर एवं पूर्व भागों में ऊँचे जमीन की सतह बने होते हैं वहां देवी–देवता प्रवेश करना पसंद नही करते तथा मंदिर लोकप्रिय नही होती। यही कारण है उतरमुखी शिव जी के मंदिर में नंदी की भारी मूर्ति नीचा जमीन की सतह करके स्थापित की जाती है। मंदिर के चारो ओर चारदीवारी आवश्यक है। मंदिर में मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व एवं उतर की ओर से करना लाभप्रद होता है। क्योंकि कुछ देवी देवता इन्द्र के रास्ते पूर्व से मंदिर में आना पसंद करते हैं। जिस मंदिर का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा की ओर हो तथा निकास उतर दिशा की ओर से हो उस मंदिर में पूजा पाठ करने वाले को आत्मिक शांति के साथ यश और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। कुछ देवी देवता उतर, ईशान्य या वायव्य के रास्ते मंदिर में आना पसंद करते हैं। उनके लिए उतर, ईशान्य या पश्चिमी वायव्य की ओर द्वार रखना लाभप्रद होता है। वरूण या वायु देवता हमेशा पश्चिमी वायव्य के रास्ते मंदिर में आना पसंद करते हैं। इसलिए इस स्थान से द्वार का होना भी लाभप्रद होता है। दक्षिणी आग्नेय में द्वार का होना अग्नि देव को पसंद है। अतः इस ओर भी द्वार रखी जा सकती है। मुख्य मंदिर में द्वार चारो तरफ अर्थात् चार द्वार रखना अच्छा होता है। लेकिन मुख्य द्वार अन्य द्वार के अपेक्षा बडा एवं आकर्षक रखनी चाहिए। मुख्य द्वार को इस तरह से नही बनाना चाहिए कि रास्ते से ही भगवान के दर्शन हो रहें हों। आमतौर पर इस तरह द्वार की स्थिति रहने पर अत्यंत प्रयास के बावजूद मंदिर प्रसिद्ध नही हो पाता है।

मंदिर परिसर में प्रवेश करने पर जूते चप्पल रखने की जगह वायव्य की ओर रखना चाहिए। हाथ पैर धोने के लिए पानी या नल उतर या पूर्व की ओर रखना लाभदायक होता है। जबकि शौचालय, मंदिर परिसर के बाहर बनानी चाहिए। पार्किंग भी मंदिर परिसर के बाहर पूर्व या उतर की तरफ करनी चाहिए। खाने–पीने की वस्तुएं भूखंड के उतर–पश्चिम की ओर रखना चाहिए। पानी का स्त्रोत (कुँआ या पंप) या पानी का अंडरग्राउंड भंडारण उतर–पूर्व भाग में करना लाभप्रद होता है। रसोईघर या प्रसाद बनाने का स्थान दक्षिण–पूर्व भाग में रखना चाहिए। जबकि प्रसाद स्थल अर्थात् मंदिर में चढाने के लिए जहां से लोग प्रसाद खरीदते हों पूर्व या उतर–पूर्व में रखना चाहिए। मंदिर में हुंडी या दान पेटी उतर या पूर्व की तरफ रखना चाहिए। शादी–विवाह या अन्य दूसरे धार्मिक कार्य मंदिर परिसर के बाहर खुले स्थान पर पश्चिम या दक्षिण तरफ करनी चाहिए।

मंदिर के उतर–पूर्व में नदी, तालाब या झरना बहता हो तो मंदिर की प्रसिद्धि में आर्श्चयजनक वृद्धि देखने को मिलती है। साथ ही ऐंसे मंदिर या तीर्थ स्थान शीघ्र फलदायी होते है। भारत में बहुत से विश्व विख्यात मंदिर या मठ है जिनके उतर–पूर्व में नदी, तालाब या झरना बहता है। तिरूपति बालाजी के मंदिर के उतर में पुष्यकरणी नदी, एंव रामकृष्ण मठ के पूर्व में गंगा नदी का बहना इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

मंदिर में विभिन्न देवी–देवता के मूर्तिया होते हैं। मुख्य मंदिर को भूखंड के दक्षिण–पश्चिम भाग अर्थात चंद्र भूमि पर स्थापित करना अच्छा होता है। इस तरह का मंदिर सभी प्रकार के सुख और ऐश्वर्य प्रदान करता है। चंद्र भाग पर मंदिर की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जाये तथा सूर्य भाग की ओर से प्रवेश द्वार बनाई जाए तो ऐसे मंदिर मनोकामना पूरक मंदिर बन जाता है। मूर्तियां भवन के सतह पर ही रखनी चाहिए इसे छत पर नही रखनी चाहिए।मूर्ति का मुँह दक्षिण दिशा की ओर नही रखना चाहिए, लेकिन

हनुमान जी के मूर्ति को दक्षिण तरफ मुँह कर स्थापित किया जा सकता है। मंगल का प्रतिक गणेश जी हैं। अतः गणेश जी की स्थापना के लिए सही दिशा ादक्षिण है। ऐसा होने से गणेश जी की दृष्टि उतर की तरफ रहेगी। उतर में हिमालय पर्वत है जिस पर गणेश जी के माता–पिता शंकर–पावर्ती जी का निवास स्थान है। भगवान गणेश को अपने माता–पिता की ओर देखना अच्छा लगता है। इसलिए गणेश जी के मूर्ति दक्षिण दिशा में रखना सर्वथा योग्य होता है। गणेश जी की स्थापना पश्चिम दिशा में कभी नही करना चाहिए क्योंकि गणेश जी मंगल के प्रतिक हैं और पश्चिम दिशा का स्वामी शनि है। इस तरह शनि एवं मंगल एक साथ हो जायेंगे जो कि उचित नही है। लक्ष्मी, विष्णु एवं कुबेर की मूर्तियां उतर–पूर्व में पूर्व दिशा की तरफ, महासरस्वती को पश्चिम की दिशा की तरफ एवं महाकाली, को दक्षिण दिशा की तरफ रखना लाभप्रद होता है।

मंदिर में मूर्ति हमेशा पत्थर या धातु का ठोस होना चाहिए। मिट्टी के भी मूर्तियां शुभ होती है, लेकिन इन्हे अंदर से खोखला नही होना चाहिए। मूर्ति स्थापना और प्राण प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त में करनी चाहिए।

मनुष्य का सिर उतरी ध्रुव होता है और प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति का चरण दक्षिण ध्रुव होते है। जब देवी–देवता के पवित्र चरणों में सिर रखा जाता है तो मनुष्य के शरीर के ॠणात्मक ऊर्जा खत्म हो जाते हैं तथा शरीर के अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है जिससे शरीर के गुप्त विकार समाप्त हो जाते हैं। इसी कारण पूजा करने वक्त देवताओं के चरणों में सिर टेकते हैं।

20. अस्पताल (Hospital)

अस्पताल एक ऐसा स्थल है जो सामाज के लिए स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती हैं। अतःऐसे संस्थानों का निर्माण वास्तु के नियमों के अनुसार होना चाहिए। जिससे बीमार व्यक्ति यथाशीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकें। इससे डॉक्टर और मरीज दोनो को लाभ होता है। ऐसे अस्पताल काफी लोकप्रिय हो जाते है।

अस्पताल के लिए भूखंड आयताकार एवं वर्गाकार होनी चाहिए। वर्गाकार एवं आयताकार भूखंड में चुंबकीय प्रवाह का निर्माण समुचित रूप से होता है। जिस भूखंड में सकारात्मक ऊर्जा एवं विधुत चुंबकीय लहरो का निर्माण होता है वह भूखंड शुभफलदायी होता है। आयताकार भूखंड का आकार 2:1 अनुपात से अधिक बडा नही रखना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर भूखंड में विधुत चुंबकीय ऊर्जा का प्रभाव क्षीण हो जाता है। अस्पताल का मुख्य भवन भूखंड के दक्षिण–पश्चिम में होना चाहिए। अस्पताल का बनावट इस तरह रखना चाहिए कि उसका चेहरा अर्थात आगे का हिस्सा पूर्व या उतर की तरफ रहे। इससे

अस्पताल की प्रसिद्धि शीघ्र मिलती है।

अस्पताल में मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व, ईशान्य या उतर की तरफ से रखना लाभप्रद होता है। अस्पताल में पानी के लिए बोरिंग या ट्यूबवेल की व्यवस्था भूखंड के ईशान्य क्षेत्र में करनी चाहिए। साथ ही अस्पताल के उतर या पूर्व में फब्बारा, झरना या तालाब की व्यवस्था रखना अस्पताल के प्रगति एवं प्रसिद्धि में चार चॉद लगा देता है। ऐसे अस्पताल राष्ट्रीय–अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचाने जाते हैं। अस्पताल के भूखंड का ढाल भी उतर–पूर्व की तरफ लाभप्रद होता है। अस्पताल में उतर–पूर्व की तरफ अधिक से अधिक खुला

जगह रखनी चाहिए। अस्पताल के भवन का निर्माण दक्षिण से लेकर पश्चिम की तरफ करना लाभदायक होता है। अस्पताल का मध्य भाग खुला और साफ सुथरा रखना चाहिए।

उतर

पश्चिम ↓ / उतर →		
गहन चिकित्सा कक्ष, कैन्टीन, शौचालय	प्रसुति वार्ड, वाह्य चिकित्सा विभाग (ओ.पी.डी.), छोटा ऑपरेशन कक्ष	स्वागत कक्ष, वार्ता कक्ष, आपातकालीन वार्ड (इमरजैंन्सी/कैजुअल्टी)
शल्य चिकित्सा विभाग एवं ऑपरेशन थियेटर, मनोरोग विभाग, ऑखों का विभाग, प्रयोगशाला		औषधी कक्ष, वाह्य चिकित्सा विभाग (ओ.पी.डी.), हृदय रोग विभाग, क्षय रोग विभाग
मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी का कार्यालय	मुर्दा घर, पोस्टमार्टम कक्ष	एक्स–रे, अल्ट्रासाउण्ड, सीटी स्कैन, रेडियोलॉजी

पश्चिम (बाएँ) — पूर्व (दाएँ)

दक्षिण

मरीजों के लिए स्वागत कक्ष उतर या उतर–पूर्व दिशा में बनाना चाहिए। इसके आंतरिक व्यवस्था को इस तरह व्यवस्थित करना चाहिए की बैठने पर मरीजों का मुंह उतर या पूर्व की तरफ रहे।

अस्पताल में मुख्य डॉक्टर के परीक्षण का कक्ष भवन के दक्षिण–पश्चिम में बनानी चाहिए। डॉक्टर को कमरे के अंदर दक्षिण–पश्चिम की तरफ उतर या पूर्व की ओर मुंह कर मरीजों को स्वास्थ्य संबंधी सलाह देना चाहिए। डॉक्टर पूर्व की तरफ चेहरा कर बैठते हों तो मरीज को उनके दायीं तरफ तथा उतर की तरफ चेहरा कर बैठते हों तो मरीज को बायीं तरफ बैठाना चाहिए। मरीज को इस तरह लीटाकर परीक्षण या जॉच करनी चाहिए ताकि मरीज का सिर दक्षिण, पश्चिम या पूर्व की तरफ रहें।

अस्पताल में शल्य कक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण कक्ष होता है। इसे पश्चिम में रखना चाहिए। शल्य कक्ष में ऑपरेशन कराते वक्त मरीज का सिर दक्षिण की तरफ रखना लाभप्रद होता है। डॉक्टर को ऑपरेशन करते वक्त चेहरा पूर्व, या उतर की तरफ रखना चाहिए। दक्षिण की तरफ चेहरा कर ऑपरेशन नही करना चाहिए। ऑपरेशन कक्ष में प्रयोग होने वाले उपकरणों एवं संयंत्रो को दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व दिशा

में रखनी चाहिए।

मरीज का कमरा वायव्य की तरफ रखना विशेष शुभफलदायक होता है। इमरजेंसी वार्ड को भवन के वायव्य के तरफ रखना चाहिए। इस स्थान पर अत्यधिक बीमार मरीज को रखने से शीघ्रता–शीघ्र स्वस्थ्य हो जाता है।

नर्स या कर्मचारिओं के लिए क्वार्टर अस्पताल के दक्षिण–पूर्व या उतर–पश्चिम की तरफ बनाना चाहिए।

सीटी स्कैन, एक्स–रे, इ.सी.जी, अल्ट्रासाउण्ड या अन्य इलेक्ट्रीकल मशीनें भवन के दक्षिण–पूर्व के तरफ कमरे में रखनी चाहिए।

अस्पताल में गहन चिकित्सा कक्ष को वायव्य के क्षेत्र में बनाया जाना चाहिए। शल्य चिकित्सा विभाग जहां पर ऑपरेशन की आवश्यकता पड़ती है इसके लिए सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र पश्चिम की तरफ है। यूं तो छोटे ऑपरेशन के लिए उतर एवं उतर–पूर्व का क्षेत्र भी बनाया जा सकता है। मनोरोग विभाग, ऑखो का विभाग के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान पश्चिम का क्षेत्र है। ऑख, नाक, कान के संयुक्त विभाग उतर–पूर्व या पूर्व की तरफ रखी जा सकती है। वाह्य चिकित्सा विभाग जहां पर मरीज आकर डॉक्टरों से परामर्श लेते है इसके लिए उतर और पूर्व का दिशा श्रेष्ठ होता है। जहां तक कार्डियोलॉजी विभाग का सवाल है उसके लिए पूर्व की दिशा लाभप्रद होता है तथा क्षय रोग के लिए पूर्व और वायव्य की दिशा अच्छी होती है। औषधि कक्ष के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान पूर्व और उतर–पूर्व की दिशा होती है। मुर्दा घर या पोस्टमार्टम कक्ष मृत्यु के देवता यम् की दिशा दक्षिण में बनाया जाना चाहिए। एक्स–रे, अल्ट्रासाउण्ड, सीटी स्कैन, रेडियोलॉजी इत्यादि विधुतीय उपकरणों को आग्नेय दिशा में रखना सर्वश्रेष्ठ होता है। प्रसूति वार्ड उतर या पूर्व दिशा में बनायी जा सकती है। ऑपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ कक्ष उतर या उतर–पूर्व क्षेत्र में बनाई जा सकती है।

अस्पताल में सीढ़ियां वास्तु नियमों के अनुरूप बनानी चाहिए। सीढिया और लिफ्ट पश्चिम, दक्षिण या दक्षिण–पश्चिम हिस्से में बनाई जा सकती है। अस्पताल के मध्य भाग में सीढियां एवं लिफ्ट नही बनानी चाहिए। सीढियों की घुमाव सदैव घडी की दिशा में होना चाहिए। अर्थात् चढ़ते समय सीढ़ियां हमेशा दायीं ओर मुड़नी चाहिए। सीढ़ियां हमेशा विषम संख्या में बनानी चाहिए।

अस्पताल मे मरीजों के लिए बेड की व्यवस्था वास्तु के नियमो को ध्यान में रखकर करना लाभप्रद होता है। मरीज को उतर की ओर सिर कर नही सोना चाहिए। क्योंकि सिर को उतर की ओर रखने पर पृथ्वी क्षेत्र का उतरी ध्रुव मानव की उतरी ध्रुव (सिर को उतरी ध्रुव कहा गया है।) से घृणा कर चुंबकीय प्रभाव को अस्वीकार करेगा। जिससे शरीर में रक्त संचार हेतु उचित और अनुकूल चुंबकीय क्षेत्र का लाभ नही मिल सकेगा। जिसके फलस्वरूप मस्तिष्क में तनाव, छाती में दर्द –जकड़न एवं अच्छी नींद नही आती। मरीजों को दक्षिण दिशा में सिर कर सोने से शरीर को शांतिमय निंद्रा एवं अनुकूल अवस्था प्राप्त होती है। क्येंकि सिर दक्षिण दिशा में रख कर सोने से चुंबकीय परिक्रमा पुरी होने के कारण चुंबकीय तरंगो के प्रभाव मे रूकावट नही होती जिससे शीघ्र स्वास्थ्य में लाभ मिलती हैं। इसके अलावा सिर को पश्चिम और पूर्व की ओर कर सुलाना भी लाभप्रद होता है।

अस्पताल में रंगो का ध्यान रखना आवश्यक है। क्योंकि रंगो का हमारे दैनिक जीवन में काफी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अस्पताल के इमारत को शौम्य, हल्का एवं सात्विक (नीले, हरे, सफेद और हल्के रंग) रंगो का प्रयोग करना अच्छा होता है। लाल, काला और ग्रे रंगो के प्रयोग से बचना चाहिए।

अस्पताल के मुख्य द्वार के सामने किसी भी तरह का अवरोध या वेध नही होना चाहिए। गंदे नाली, एवं कुडा–करकट भी रहना अस्पताल के प्रसिद्धि एवं प्रगति के लिए अच्छा नही होता। अतः अस्पताल के मुख्य द्वार के सामने किसी भी तरह रूकावट या व्यवधान नही होना चाहिए।

अस्पताल को साफ–सुथरा एवं धुल मिट्टी रहित रखनी चाहिए। अस्पताल में पार्किंग की व्यवस्था उतर–पश्चिम, उतर या पूर्व में करना लाभप्रद होता है।

पर्यावरण को ठीक रखने के लिए अस्पताल के अंदर छोटे–छोटे पेड–पौधे का होना आवश्यक है। हरे भरे उद्यान और तुलसी जैसे अन्य औषधीय पेड–पौधे को उतर–पूर्व क्षेत्र में लगाना अस्पताल को मनमोहक एवं प्राकृतिक वातावरण से सुशोभित करता है। किसी भी तरह का मरूस्थलीय पौधे का रोपण या पोषण अस्पताल के सीमा में नही करना चाहिए। साथ ही कॉटेदार एवं दूध वाला पैाधा भी नही लगाना चाहिए, ऐसा पौधा प्रतिकूलता देता है।

21. शैक्षणिक संस्थान (Educational Institution)

शैक्षणिक संस्थान व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण का एक ऐसा मंदिर है जहां से व्यक्ति ज्ञान, एवं शिक्षा अर्जन करते हुए अपने चारित्रिक मूल्यों का विकास करता है। अतः इसका निर्माण उचित एवं तरीके से होना आवश्यक है। इसके निर्माण में वास्तु के सिद्धांतो को अपनाने से छात्र एवं शिक्षक सभी लाभान्वित होकर विधारूपी मंदिर का समुचित लाभ प्राप्त कर सकते है।

शैक्षणिक संस्थान को शहर या कॉलोनी के उतर या उतर–पूर्व की ओर बनाना लाभप्रद होता है क्योंकि उतर–पूर्व का स्वामी ज्ञान एवं शिक्षा का कारक ग्रह बृहस्पति तथा उतर दिशा का स्वामी मनस चेतना का कारक ग्रह बुध है। जिसके फलस्वरूप इस स्थान पर अध्ययन करने वाले का ख्याति देश–विदेश मे तथा शिक्षण–संस्थान का लोकप्रियता राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर होती हैं।

शिक्षण संस्थान के लिए भूखंड का चयन प्रथम आवश्यकता है। भूखंड आयताकार एवं वर्गाकार होनी चाहिए। भूखंड के सभी कोना 90^0 का होना चाहिए। ईशान्य वृद्वि भूखंड भी शिक्षण संस्थान के लिए लाभप्रद होता है। भूखंड के उतर–पूर्व में नदी, तालाब या झरना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहने पर इसकी ख्याति शीघ्रता शीघ्र होती है। भूखंड के दक्षिण–पश्चिम में घनी आबादी, पेड–पौधा या ऊँची–ऊँची इमारते का होना तथा उतर–पूर्व में अधिक से अधिक खुला स्थान होना शैक्षणिक संस्थान के विकास में मददगार होता है।

भवन के चारो ओर चारदीवारी अवश्य बनाना चाहिए। इससे सकारात्मक ऊर्जा एवं विद्युत चुंबकीय लहरो का निर्माण होता है। जिस भूखंड में सकारात्मक ऊर्जा एवं विद्युत चुंबकीय लहरो का निर्माण होता है। उसपर कार्य करने वाले सुख–शांति एवं समृद्धि पूर्वक जीवन व्यतीत करते है। दक्षिण–पश्चिम में ऊँचां एवं मजबूत दीवार रखना चाहिए। साथ ही भूखंड का ढलान उतर एवं पूर्व की ओर रखना चाहिए। इससे शिक्षण संस्थान के लोकप्रियता में वृद्धि होती है तथा समृद्धियॉ बनी रहती है।

भूखंड के उतर, पूर्व या पश्चिम में रोड़ रहनी चाहिए। शैक्षणिक संस्थान में मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व, उतर या ईशान्य क्षेत्र से रखना लाभप्रद होता है। इसे दक्षिण या दक्षिण–पश्चिम कोने के तरफ से नही रखना चाहिए।

शिक्षण संस्थान को इस तरह बनानी चाहिए कि उसका आगे का हिस्सा पूर्वानुमुखी हो। पूर्व दिशा से सूर्य की प्रथम किरणों का उदय होता है। साथ ही जीवनदायिनी ऊर्जा का संचार भी उतर–पूर्व दिशा से होती है। अध्यापक प्रभावशाली तरीके से शिक्षण कार्य कराते हैं, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थीयों के नतीजे प्रशंसनीय होते हैं।

शिक्षण संस्थान के भवनों के निर्माण के लिए बडी भूखंड की आवश्यकता पड़ती है। भवन की निर्माण

खण्डों में करना हो तो पूर्व और उतर को खुला छोडते हुए भवन का निर्माण करना चाहिए। दक्षिण और पश्चिम को खुला नही रखना चाहिए। शिक्षण संस्थान में भूखंड के चारो ओर निर्माण कार्य किया जा सकता है। लेकिन ऐसी स्थिति में ब्रह्म् स्थान खुला रखना चाहिए। ब्रह्म स्थान में कोई भी पार्टीशन, कील और भारी वस्तु न रखें। ब्रह्म स्थान को हमेशा खाली और साफ–सुथरा रखें।

भवन में अध्ययन कक्ष पूर्व, उतर, उतर–पूर्व और पश्चिम में बनानी चाहिए। उतर दिशा पर मनस चेतना का कारक ग्रह बुध, ईशान्य क्षेत्र पर ज्ञान के ग्रह गुरू, पूर्व पर आत्म कारक सूर्य एवं पश्चिम दिशा पर

उतर

पश्चिम ↓ / पूर्व →			
	स्टाफ रूम, शौचालय	अध्ययन कक्ष, लेखा विभाग, पुस्तकालय, खेल का मैदान, छात्रावास, वेद्यशाला	अध्ययन कक्ष, खेल का मैदान, छात्रावास
पश्चिम	अध्ययन कक्ष, परीक्षा कक्ष, प्रयोगशाला	खुला स्थान, सामूहिक प्रार्थना स्थल	अध्ययन कक्ष, प्रशासकीय विभाग, पुस्तकालय
	कुलपति, प्रधानाचार्य, संस्थान के निदेशक	उपप्रधानाचार्य, उपकुलपति	मनोरंजन कक्ष, कैंटिन

पूर्व

दक्षिण

विद्या की देवी मॉ सरस्वती का अधिकार होता है। अतः इन क्षेत्रों में अध्ययन कक्ष रखने से बच्चों के अध्ययन में काफी लाभ मिलता है। क्लास रूम में ब्लैकबोर्ड को उतर या पूर्व की दीवार पर रखें। बच्चों को पढाई करते वक्त मुह उतर या पूर्व की तरफ होना चाहिए इससे बच्चे विलक्षण प्रतिभा के धनी एवं ज्ञानवान होते है। बच्चों के लिए क्लास रूम आयताकार एवं वर्गाकार बनानी चाहिए। उतर एवं पूर्व की तरफ अधिक से अधिक खिड़की एवं द्वार रखें। क्लास रूम में प्रवेश पूर्व या ईशान्य क्षेत्र से रखें। क्लास रूम में प्रकाश की समुचित व्यवस्था रखनी चाहिए।

एक खण्ड में होने पर पूर्व–पश्चिम या उतर–दक्षिण में करना चाहिए। यदि भवन का निर्माण दो या तीन शिक्षण संस्थान में प्रधानाचार्य, कुलपति या मुख्य व्यक्ति का कार्यालय दक्षिण–पश्चिम के क्षेत्र में बनाना चाहिए। उपप्रधानाचार्य या उपकुलपति का कार्यालय दक्षिण क्षेत्र में बनाना श्रेष्ठ होता है। प्रशासनिक कार्यालय, जिस स्थान से पुरे शिक्षण संस्थान की प्रशासकीय गतिविधियां संचालित होती है उसे पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए। लेखा विभाग उतर दिशा में होना चाहिए। वित्तीय कार्यों के लिए खासतौर पर उतर का दिशा लाभप्रद होता है। इससे शिक्षण संस्थान की संपन्नता बनी रहती है। मुख्य खजांची या अंकेक्षक को उतर दिशा की ओर मुंह कर बैठना चाहिए। यदि खजांची का मुँह पूर्व की तरफ हो तो कैश काउंटर उसके दाहिनी ओर रखनी चाहिए तथा खजांची का मुँह उतर की तरफ हो तो कैश काउंटर उसके बाएं तरफ रखनी चाहिए। परीक्षा विभाग पश्चिम में बनाना सर्वश्रेष्ठ होता है। शिक्षण संस्थान में पुस्तकालय भूखंड के उतर या पूर्व क्षेत्र में बनाना लाभप्रद होता है। प्रयोगशाला भवन के पश्चिम में बनाना चाहिए। स्टाफ रूम की व्यवस्था वायव्य के क्षेत्र में करना चाहिए। मनोरंजन कक्ष तथा कैटीन की व्यवस्था आग्नेय क्षेत्र में करना चाहिए। शिक्षण संस्थान में खेल का मैदान उतर या ईशान्य क्षेत्र में करना शुभफलप्रद होता है। छात्रावास उतर और ईशान्य के क्षेत्र में बनानी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर छात्रावास पूर्व और दक्षिण दिशा में भी बनाया जा सकता है। वेद्यशाला उतर दिशा में बनाना चाहिए। सामूहिक प्रार्थना स्थल ब्रह्म स्थान में बनाना चाहिए।

शिक्षण संस्थान के ईशान्य कोण को हमेशा स्वच्छ तथा साफ–सुथरा रखें। इस स्थान को गंदगी एवं कचड़े से मुक्त रखें। इस कोण में चूँकी परमपिता परमेश्वर एवं ग्रहों में गुरू जो अध्यात्मिक चेतना का कारक ग्रह है का वास होता है। अतः कोण को जागृत रखने के लिए अपने ईष्ट देव की मूर्ति या तस्वीर लगायें और प्रतिदिन वहां धूप, दीप दिखायें। शिक्षण संस्थान के उतर–पूर्व में जलचर प्राणी संग्रह या छोटा सा पानी का फब्वारा लगायें। शिक्षण संस्थान के बाहर देखते समय मुख्य द्वार के बायीं ओर रखा पानी का फब्वारा शिक्षण संस्थान के लोकप्रियता को बढ़ाता है। साथ ही उल्लासपूर्ण वातावरण बनाने में मदद करता है।

भूमिगत पानी का टैंक, बोरिंग, ट्यूवबेल आदि ईशान्य क्षेत्र में करने से शिक्षण संस्थान के खुशहाली एवं लोकप्रियता में दिनोदिन वृद्धि होती है। शौचालय भवन के वायव्य क्षेत्र में बनाना चाहिए। ट्रांसफारमर, जेनरेटर, स्वीच बोर्ड आदि भवन के आग्नेय क्षेत्र में बनाना अच्छा होता है।

22. होटल, रेंस्तरा, रिर्सोट (Hotel, Restaurants, Resorts)

वर्तमान समय में होटल व्यवसाय में काफी तेजी से प्रगति हुई है। होटल, रेंस्तरा या रिर्सोट का उपयोग शहरी जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। शादी, पार्टी घरेलू उत्सवों एवं अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए होटल, रिर्सोट एवं रेंस्तरा एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन चुका है। अतः इसका निर्माण वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुकूल करना चाहिए।

होटल, रेंस्तरा या रिर्सोट के लिए भूखंड का चयन प्रथम आवश्यकता है। भूखंड का आकार आयताकार या वर्गाकार रहना चाहिए। ईशान्य वृद्धि भूखंड भी अच्छा फल देता है।

होटल या रिर्सोट के उतर–पूर्व में तालाब, झील, गड्डा स्वीमिंग पुल या बहता दरिया का होना व्यवसाय को चार चॉद लगाते हैं। विश्वकर्मा प्रकाश के आठवें अध्याय के 15–17 वें श्लोक में पानी के लिए सबसे उपर्युक्त स्थान उतर–पूर्व या उतर की ओर बताया गया है। भूमिगत पानी का स्तोत्र या बोरिंग भी उतर–पूर्व की ओर करनी चाहिए इससे यथाशीघ्र लोकप्रियता मिलती है। धन की कभी कमी नही रहती तथा लक्ष्मी का निरंतर वास होता है। फव्वारा जिसमें संगीत और प्रकाश साथ–साथ होते हैं उसे भी उतर–पूर्व में लगाना चाहिए। इससे धनात्मक ऊर्जा का प्रवाह सुचारू रूप से परिसर के अंदर बनी रहती है। इससे होटल या रिर्सोट की तरफ लोगों की आकर्षण में वृद्धि होती है। स्वीमिंग पुल को दक्षिण–पश्चिम या भूखंड के मध्य भाग में नही रखना चाहिए। मध्य भाग में तरणताल बर्बादी और दिवालियापन बना देता है।

होटल या रिर्सोट के दक्षिण–पश्चिम भाग में अधिक से अधिक निर्माण कार्य करनी चाहिए तथा उतर और पूर्व को अधिक से अधिक खुला रखना चाहिए। दक्षिण और पश्चिम की दीवार को भी ऊँचा, मजबूत एवं भारी रखना चाहिए। इसके चारो ओर चारदिवारी का होना आवश्यक है। मुख्य प्रवेश द्वार उतर, उतरी ईशान्य, पूर्वी ईशान्य या पूर्व की ओर से रखना श्रेष्ठ होता है।

किसी भी रेस्टोरेंट, होटल या रिर्सोट में रसोईघर का होना अनिवार्य है। रसोईघर को आग्नेय क्षेत्र में बनानी चाहिए। इसके विकल्प में वायव्य मे रसोईघर बनाया जा सकता है। परंतु इस भाग में बने रसोईघर में खाना बनाने का प्लेटफार्म या गैस चूल्हा दक्षिण–पूर्व में रखना आवश्यक होगा। अन्यथा खर्च की अधिकता एवं अग्नि से दुर्घटना का भय बना रहता है। रसोईघर को नैऋत्य, ईशान्य, उतर एवं भूखंड के मध्य भाग में नही रखना चाहिए। उतर–पूर्व दिशा में होने पर खाद्य पदार्थो की बर्बादी एवं दिवालियापन का सामना करना पड़ता है। दक्षिण–पश्चिम में होने पर संबंधो में वैमनस्यता होती है। तथा उतर कि दिशा में रखने पर आर्थिक स्थिति अच्छी नही रहती। रसोईघर में खाना बनाने का मुख्य प्लेटफार्म पूर्व और दक्षिण–पूर्व कोने में होना चाहिए और खाना बनाते वक्त रसोईया का चेहरा पूर्व की ओर रहना चाहिए।

होटल में डायनिंग हॉल या रेस्टोरेंट को पश्चिम दिशा में सबसे अच्छा माना जाता है। दूसरा अच्छा स्थान उतर और पूर्व दिशा को माना जाता है। यदि रसोईघर दक्षिण–पूर्व में हो तो भोजन कक्ष रसोईघर के पूर्व या दक्षिण की ओर बनायें। यदि रसोईघर उतर–पश्चिम में हो तो भोजन कक्ष पश्चिम की ओर बनायें। लेकिन यदि जगह की कमी हो तो उतर की ओर बना सकते हैं। होटल या रेस्टोरेंट के डायनिंग कक्ष में टेबल का आकार वर्गाकार अथवा आयताकार होना चाहिए। भोजन कक्ष में टेबल का आकार उसके एक भाग से दूसरे भाग तक दुगने से अधिक नही होना चाहिए। जैसे यदि चौडाई 4 फीट हैं तो उसकी लंबाई अधिकतम 8 फीट तक रखी जा सकती है। डायनिंग टेबल को विषम माप में नही रखनी चाहिए। क्योंकि विषम माप (जैसे चौडाई 3 फीट, लंबाई 7 फीट) होने से उपयोग करने वालो में परस्पर वैमनस्यता उत्पन्न होती है। डायनिंग टेंबल के साथ सम संख्या में कुर्सियां लगायें। भोजन कक्ष के उतर–पूर्व में पानी रखें। वाश–बेसिन भी उतर या पूर्व की तरफ लगाएं। भोजन कक्ष का दरवाजा पूर्व, पश्चिम या उतर की ओर शुभलाभदायक ग्रीड में रखना चाहिए। भोजन कक्ष के दरवाजे बृहस्पति के पीले रंग से रंगवाना चाहिए। क्योंकि इस कक्ष पर गुरू का अधिपत्य होता हैं। भोजन कक्ष की दीवारों का रंग हल्का पीला, क्रीम, नारंगी या हल्के उजले रंग का करना शुभफलप्रद होता है। लटकती हुई बींम के नीचे डाइनिंग टेबल नही रखनी चाहिए अन्यथा भोजन करते वक्त तनाव में वृद्धि होगी।

होटल या रिर्सोट में भारी वस्तुओं के लिए भंडार नैऋत्य क्षेत्र में बनानी चाहिए। नैऋत्य क्षेत्र के भंडार गृह में पानी या दीवारों पर नमी या सीलन नही होना चाहिए। खाद्य पदार्थ के लिए भंडार गृह वायव्य के क्षेत्र में बनाना चाहिए। वायव्य के क्षेत्र में रखने से खाद्य पदार्थो की नियमित आपूर्ति बनी रहती है। अतः प्रत्येक दिन इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं का भंडार उतर–पश्चिम के क्षेत्र में करना चाहिए। तेल, घी, गैस, सिलेंडर, किरोसिन आदि को भंडार कक्ष के दक्षिण या आग्नेय में रखें। भंडार गृह में खाद्य साम्रगी के पात्र को पूरी तरह से खाली नही होने देना चाहिए। जबतक नवीन साम्रगी उनमें भर नही जाती तबतक पिछला अन्न या साम्रगी कुछ न कुछ शेष रहने देना चाहिए। भंडार गृह के द्वार उतर एवं पूर्व की तरफ शुभफलदायक ग्रीड में रखें।

होटल में यात्रियों के ठहरने के लिए कमरे पश्चिम, दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए। अतिथि कक्ष को ब्रह्म स्थान में न रखें। ब्रह्म स्थान बहुत सारी ऊर्जा को खींचता है इसलिए आराम और शांति के लिए यह स्थान उपर्युक्त नही रह पाता। कमरे के साथ बाथरूम, बाथटब, शौचालय, चेंज रूम आदि रखने हो तो इसे उतर–पश्चिम या पश्चिम की तरफ बनाए। अतिथि कक्ष के दक्षिण–पश्चिम या पश्चिम का कोना कभी खाली न रखें। कमरे में पलंग को दक्षिण–पश्चिम की तरफ लगानी चाहिए। पलंग की स्थिति कभी भी इस तरह नही रखनी चाहिए जिससे सोने वाले का सिर अथवा पैर सीधे द्वार की तरफ हो। सोते समय पश्चिम की ओर सिर कर सोने से नाम, यश एवं भाग्य, पूर्व की तरफ मानसिक शांति एवं धार्मिक प्रवृति तथा दक्षिण की ओर धन, भाग्य एवं स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। पलंग कभी भी उभरी हुई बींम की नीचे न रखें। बीम शरीर को काटती हुए रहने पर स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। शयनकक्ष का बिस्तर डबल बेड रहने पर भी उसपर गद्दा एक ही रखें। शयनकक्ष का दरवाजा एक पल्ला का होना चाहिए। कमरे का प्रवेश द्वार उतर या पूर्व दिशा से रखना चाहिए। कमरे में ड्रेसिंग टेबल

को उतरी या पूर्वी दीवार पर इस तरह रखें कि सोते समय शरीर का कोई हिस्सा उसमें दिखाई न पड़े अन्यथा वह हिस्सा पीडित रहेगा।

कमरे का आंतरिक बनावट, दीवार का रंग, बिस्तर का गद्दा आदि खुबसूरत, रूचिकर और स्वागत योग्य होना चाहिए। कमरे में मनमोहक तस्वीर लगी होनी चाहिए। कमरे में घास एवं फूलों के पौधे के तस्वीर लगाना शुभफलदायक होता है। होटल या रिर्सोट में पुष्पों का उद्यान या बागीचा को उत्तर–पूर्व दिशा में लगाना चाहिए। पर्यावरण को ठीक रखने के साथ–साथ हमारे दिल और दिमाग को स्फूर्ति एवं तरोताजा रखने के लिए भी इसकी आवश्यकता महसूस की जाती है। फूल मनुष्य के कार्य ऊर्जा में बढोतरी करता है।

होटल में मालिक, डायरेक्टर या व्यवस्थापक को भूखंड के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र अर्थात नैऋत्य दिशा की ओर बैठना चाहिए। इससे कार्यों पर नियंत्रण बना रहता है। मालिक या व्यवस्थापक की कूर्सी इस प्रकार व्यवस्थित होना चाहिए कि बैठने पर चेहरा उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ रहे। मालिक या व्यवस्थापक के कमरे को वास्तु के अनुसार रखना लाभदायक होता है। प्रशासकीय भवन को पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए।

होटल में लेखा विभाग के लिए सबसे उपर्युक्त एवं शुभ स्थान उत्तर या उत्तर–पूर्व दिशा को माना गया है। क्योंकि उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर हैं। कुबेर समृद्धि की देवी मॉ लक्ष्मी के खजांची है तथा उत्तर–पूर्व दिशा पर देव गुरू बृहस्पति का आधिपत्य है। इसलिए लेखा विभाग उत्तर, या उत्तर–पूर्व में रखने की सलाह दी जाती है। ताकि धन की प्रवाह निरंतर बनी रहे। कैशियर को उत्तर की तरफ चेहरा कर कार्य करना चाहिए। तिजोरी या कैश बॉक्स को उत्तर की तरफ खुलना चाहिए।

जेनरेटर, एयर कंडीशन की प्लांट, विद्युत उपकरण की प्लांट, मुख्य स्वीच बोर्ड या विद्युतीय संयंत्रो को दक्षिण–पूर्व दिशा में लगाना चाहिए।

होटल के स्वागत कक्ष को साफ–सुथरा, प्रकाशमय एवं हवादार बनाना चाहिए। इसे उत्तर–पूर्व, उत्तर या पूर्व की तरफ रखना लाभप्रद होता है। स्वागतकक्ष के कर्मचारियों को उत्तर या पूर्व की ओर मुंह कर कार्य करना चाहिए। इस कक्ष के उत्तर–पूर्व की ओर अधिक से अधिक खाली स्थान छोडना आवश्यक है। भवन के पुरे भूखंड के जमीन या सतह का झुकाव भी उत्तर–पूर्व की ओर रखना चाहिए।

23. सिनेमा हॉल (Cinema Hall)

सिनेमा हॉल, थियेटर या ऑडिटोरियम आधुनिक समाज के लिए अतिमहत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थान है जहॉं पर विभिन्न उम्र के लोग एक साथ बैठकर मनोरंजन का लुत्फ उठाते है। इस स्थान को वास्तु सम्मत् बनाने पर लोगों के लिए यह काफी उपयोगी हो जाता है। सिनेमा हॉल, थियेटर या ऑडिटोरियम को शहर के दक्षिण–पूर्व क्षेत्र में बनाना लाभप्रद होता है क्योंकि दक्षिण–पूर्व दिशा का आधिपत्य शुक्र ग्रह है, जो कला, मनोरंजन, चलचित्र, ड्रामा, संगीत, नृत्य एवं फिल्म अभिनय का स्वामी होता है।

सिनेमा हॉल, ऑडिटोरियम के लिए भूखंड आयताकार या वर्गाकार रखना चाहिए। वृताकार, त्रिकोणाकार और अनियमित आकार के भूखंड का चुनाव नही करना चाहिए। आयताकर भूखंड में लम्बाई उतर–दक्षिण और चौड़ाई पूर्व–पश्चिम में रखना चाहिए। जिस भूखंड की मिट्टी ब्राह्मीण और वैश्य अर्थात् सफेद या हरा हो वह सिनेमा हॉल के लिए अच्छा होता है। भूखंड के सतह का ढाल उतर और पूर्व की ओर रखना लाभप्रद होता है। भूखंड के चारो तरफ खुला रखना काफी अच्छा रहता है लेकिन उतर और पूर्व में दक्षिण–पश्चिम की अपेक्षा अधिक से अधिक खुला स्थान रखना चाहिए। सिनेमा हॉल या थियेटर की प्रवेश द्वार उतर या पूर्व दिशा से रखना विशेष शुभफलदायक होता है। लेकिन साधारणतः प्रवेश द्वार वास्तु के दृष्टिकोण से चारो दिशाओं में लाभप्रद स्थान से बनानी चाहिए।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से संगीत, नृत्य, गायन, ड्रामा एवं सिनेमा इत्यादि शुक्र ग्रह के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। शुक्र ग्रह, दक्षिण–पूर्व दिशा का अधिपति ग्रह हैं। अतः इस कारण शहर के दक्षिण–पूर्व दिशा या भूखंड के दक्षिण–पूर्व की ओर सिनेमा हॉल, थियेटर या ऑडोटोरियम बनाना लाभप्रद होता है।

सिनेमा हॉल में प्रयोग होने वाले स्क्रीन या ऑडिटोरियम के लिए मंच पश्चिम या दक्षिण की ओर बनाना चाहिए। दर्शकों को बैठने की जगह उतर या पूर्व की तरफ रखनी चाहिए। परंतु आधुनिक विद्वानों का मत है कि सिनेमा में प्रयोग होने वाले पर्दे (स्क्रीन) के लिए सबसे उपर्युक्त स्थान उतर या पूर्व तथा दर्शको को बैठने के लिए दक्षिण या पश्चिम की दिशा है। प्रोजेक्टर को दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर रखनी चाहिए।

सिनेमा हॉल के ईशान्य क्षेत्र को खाली एवं खुला हुआ रखनाा चाहिए। इन स्थानो पर फव्वारा या तालाब का निर्माण समृद्धि के लिए मददगार होता है। पर्यावरण के दृष्टिकोण से भी इन स्थान पर छोटे–छोटे पार्क या पानी की व्यवस्था का होना व्यवसायिक विकास के लिए लाभप्रद होता है। लक्ष्मी की असीम कृपा मिलने लगती है। फलस्वरूप आर्थिक स्थिति श्रेष्ठ हो जाती है।

सिनेमा हॉल के दक्षिण और पश्चिम के क्षेत्र को भारी एवं ऊँचा रखना चाहिए जो इसके स्थायित्व एवं विकास के लिए मददगार होता है। सिनेमा हॉल के आंतरिक बनावट में वास्तु के नियमों का इस्तेमाल तरीके से करना चाहिए। परिसर के दक्षिण–पश्चिम में मुख्य अधिकारी, प्रबंध निदेशक या मालिक के लिए जगह निध्रारित करनी चाहिए। कार्यालय के स्वामी का कक्ष सबसे बड़ा अर्थात् अन्य कमरों से बड़ा होना

चाहिए। कार्यालय स्वामी या मुख्य व्यक्ति को बैठने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान कक्ष एवं कमरे के दक्षिण–पश्चिम की दिशा में होता है। इस स्थान पर बैठकर कार्य करने से उचित निर्णय लेने की क्षमताओं एवं शक्तियों में वृद्धि होती है। मुख्य प्रबंधक या मालिक को उतर या पूर्व में मुंह कर कार्य करना

उ

प पू

द

चाहिए। इससे कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

सिनेमा घर में कैंटीन दक्षिण–पूर्व या दक्षिण की क्षेत्र में बनानी चाहिए। आग्नेय दिशा का स्वामी शुक्र ग्रह है जो भगवती अन्नपुर्णा का प्रतिनिधि भी है। अतः इस स्थान पर कैंटीन का होना विशेष लाभप्रद होता है। किसी भी तरह का विद्युतीय उपकरण या सामग्री जैसे ट्रांसफार्मर, जेनरेटर के लिए दक्षिण–पूर्व का क्षेत्र सबसे उपर्युक्त होता है।

सिनेमा हॉल में शौचालय की व्यवस्था उतर–पश्चिम के अलावे दक्षिण–पूर्व तथा नैऋत्य और दक्षिण के बीच में बनाया जा सकता है। शौचालय को मध्य स्थान और ईशान्य क्षेत्र की ओर नही बनाए अन्यथा प्रगति रूक जाएगी। शौचालय में सीट की व्यवस्था पश्चिमी वायव्य या दक्षिण में रखें। यथासंभव सीट को उतर–दक्षिण अक्ष पर रखें।

गाडी के पार्किंग के लिए उतर एवं पूर्व दिशा उपर्युक्त होता है। सिनेमा हॉल के चारो तरफ खुला जगह होना चाहिए। सिनेमा हॉल के परिसर साफ–सुथरा एवं सुंदर रखना चाहिए। सुंदर एवं मनमोहक व्यवस्था दर्शकों को बार–बार आने के लिए आकर्षित करता है।

24. बैंक (Bank)

वास्तुशास्त्र में धन रखने के लिए सबसे उपर्युक्त और शुभ स्थान उतर दिशा को माना गया है। क्योंकि इस दिशा के स्वामी कुबेर हैं। कुबेर समृद्धि की देवी मॉ लक्ष्मी के खजांची हैं। इसलिए बैंक को उतर में रखने की सलाह दी जाती है। ताकि धन एवं समृद्धि का प्रवाह बैंको में निरंतर बना रहे। बैंक का बनावट इस तरह रखें कि उसका सामने वाला हिस्सा पूर्व या उतर की तरफ रहे। बैंक में मुख्य प्रवेश द्वार उतर, ईशान्य या पूर्व तरफ से रखना लाभप्रद होता है।

बैंक में मुख्य शाखा प्रबंधक के लिए दक्षिण–पश्चिम के क्षेत्र में कार्यालय बनानी चाहिए। कार्यालय के आंतरिक बनावट को वास्तु के नियमो को ध्यान में रखकर बनानी चाहिए। प्रबंधक को कमरे के

दक्षिण–पश्चिम में द्वार से थोडी दूर उतर की तरफ चेहरा कर बैठना चाहिए। इससे उनकी कार्यक्षमता एवं कार्यकुशलता निरंतर बनी रहती है।

बैंक में स्वागत कक्ष पूर्व या उतर–पूर्व की तरफ रखनी चाहिए। स्वागत कक्ष के काउंटर पर बैठने वाले

कर्मचारियों का चेहरा उतर या पूर्व की तरफ होना अनिवार्य है। अतिथियों की बैठने के लिए स्थान कक्ष के दक्षिण एवं पश्चिम में बनानी चाहिए।

बैंक में वित्तिय कार्यो के लेन–देन के लिए उतर दिशा सबसे उपर्युक्त दिशा है। इसी स्थान पर जमा एवं निकासी का काउंटर बनानी चाहिए। कैश काउंटर उतर में रखनी चाहिए। कैशियर को सिर्फ उतर या पूर्व तरफ चेहरा कर बैठना चाहिए। कैश बॉक्स को दक्षिण तरफ रखनी चाहिए तथा उसे उतर की तरफ खुलना चाहिए। बैंक में कैश का मुख्य कमरा अर्थात स्ट्रांग रूम तथा लॉकर के लिए दक्षिण की तरफ कमरे बनानी चाहिए। लॉकर तथा कैश को कमरे के दक्षिण या पश्चिम की तरफ रखना चाहिए ,ताकि खुलने पर उसका मुंह उतर या पूर्व तरफ रहे। बैंक में दस्तावेज रखने के लिए सबसे उपर्युक्त जगह दक्षिण–पश्चिम की दिशा है।

सीढियां दक्षिण–पश्चिम, पश्चिम या दक्षिण–पूर्व की तरफ बनाना लाभप्रद होता है। शौचालय पश्चिम या उतर–पश्चिम में रखनी चाहिए। पीने का पानी ईशान्य क्षेत्र या उतर क्षेत्र में रखना शुभफलदायक होता है। बैंको में वाहनों के पार्किंग के लिए सबसे उपर्युक्त स्थान उतर या पूर्व का क्षेत्र है। जमीन की सतह की ढाल उतर या पूर्व की ओर रखनी चाहिए।

वर्तमान समय में बैंकिंग कार्य पूर्णतः कम्प्यूटर पद्धति पर आधारित है। फलस्वरूप इसकी महत्व काफी बढी हुई है। खासकर मास्टर कम्'प्यूटर अर्थात सर्वर जिसमें अन्य कम्प्यूटर नेटवर्किंग के द्वारा जुडे रहते हैं इसके लिए दक्षिण–पूर्व का स्थान निर्धारित करनी चाहिए। साथ ही जेनरेटर कक्ष, इनर्भटर कक्ष एवं अन्य विद्युतिय संयंत्रों के लिए दक्षिण–पूर्व का क्षेत्र उपर्युक्त होता है। वातानुकुलित प्लांटों के लिए दक्षिण–पूर्व या उतर–पश्चिम का स्थान उपर्युक्त होता है।

25. पर्यावरण वास्तु (Environmental Vastu)

किसी भी व्यवसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र के वास्तु को ठीक रखने के लिए उसके आस–पास का पर्यावरण को ठीक होना आवश्यक है। पर्यावरण को ठीक रखने के लिए पेड़ पौधों का होना आवश्यक है। क्योंकि पेड–पौधे का महत्व प्रकृति को संतुलित बनायें रखने के साथ–साथ मानव के लिए भी है। पेड–पौधे पर्यावरण में उपस्थित हानिकारक एवं निषिद्ध गैस भोजन के रूप में ग्रहण कर वातावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाती है। कौन सा पौधा हमारे जीवन के लिए उपयोगी है, कौन सा पौधा लगाने से वातावरण को स्वच्छ बनाया जा सकता है और किन पौधों से वास्तु दोष ठीक किया जा सकता है। इसकी विस्तृत व्याख्या हमें पुराणों एवं प्राचीन ग्रंथो से मिलती है।

अशोक वृक्ष का वास्तु में महत्व

इस वृक्ष को भूखंड के उत्तर में लगाना विशेष शुभ होता है। इसे परिसर में लगाने से अन्य अशुभ वृक्षों का दोष समाप्त होता है।

केले का वास्तु में महत्व

व्यवसायिक एवं औद्योगिक परिसर के चारदीवारी में केले का वृक्ष शुभ होता है। यह वृक्ष ईशान क्षेत्र अत्यधिक शुभ होता है। केले के पास ही तुलसी का पौधा हो तो यह और अधिक शुभ फल देने वाला होता है।

आक (श्वेतार्क)

श्वेतार्क का पौधा दूध (Latex) वाला होता है। वास्तु सिद्धांत के अनुसार में दूध से युक्त पौधों का व्यवसायिक एवं औद्योगिक परिसर की सीमा में होना अशुभ होता है। किंतु आर्क इसका अपवाद है। श्वेतार्क का पौधा रोपें नहीं बल्कि यदि वह सीमा में स्वतः उग आए तो इसे निकालने की बजाय हल्दी, अक्षत और जल से इसकी सेवा करें। ऐसा करने से इस पौधे की बरकत से सुख शांति प्राप्त होती है। ऐसी भी मान्यता है कि जिसके परिसर में श्वेतार्क का पौधा फलता फूलता है वहां सदैव बरकत बनी रहती है। उस भूमि में गुप्त धन होता है।

कमल का वास्तु में महत्व

व्यवसायिक एवं औद्योगिक परिसर के ईशान क्षेत्र में, मूल कोण को छोड़कर एक छोटा सा तालाब बनाकर उसमें कमल का पोषण करने से उसमें लक्ष्मी का वास होता है और ईश्वर की कृपा से अमन–चैन बना रहता है। थोडी सी मेहनत करने पर ज्यादा सफलता मिलती है।

पीपल, गूलर व पाकड़ का वास्तु में महत्व

पीपल का वृक्ष पश्चिम दिशा में श्रेष्ठ फल देने वाला माना गया है। पीपल 24 घंटे ऑक्सीजन छोडता

है तथा कार्बन डायऑक्साइड एवं अन्य गैसो को ग्रहण करता रहता है। अर्थात पर्यावरण में उत्पन्न होने वाले हानिकारक गैसों का ग्रहण कर वातावरण को शुद्ध एवं स्वच्छ बनाता है। इस कारण औद्योगिक परिसर के पश्चिम के दिशा में पीपल का रोपण करना लाभप्रद होता है। ताकि पर्यावरण की स्वच्छता बनी रहे।

नारियल

नारियल के वृक्ष का घर की सीमा में होना शुभ होता है। घर की सीमा में इस वृक्ष के रहने से वहां के रहने वालों की मान प्रतिष्ठा एवं उन्नति में वृद्वि होती है।

बरगद

वास्तु की दृष्टि से यह एक और महत्वपूर्ण वृक्ष है। किसी भी प्रतिष्ठान के पूर्व में वट वृक्ष का होना अत्यंत शुभ होता है सारी कामनाएं पूरी करता है। परंतु भवन पर इसकी छाया नहीं पड़नी चाहिए। वट वृक्ष का प्रतिष्ठान के पश्चिम की तरफ होना अशुभ कहा गया है।

आंवले

वास्तु की दृष्टि से आंवले के वृक्ष का व्यवसायिक एवं औद्योगिक परिसर की सीमा में होना शुभ होता है। इस वृक्ष को लगाने से अशुभ वृक्षों का अशुभ फल भी नष्ट होता है।

जामुन

वास्तु की दृष्टि से जामुन के वृक्ष को परिसर की सीमा के दक्षिण में होना शुभ कहा गया है। अन्य दिशाओं में इसका होना समफलदायी होता है। प्रतिष्ठान के उत्तर में जामुन वृक्ष होने से उसके साथ एक अनार अथवा आंवला भी अवश्य लगाएं।

आम

वास्तु की दृष्टि से आम का वृक्ष परिसर की सीमा में शुभ नहीं माना गया है। फिर भी यदि यह हो तो इसे काटना नहीं चाहिए बल्कि नित्य इसकी जड़ों में काले तिल डाल कर जल चढ़ाना चाहिए। साथ ही परिसर की सीमा में ही निर्गुंडी का एक पौधा लगा देना चाहिए। ऐसा करने से इसका अशुभत्व समाप्त हो जाता है।

नीम

वायव्य कोण में नीम के वृक्ष का होना अति शुभ होता है। पर्यावरण को शुद्ध एवं परिस्कृत कर अच्छे स्वास्थ्य में वृद्धि देता है।

बिल्व

बेल के वृक्ष को सीमा में होना अति शुभ होता है। भगवान शिवजी का परम प्रिय बेल का वृक्ष जिस जिस परिसर में होता है वहां धन संपदा की देवी लक्ष्मी पीढ़ियों तक वास करती हैं।

शुभ वृक्ष

व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रतिष्ठान के सीमा में अशोक, मौलश्री, शमी, चंपा, अनार, सुपारी, कटहल, केतकी, मालती, कमल, चमेली, बेली, जूही, गेंदा, ऑवला, अंगूर, अनार, हरसिंगार, नारियल, केला आदि

के वृक्ष होने से लक्ष्मी का विस्तार होता है। और उनकी कृपा बनी रहती है।

गुलाब

वास्तु में शूल वाले पौधे का प्रतिष्ठान में होना अशुभ माना गया है। किंतु गुलाब का पौधा अशुभ नहीं होता। घर में बेलिया गुलाब अर्थात् ऐसा गुलाब जो बेल के रूप में होता है, का होना शुभ नहीं होता है।

वृक्ष लगाने की कुछ खास बातें

1. मूल द्वार को लताओं, फूल, पौधों आदि से सदैव सुशोभित रखना चाहिए। ऐसा करने से उस स्थान पर रहने वाले सुख एवं शांति का अनुभव करते हैं।
2. मुख्य द्वार के समक्ष किसी पौधे का होना द्वार वेध का द्योतक हो है और अतः, इस स्थान पर कोई पौधा न लगाएं।
3. घर के द्वार और पिछवाड़े को मिलाने वाले घर के मध्य अक्ष तथा उसके समकोणीय अक्ष की ठीक सीध में भी किसी पौधे का रोपण न करें। ऐसा पौधा प्रतिकूलता देता है।
4. किसी भी तरह का मरुस्थलीय पौधे का रोपण एवं पोषण भूखंड की सीमा में कतई न हो। ऐसा पौधा घर में लगाने से तनाव में वृद्धि होती है। और आपसी संबंधों में कड़वाहट रहती है। हालांकि कई लोग कैक्टस को बड़े शौक से गमले में लगाते हैं, जो वर्जित है।
5. बेर का वृक्ष जिस प्रतिष्ठान में लगा रहता है उसमें कार्य करने वाले कर्मचारियों को आपस में शत्रुता बनी रहती है और शत्रु से परेशान रहते हैं।
6. किसी भी व्यवसायिक एवं औद्योगिक परिसर के सीमा में तुलसी का पौधा शुभफलदायक होता है। यह पौघा पर्यावरण को दूषित होने से बचाता है।
7. शैक्षिक कार्य से जुड़े लोगों को प्रतिष्ठान की सीमा में आंवला, पाकड़, पारस, पीपल एवं गूलर एक या अधिक पेड़ लगाकर उनका पोषण अवश्य करना चाहिए परंतु भवन पर इन पौधों की छाया न पड़े। ये पेड़ ऊपर वर्णित शुभ दिशा में लगाने चाहिए।
8. व्यापारी वर्ग के लोगों को शिरीष, नीम एवं बेल के वृक्षों का पालन पोषण करना चाहिए। ये वृक्ष भी शुभ दिशाओं में हों।
9. किसी भी भूखंड की सीमा में पश्चिम की ओर लगाया और पोषित बेल का वृक्ष वहां कार्य करने वाले के लिए सुखदायक होता है।
10. औद्योगिक एवं व्यवसायिक परिसर में कहीं भी ऊपर बढ़ने वाली लता शुभ होती है। इसी प्रकार यदि कोई मनी प्लांट हो तो उसका आरोहण शुभ होता है।
11. अशुभ वृक्ष को काटना संभव न हो तो उसके समीप अन्य शुभदायक वृक्षों को लगा देने से उसका दोष दूर हो जाता है। परंतु यह नियम कांटेदार कैक्टस के पौधों पर लागू नहीं होता है।

26. नगर वास्तु (City Vastu)

शक्तिशाली एवं समृद्ध शहर के उन्नति के कारणों का जब हम अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि उस शहर का निर्माण वास्तु के सिद्धांतों के अनुरूप है। अतः किसी भी राष्ट्र, शहर या प्रांत के विकास एवं प्रगति में उसके वास्तु का अनुकूल होना आवश्यक है। अन्यथा शहर के प्रगति अवरूद्ध एवं बाधित रहती है तथा शहर में निवास करने वाले लोगों के सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक विकास की स्थिति अच्छी नही रहती है।

गया के वास्तु का जहां तक सवाल है गया के दक्षिण एवं पश्चिम में स्थित पहाडियॉ पूर्व की ओर विशाल
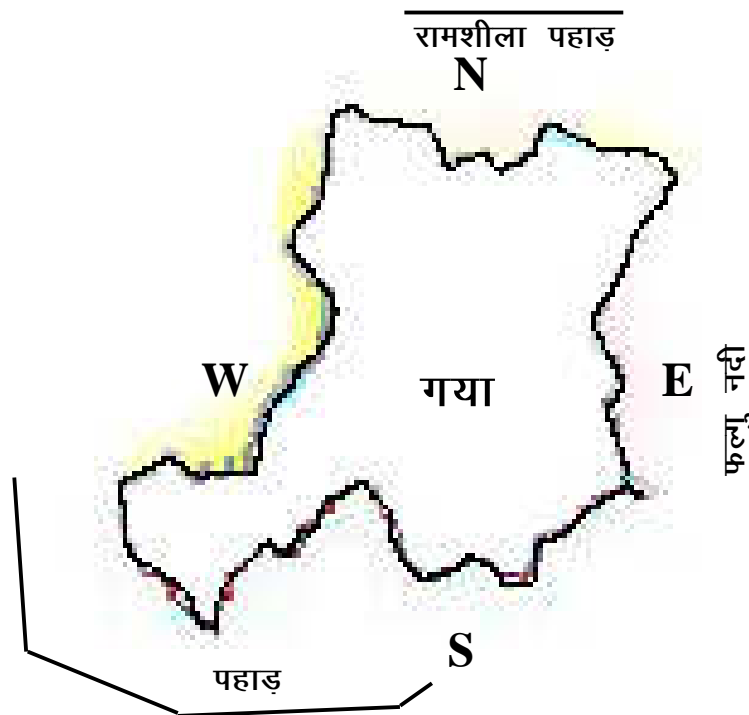
फल्गु नदी। पूर्वी भाग का नीचा एवं खुला होना गया के स्थायित्व प्रसिद्धि, अध्यात्मिक विकास एवं मान–सम्मान के लिए एक बहुत बडा कारण है। तभी तो गया को गयाजी के नाम से जाना जाता है। दूर–दूर से आकर अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए पिंडदान करते है। जिसके फलस्वरूप गया की प्रसिद्धि एवं मान–सम्मान देश–विदेश तक फैली हुई है एवं सदैव रहेगी।

गया की वास्तु में जो प्रतिकूलता है वह उतर एवं उतर–पूर्व में रामशिला पहाड़ का होना है। जो लोगों

के मानसिक एवं आर्थिक विकास में बहुत बड़ा बाधा है।
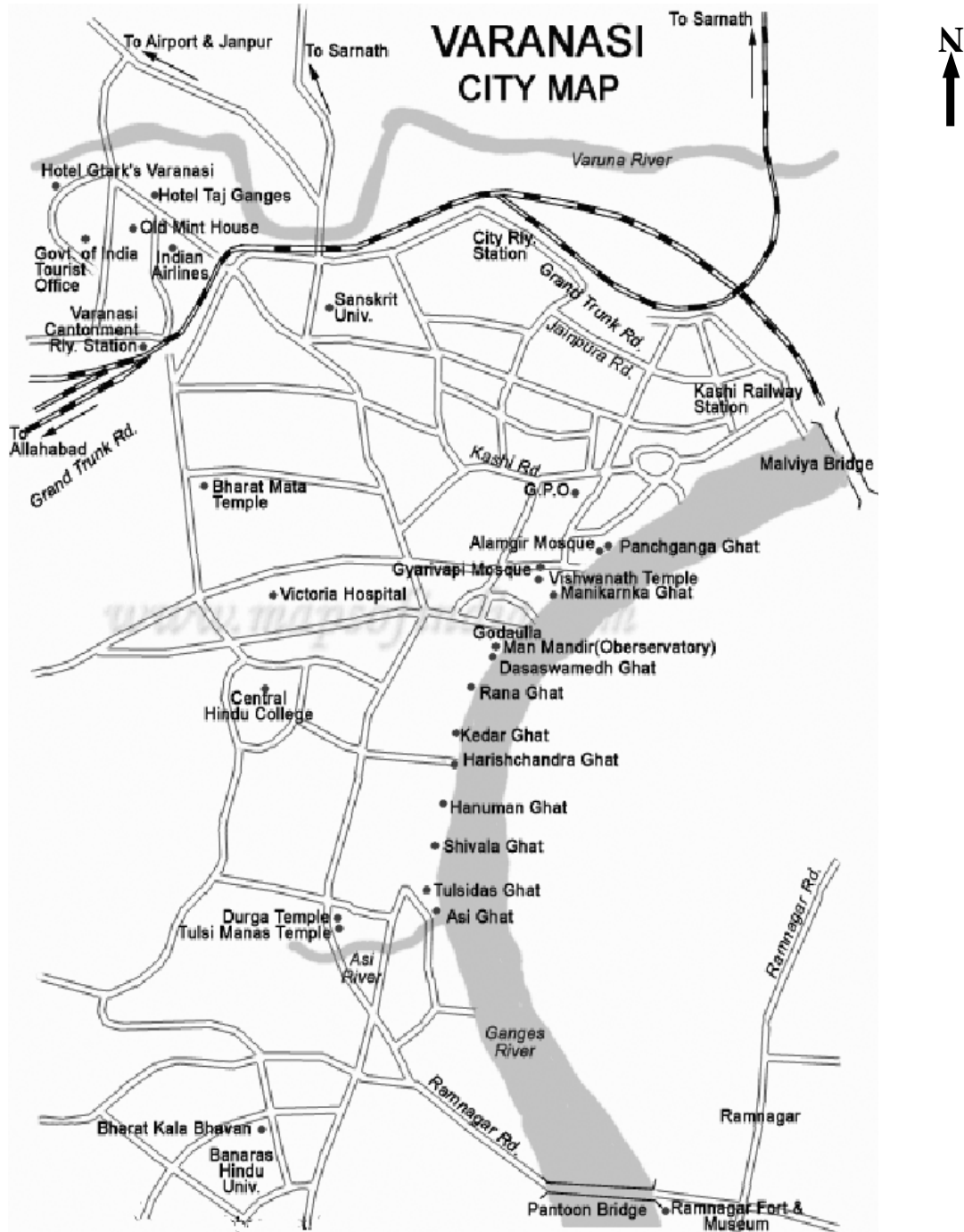
वाराणसी :— वाराणसी, काशी, या बनारस भारत देश के उतर प्रदेश में स्थित अध्यात्मिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व रखने वाला प्राचीन शहर है। इसका पुराना नाम काशी है। दो नदियों वरूणा और असि के मध्य बसा होने के कारण इसका नाम वरूणा+असि = वाराणसी पड़ा। वाराणसी गंगा नदी के किनारे स्थित है। गंगा नदी वाराणसी की जीवन रेखा है। भारत की सबसे बडी एवं पवित्र नदी गंगा करीब 2,525 किमी0 की दूरी तय कर गोमुख से गंगासागर तक जाती है। इस पूरी रास्ते में गंगा उतर से दक्षिण की ओर बहती है। केवल वाराणसी में ही गंगा नदी दक्षिण से उतर दिशा में बहती है। मंदिरो की नगरी कही जाने वाली वाराणसी अथवा काशी पर्यटन के क्षेत्र में देश—विदेश में बनारस की नाम से जानी जाती है। इसकी महिमा वेदो से लेकर पुराणों में पाई जाती है।

वास्तु की दृष्टिकोण से इस शहर का जब अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि शहर के पूर्व की ओर उतर वाहिनी गंगा, दक्षिण से उतर की ओर बह रही है। अर्थात् पूरा शहर गंगा के पश्चिम की ओर अवस्थित है। फलस्रूवरूप प्राचीनकाल से आजतक अध्यात्मिक एवं कर्मकाण्डीय ज्ञान में विश्व को मार्गदर्शन देते आ रहा है तथा धार्मिक एवं अध्यात्मिक ज्ञान के मार्तण्ड के रूप में जाना जाता है। शहर के उतर में पश्चिम से पूर्व की ओर वरूणा नदी बह रही है जिसका संगम स्थल गंगा में उतर पूर्व की ओर हो रही है। पूरा शहर का उतर—पूर्व नीचा है। साथ ही उतर—पूर्व का क्षेत्र फैला एवं विस्तारित हैं। जिसके फलस्वरूप इस शहर में निवास करने वाले का मानसिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति श्रेष्ठ है। पूर्व में गंगा की रहने के कारण इस शहर की यश एंवं प्रतिष्ठा प्राचीनकाल से आजतक दूर—दूर तक फैली हुई है एवं रहेगी। धार्मिक उन्नति का यह भी एक प्रमुख कारण है। उतर दिशा में राजघाट से प्रारंभ होकर दक्षिण में अस्सीघाट तक 84 घाट है। सभी घाट पूर्वाभिमुख है। फलस्वरूप घाटों की प्रसिद्धि एवं महिमा देखते बनती है। काशी के उतर—पूर्व में वरूणा एवं गंगा नदी का संगम भी अध्यात्मिक उन्नति का एक प्रमुख कारण है। उतर—पूर्व का क्षेत्र समृद्ध होने के कारण यहां पर निवास करने वाले लोग मधुर वाणी का प्रयोग अधिकांशतः करते है। साथ ही बडों को आदर एवं सत्कार देते हैं। इस शहर का उतर का क्षेत्र वास्तु के दृष्टिकोण से उन्नत है जिसके फलस्वरूप यहां के लोग सहृदयी, भावुक एवं मानसिक रूप से श्रेष्ठ हैं। इनकी विचार एवं सोच काफी उच्च कोटि का है। उतर—पश्चिम का क्षेत्र विस्तारित होने के कारण अतिथिगण को आतिथ्य देने में आगे रहते है।

काशी शहर के दक्षिण एवं पश्चिम में स्थित बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय का भौगोलिक स्थिति का अवलोकन करने पर पाते हैं कि उतर—पूर्व का क्षेत्र विस्तारित अर्थात फैला हुआ है। जिसके फलस्वरूप अध्ययनरत छात्र उच्च कोटि के बौद्धिक स्तर वाले होते हैं।

पुणे :– पुणे को महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है। यह भारत का छठा सबसे बडा शहर है। पुणे एक महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र है। भारत की सर्वाधिक प्रवासी वाहन और औद्योगिक वाहन बनाने वाले कंपनी टाटा मोटर्स, कायनेटिक, डायमलर कलस्लर फोर्स मोटर्स जैसे उद्योग पुणे में स्थित है। 1990 के दशक में इन्फोसिस, टाटा कन्सलटेंसी, सर्विसेज, आई बी एम जैसे प्रसिद्ध सौफ्टवेर कंपनियों अपना उद्योग खोले है। जिसके फलस्वरूप भारत के एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। पुणे फिल्म इस्टिचयूट भी काफी प्रसिद्ध है। पुणे शहर में लगभग सभी विषयों के उच्च शिक्षा का सुविधा उपलब्ध है जिसके फलस्वरूप इसे पूरब का ऑक्सफोर्ड कहा जाता है।
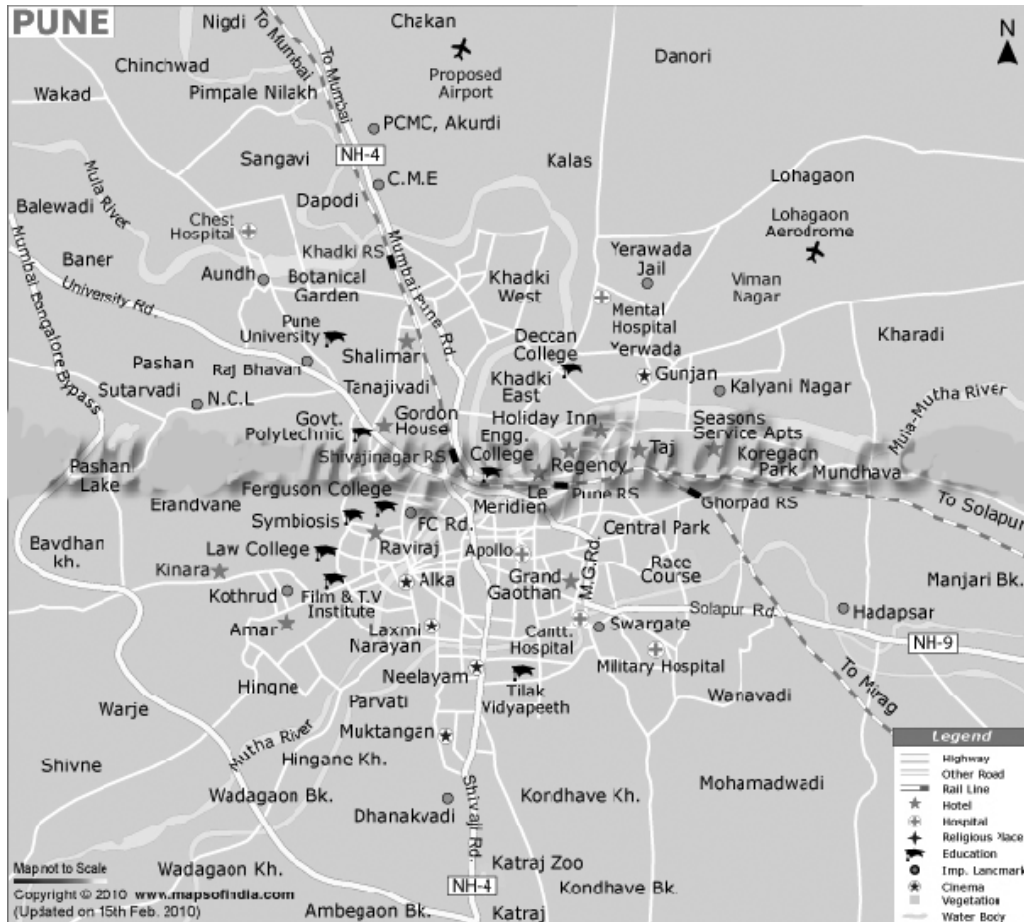
पुणे का वास्तु का अवलोकन करने पर पाते हैं कि पूरी शहर तकरीबन वर्गाकार क्षेत्र में फैला हुआ है। जो वास्तु की दृष्टिकोण से काफी अच्छा है। सिम्बॉसिस कॉलेज जो पूरे भारत में प्रसिद्ध है तकरीबन शहर के पश्चिम की ओर स्थित है। जो कि स्थायित्व के साथ इसका विकास कर रहा है। उतर–पूर्व के क्षेत्र में एयरपोर्ट होने के कारण खुला हुआ है जो कि शिक्षा का मजबूत स्तर प्रदान कर रहा है।

दिल्ली :— यमुना नदी के पश्चिम में स्थित दिल्ली भारत की राजधानी है। इसे भारत का हृदय कहा जाता है। दिल्ली को महाभारतकालीन युग में इन्द्रप्रस्थ कहा जाता था। महाभारत काल में यह पांडव की राजधानी हुआ करती थी। मुगलों से 1803 में दिल्ली की सता अंग्रेजों के हाथ चली गयी। अंग्रेजो के शासनकाल में भारत की राजधानी दिल्ली से कलकत्ता बन गयी थी। 1911 में ब्रिटीश साम्राज्य की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली पुनः स्थानांतरित हो गयी तब से आजतक दिल्ली भारत की राजधानी बनी हुई है।

दिल्ली के नक्शे को अवलोकन करने पर पाते हैं कि दिल्ली यमुना नदी के पश्चिम में स्थित है। दिल्ली के पूर्व एवं उतर–पूर्व में नदी का होना वास्तु की दृष्टिकोण से लाभप्रद है। दिल्ली का उतर दिशा बढा हुआ है जिसके फलस्वरूप आर्थिक दृष्टिकोण से संपन्नता एवं समृद्धि देखते बनती है। यहां पर निवास करने वाले लोगों का बौद्धिक स्थिति श्रेष्ठ होता है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है। फलस्वरूप व्यवसायिक अवसर का बेहतर तरीके से उपयोग कर पाते हैं। पूर्व दिशा का श्रेष्ठ होना यहां मान–सम्मान, प्रसिद्धि एवं विकास के लिए मददगार साबित हुआ है। विशेषकर यमुना नदी के पश्चिम का क्षेत्र का विकास एवं प्रसिद्धि श्रेष्ठतम् बनी हुई है। जामा मस्जिद एवं लाल किला के पूर्व में नदी का होना इसकी प्रसिद्धि एवं ख्याति कालांतर से आजतक देखने को मिल रही है। दिल्ली का नै़ऋत्य का थोडा कटा हुआ होना अस्थायित्व का परिचायक है। फलस्वरूप प्राचीनकाल से आजतक यह शहर विदेशी आक्रमण एवं राजनीतिज्ञों का शिकार हुआ। लेकिन दिल्ली का दक्षिण का क्षेत्र बढा हुआ है जिसके फलस्वरूप मान–सम्मान एवं प्रसिद्धि प्राचीनकाल से आजतक बनी हुई है। दक्षिण–पूर्व का क्षेत्र का बढा होना विकास एवं विस्तार के लिए लाभप्रद है। परिश्रम के अनुपात में लोगों को सफलता मिलती है।

आगरा :— आगरा उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख पर्यटक शहर है। यहां पर देश–विदेश के पर्यटक आते हैं। इसकी प्रसिद्धि ताजमहल, आगरा की किला, मानसिक आरोग्यशाला को लेकर देश–विदेश में है। वास्तु के दृष्टिकोण से आगरा शहर के उत्तर से लेकर पूर्व की ओर बहने वाली यमुना नदी इसके प्रसिद्धि एवं ख्याति में वृद्धि कर रहा है। जिसके फलस्वरूप पूरे विश्व में इसकी ख्याति है। विश्व के सातवें आश्चर्य के रूप में प्रसिद्ध ताजमहल के उत्तर में स्थित यमुना नदी इसके ख्याति को विश्व विख्यात बना दिया। आगरा किला के ठीक पूर्व में यमुना नदी है। दयाल बाग जो अपने अनुपम ख्याति को समेटे हुए है आगरा के उत्तर–पूर्व में स्थित होकर अपने आध्यात्मिक पहचान को बनाए हुए है।

27. फेंगशुई
Feng-Shui

Five thousand years old Feng Shui has played an important role in chinese, japanese culture and their progress. Now Fengshui is becoming more popoular all over the world due to its effective result.

चीनी भाषा में वास्तु शास्त्र को फेंग सुई कहा गया है, जो दो शब्दों का सम्मिश्रण (Wind-Water) है और जिसका शाब्दिक अर्थ जल एवं वायु है। फेंगशुई अपने देश के भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर जल, अग्नि , पृथ्वी लकडी और धातु को पंचतत्व माना है। फेंगशुई के पांचो तत्व कुछ विशेष महत्व रखते हैं और इनका कुछ खास दिशाओं पर स्वामित्व भी होता है। फेंगशुई के अनुसार लकडी का पूर्व, धातु का पश्चिम,जल का उतर, अग्नि का दक्षिण और पृथ्वी का दक्षिण पश्चिम दिशा पर स्वामीतत्व होता है। हमारे चारों तरफ जो उर्जायें प्रवाहित हो रही है उसका उपयोग एक खुशनुमा स्वस्थ और समृद्व जीवन के लिए किया जाए यही फेंगशुई का सिद्वांत है। फेंगशुई चीन देश का वास्तु शास्त्र है यह एक रहस्यमयी चीनी कला है जो ताओ सिद्वांत पर आधारित है यह हमारे व्यक्तिगत वातावरण के सामंजस्य को संतुलित करता है। फेंगशुई के मूल ग्रंथ चीनी भाषा में है अंग्रेजी में इन ग्रंथो का अनुवाद किया गया है। पुनः अंग्रेजी से भारतीय भाषा में अनुवाद हुए है और हो रहे है। मूलतः यह भारतीय वास्तु विघा का शास्त्र है जो भारतीय दर्शन पर ही आधारित है यह भारत से तिब्बत के रास्ते हुए चीन पहुॅंचा और वहॉ इसका प्रचार –प्रसार हुआ अर्थात फेंगशुई भारतीय संस्कृति से काफी प्रभावित है विशेषकर बौद्व धर्म से। चीनी लोग मानवीय जीवन में प्राप्त होने वाले यश या अपयश को पृथ्वी से प्राप्त होने वाली शक्तियों से जोड़ते हैं। वे मानवीय कृतियों को विशेष महत्व नहीं देते। समृद्धि, आरोग्य एवं दैव ये तीनों बातें पृथ्वी से प्राप्त होने वाली हवा और पानी से जुड़ी हुई हैं।

पृथ्वी पर एक अदृश्य शक्ति विद्यमान है जिसका वर्णन आधुनिक विज्ञान में गुरूत्वाकर्षण एवं विद्युत चुम्बकीय बलों के रूप में किया गया है इस अदृश्य शक्ति के कारण उर्जा सदैव सभी जगहों पर प्रवाहित होते रहती है। इस उर्जा प्रवाह को चीनी भाषा में की (Qi) कहते है। इस अदृश्य शक्ति को दो भागों में विभाजित किया गया है। यिन (Yin) ऋृणात्मक (-) और यांग (yang) धनात्मक (+) ये दोनो एक दूसरे के पूरक हैं साथ ही दोनों की अपनी अपनी गुरूत्वाकर्षण हैं और दोनों का एक दूसरे के बिना कोई अस्तित्व नही है। धनात्मक भूगर्भीय शक्ति को यांग और ऋृणात्मक भूगर्भीय शक्ति को यिन कहते है। इन भूगर्भीय शक्ति को वे एक चुंबकीय कंपास के माध्यम से खोज निकालते हैं जिसे वे लूओपान (Luopan) कहते हैं। यिन (yin) और यांग (yang) संपूर्ण ब्रह्मांड का नियमन करने वाली पौराणिक शक्ति है। यिन और यांग विरोधी तत्व की दो विभिन्न शक्तियां हैं। यिन अंधकार का प्रतीक है तो यांग संवेदनशील प्रकाश तत्व है। यिन स्त्री तत्व है तो यांग पुरुष तत्व। चीनी डॉक्टर के अनुसार शरीर

के भीतर यिन तत्व और शरीर के बाहर यांग तत्व विद्यमान रहता है। जब शरीर में विकार होता है तब यिन और योंग में से किसी तत्व में विकार आ जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी में चुंबकीय शक्ति होती है, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य के शरीर में भी चुंबकीय तरंगें होती हैं। चीनी मान्यताओं में इस शक्ति को 'की' (Qi) कहते हैं। मानवीय शरीर में 'की' (Qi) भी धनात्मक एवं ॠणात्मक दोनों प्रकार की होती है। किसी के शरीर में इसका सही संतुलन उसे स्वस्थ रखता है। एक तरफ मानवीय की (Qi) मनुष्य को शक्ति, सद्‌बुद्धि सुंदर शारीरिक क्षमता आदि देती है, तो दूसरी तरफ पृथ्वी निर्माण की तकनीकी के साथ–साथ आंतरिक साज–सज्जा, फर्नीचर, तस्वीरों, पर्दों एवं डेकोरेशन सामग्री का विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि भूगर्भीय शक्ति (Qi) के साथ–साथ आंतरिक संरचना की तरंगों (Qi) का भी सम्यक ताल–मेल हो। यही ताल मेल आवासीय भवन, एपार्टमेंट, दुकान, ऑफिस, होटल, बगीचा, उद्योग, कॉम्प्लेक्स की भूगर्भीय एवं आंतरिक संरचना शक्ति के संतुलन एवं समतुल्यता को बढ़ाता हुआ उन्हें दीर्घजीवी बनाता है। चीनी दर्शन के अनुसार समस्त ब्रहाण्ड यिन और यांग नाम की ऋणात्मक और धनात्मक शक्तियों से आच्छादित है। ये अलग–अलग दिशाओं के स्वामी हैं और इनके अपने–अपने प्रभाव है। इनका विवरण निम्न प्रकार है।

यिन– स्त्री शक्ति	**यांग– पुरूष शक्ति**
नकारात्मक	सकारात्मक
निष्क्रिय	सक्रिय
ठंडे रंग	गरम रंग
अंधकार	चमक
रात्रि	दिन
चंद्रमा	सूर्य
छाया	प्रकाश
नरम पदार्थ	कड़े पदार्थ
अचल प्रकृति	सचल प्रकृति

फेंग सुई के पंच महातत्व

	NW	N	NE	
	धातु	जल	पृथ्वी	
W	धातु	पृथ्वी	काष्ठ	E
	पृथ्वी	अग्नि	काष्ठ	
	SW	S	SE	

दिशा और प्रभाव

	NW	N	NE	
	सहायक व मित्र	व्यवसाय	ज्ञान व शिक्षा	
W	सृजनात्मक व संतान	संतुलन	स्वास्थ्य पारिवारिक सम्बंध	E
	विवाह दम्पति संबंध	प्रसिद्धि	संपत्ति	
	SW	S	SE	

फेंगशुई के पांच तत्व

चीनी दर्शन के अनुसार पूरा ब्रह्मांड पांच मूल तत्वों से निर्मित है– अग्नि, जल, काष्ठ, धातु और मिट्टी। ये पांचों तत्व प्रकृति की शक्ति के साथ अपने जटिल अन्योन्याश्रित संबंधों तथा नाजुक संतुलन का प्रतिनिधित्व करते हैं। वास्तु में इन तत्वों का सही ताल मेल रखने पर उसमें रहने वाले का जीवन सुख शांति एवं आनंदपूर्वक व्यतीत होता है। अन्यथा दुख एवं परेशानी पीछे लगी रहती है।

काष्ठः–

काष्ठ पोषक पारिवारिक मानसिकता तथा लचीले स्वभाव का द्योतक है । यह प्रायः विकाश से जुडा रहता है। काष्ठ का सृजन करने वाले पुरूष उर्जावान होते है। ऐसे पुरूष नित्य नयी योजनाओं को जन्म देते है साथ ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण सफलता भी प्राप्त करते है। कलात्मकता की ओर इनका झुकाव होता है। इसकी विपरित यदि काष्ठ की प्रतिकुलता रहने पर व्यक्ति धैर्यहीन और क्रोधी होते है। वे जिस काम को आरंभ करते है उसे पुरा नहीं कर पाते। इस तत्व का रंग हरा दिशा पूर्व और ऋतु वसंत है। यह पेड पौधे के विकास का सूचक है इसकी आकृति सीधी आयताकार होती है।

अग्निः–

अग्नि उर्जा से परिपूर्ण वातावरण प्रेरणादायक उत्साह से परिपूर्ण बुद्विमान एवं समझदार बनाती है। यह प्रकाश गर्माहट और खुशियॉ ला सकती है तो दाह,धमाका और विनाश भी कर सकती है। अग्नि तत्व सम्मान और न्याय का साथ देता है, किन्तु इसके विपरीत यह युद्ध और आक्रमण का साथ भी देता है। अग्नि का सृजन करने वाले पुरूष नेता और क्रियाशाील होते है। इस तत्व की अनुकुलता रहने पर क्रियाशील, हंसमुख और धैर्यवान होते है। इस तत्व की प्रतिकुलता रहने पर असंयमी, शोषक और स्वार्थी किस्म के होते है। इसकी दिशा दक्षिण रंग लाल और ऋतु ग्रीष्म है। गर्मी में यह तत्व सर्वाधिक समृद्वशाली होता है इसकी आकृति त्रिभुजाकार है।

पृथ्वीः–

पृथ्वी तत्व प्रधान लोगों को दूसरे लोगों का पोषण एवं सहायता करने में आनंद मिलता है।ये भरोसेमंद निष्ठावान, दयालु एवं विनम्र स्वभाव के होते है। इस तत्व के अनुकूल प्रभाव से प्रभावित लोग सहयोगी, व्यवहारिक, क्रियाशील, ईमानदार, धैर्यवान और निष्ठावान होते है। जबकि प्रतिकुल प्रभाव से प्रभावित रहने पर छोटी–छोटी बातें पर चिंता करने वाले तथा सनकी स्वभाव के होते है। साथ ही शोषक एवं परपीड़क होते है। इस तत्व का रंग पीला और स्थान केन्द्रीय माना गया है। इसका अस्तित्व पूरे वर्ष रहता है। इसकी आकृति वर्गाकार, घनाकार होती है।

धातुः–

धातु का संबंध प्रचुरता तथा भौतिक सफलता से होता है। साथ ही यह स्पष्ट विचार विस्तृत जानकारी के प्रति चौकसी से भी जुडा होता है। धातु प्रधान व्यक्ति भावी योजनाएं बनाने में सदैव आगे रहते है।

साथ ही धातु प्रधान व्यक्ति भावी योजना में आनंद लेने वाले एवं सौंदर्य भरे वातावरण में बेहतर काम करने वाले होते है। अर्थात ये अच्छे प्रबंधक होते है। ऐसे व्यक्ति बहुत ही धीर–गंभीर होते है तथा बहुत ही कठिनाई से किसी की मदद करने को राजी होते है। यह तत्व सफेद एवं सुनहरे रंग का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी दिशा पश्चिम तथा ऋतु शरद–पतझड है। पतझड या शरद में काष्ठ तत्व कमजोर पड जाता है। धातु काष्ठ को नष्ट कर शक्तिशाली हो जाता है। इसकी आकृति गोलाकार, बेलनाकार होती है।

जलः–

जल तत्व समाजिक क्रियाकलापो, दूरसंचार तथा बौद्धिकता को दर्शाता है। यह अंतः प्रेंरणा से युक्त संवेदनशील होता है। जल तत्व आंतरिकता, कला और खुबसूरती का प्रतीक है। इसका सृजन करने वाल व्यक्ति अध्यात्मिकता तथा अध्ययन में रूची रखते है तथा इस तत्व वाले व्यक्ति बुद्धिजीवी व्यवहार कुशल शांतिप्रिय,सौन्दर्य प्रिय समाजिक और दुसरों के हमदर्द होते है। साथ ही जल तत्व से प्रभावित व्यक्ति कुटनीतिक और अपने प्रभाव से काम निकालने वाले दुसरों की मनोदशा के प्रति संवेदनशील होते हैं। वे जोखित उठाते हैं और लाभकारी समझौते करते है। इस तत्व का रंग काला एवं नीला दिशा उतर एवं ऋतु शीत है। हिमपात के समय यह तत्व ज्यादा शक्तिशाली होता है। इसकी आकृति तरंग की तरह होती है।

फेंगशुई एवं वास्तु में अंतरः–

चीन सूदुर पूर्व में स्थित देश है। इसके उतर में मंगोलिया का ठंडा रेगिस्तान है। पूर्व की ओर खुला प्रशांत महासागर है। वहॉ उतर की ओर से बहुत ठंडी हवाएं आती है जो अपने साथ ढेर सारे पीली धुल उडाकर लाती है इसलिए उतर दिशा को वहॉ शुभ नहीं माना जाता तथा भवनों में उतर की ओर की ओर खुलते दरवाजे, खिडकियॉ, बरामदे रखना आदि अच्छा नही समझा जाता है। पूर्व और दक्षिण–पूर्व की ओर से गर्मीयों में शीतल सुहावनी समुद्री हवाएं आती है इसलिए पूर्व और पूर्व–दक्षिण दिशाओं को वहॉ शुभ माना जाता है। इसके विपरीत भारत में उतर को शुभ माना जाता है।

फेंगशुई एवं वास्तु में समानताएंः–

दोनों ही शास्त्रों ने पूर्व दिशा को अच्छा माना है तथा पांच तत्व एवं अपनी–अपनी ज्योतिष विद्या को महत्व दिया है। दोनों ही पद्धतियों ने मनुष्य जीवन का प्रकृति से संतुलन किया है तथा दोनों ही शास्त्रों ने उतर–पूर्व को ज्ञान एवं शिक्षा की दिशा माना है। भारतीय एवं चीनी दोनों शास्त्रों ने दक्षिण दिशा को लाल रंग से संकेत किया है तथा दोनों ही शास्त्रों में जनकल्याण की भावना निहित है। साथ ही दोनों शास्त्रों में सुधार की उपाय अपनी–अपनी जगह शुभ परिणाम देते है।

बागुआ पद्धति

बागुआ एक अष्टभुजाकार चार्ट है। चीनी भाषा में बागुआ का मतलब है– आठ ओर वाला जो कंपास की आठ दिशाओं को दिखाता है। कंपास का प्रत्येक बिंदु जीवन के अलग–अलग पहलुओं का परिचालन करता है जैसे पेशा, ज्ञान, स्वास्थ्य, धन, ख्याति, विवाह, संतान तथा सहायता करने वाले लोग। बागुआ चार्ट के बीचो बीच ताइची होती है जो गोलाकार के बीच यिन और यैंग का संकेत देती है। यह पूर्णता का प्रतीक है और इस बात का स्मरण कराती है कि संतुलन अनिवार्य है।

कंपास की दिशाओं, विशिष्टताओं और उनके प्रभाव क्षेत्र का ज्ञान होने पर आप प्रतिकूल परिस्थितियों के
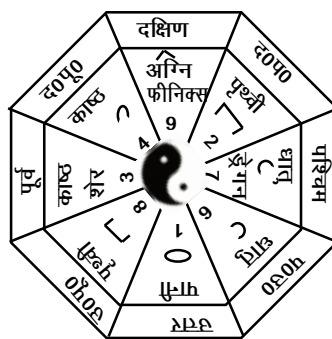
उपचार हेतु और लक्ष्य प्राप्ति में सहायक क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक फेर बदल कर सकते हैं।

दक्षिण

व्यक्ति की ख्याति आथवा प्रतिष्ठा, भाग्य तथा उत्सवों का परिचालन दक्षिण दिशा द्वारा होता है। दक्षिण का मौसम ग्रीष्म, वर्ण लाल, अंक नौ, मूल तत्व अग्नि तथा जीव कभी न मरने वाली काल्पनिक चिड़िया अमरपक्षी है।

उत्तर

उत्तर दिशा पेशे तथा व्यावसायिक सफलता का परिचालन करती है और पेशे में लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रमुख दिशाओं में से एक है। उत्तर का मौसम शीत, वर्ण काला, मूल तत्व जल, अंक एक तथा जीव कछुआ है। अपने मजबूत संरक्षणात्मक आवरण के कारण कछुआ स्थिरता, सुरक्षा तथा लंबी आयु जैसे विशेषताओं के लिए जाना जाता है।

पूर्व

यह दिशा स्वास्थ्य, बुद्धि तथा पारिवारिक जीवन का परिचालन करती है। इसकी ऋतु वसंत, वर्ण हरा तथा हल्का नीला, मूल तत्व काष्ठ, अंक तीन तथा जीव शक्तिशाली और प्रेरणादायक कालिय (परदार सांप) है।

पश्चिम

संतान, संतति, भाग्य, आनंद तथा रचनात्मकता का परिचालन करने वाली दिशा पश्चिम है। इसकी ऋतु

पतझड, वर्ण श्वेत, मूल तत्व धातु, अंक सात तथा जीव भयावह सफेद शेर है।

दक्षिण पूर्व

यद्यपि बागुआ के आधे कंपास बिंदु किसी न किसी रूप में धन संपत्ति को प्रभावित करते हैं, लेकिन दक्षिण पूर्व सबसे शक्तिशाली और प्रत्यक्ष रूप से धन संपत्ति से युक्त दिशा है। इसकी ऋतु बसंत, तत्व काष्ठ, अंक चार एवं रंग जामुनी है।

दक्षिण पश्चिम

कंपास की यह दिशा संबंधों, विवाह, साझेदारी तथा मातृत्व का परिचालन करती है। यदि आप अपने व्यवसाय के लिए किसी साझेदार की तालाश में हैं या किसी व्यावसायिक संपर्क को और मजबूत बनाना चाहते हैं तो इस क्षेत्र को सक्रिय बनाएं। इसकी ऋतु ग्रीष्म, वर्ण पीत, तत्व पृथ्वी और अंक दो है।

उत्तर पूर्व

अगर अपने ज्ञान एवं शिक्षा का आधार विस्तृत करना चाहते हैं या बौद्धिक क्षमताओं को बेहतर करना चाहते हैं तो इस दिशा को सक्रिय बनाएं। वृद्धि के हरे तथा उच्च कांक्षाओं के नीले वर्णों के मेल से इस दिशा में समुद्री हरा रंग क्रियाशील रहता है। इसकी ऋतु शीत, तत्व पृथ्वी और अंक आठ है। चीनी भाषा में आठ अक्षरों का शब्द समृद्धि का द्योतक है।

उत्तर पश्चिम

यदि दूर दराज स्थित क्षेत्र आपको आकर्षित करते हैं और आपकी रुचि ऐसी है जो आपको घरेलू वातावरण से दूर ले जाती है तो अपने उत्तर पश्चिम क्षेत्र का पोषण कीजिए। यदि अपना व्यवसाय अपने नगर से बाहर फैलाना चाहते हैं, उसे राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय दर्जा देना चाहते हैं तो अपने कार्यालय के उत्तर पश्चिम के कोण का विस्तार फेंगसुई द्वारा करें। यह दिशा पितृत्व, लाभकारकों, परामर्शदाताओं तथा आपकी साहयता करने वाले अन्य व्यक्तियों का परिचालन करती है। इसकी ऋतु पतझड़, तत्व कठोर धातु, रंग धूसर तथा अंक छः है।

रचनात्मक और ध्वंसात्मक चक्र

चीनी दर्शन के अनुसार पूरा ब्रह्मांड पांच मूल तत्वों से निर्मित है– अग्नि, जल, काष्ठ, धातु तथा मिट्टी। ये पांचों तत्व प्रकृति की शक्ति, उनके जटिल अन्योन्याश्रित संबंधों तथा नाजुक संतुलन का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि इन तत्वों का सही संतुलन के साथ उपयोग किया जाए तो रचनात्मक रूप से सभी प्रकार के विकास एवं विस्तार में सहायक सिद्ध होंगे। इसके विपरीत असंतुलित रूप से इनका उपयोग करने पर विनाश का कारक होते हैं।

रचनात्मक चक्र

निम्नांकित चित्र में रचनात्मक चक्र में यह दर्शाया गया है कि काष्ठ प्रज्वलित अग्नि को बढ़ावा देता है, अग्नि अपनी राख से भूमि का निर्माण करती है। भूमि से अयस्क (धातु) की उत्पत्ति होती है, जिसकी

सतह पर वाष्प बनने से पानी बनता है। जल पेड़ पौधे पोषण देता है, जिससे काष्ठ निर्मित होता है। यहां प्रत्येक तत्व एक दूसरे का सहायक या प्रगतिकारक है। इस चक्र से तत्वों के बीच में सामंजस्य बना रहता है।

ध्वंसात्मक चक्र

जब ये पंच तत्व चक्र विपरीत दिशा में इस तरह बदलते हैं कि वे एक दूसरे की प्रगति, सघनता और प्रभाव को कम करते हैं तो यह चक्र विध्वंसक चक्र कहलाता है। पानी आग बुझाता है, अग्नि धातु को पिघलाता है, घातु से लकड़ी काटी जाती है, काष्ठ भूमि से पोषण ग्रहण करता है और मिट्टी पानी को पंकिल बनाता है। इन तत्वों के बीच में असामंजस्य पैदा होता है। अतः कोई भी तत्व अपने आप में ध्वंसात्मक नहीं है। वास्तव में पांचों तत्व हमारे पर्यावरण के लिए अत्यावश्यक हैं। अपने आसपास के वातावरण को बारीकी से सुधारने के लिए ये चक्र महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए दक्षिण की दीवार पर
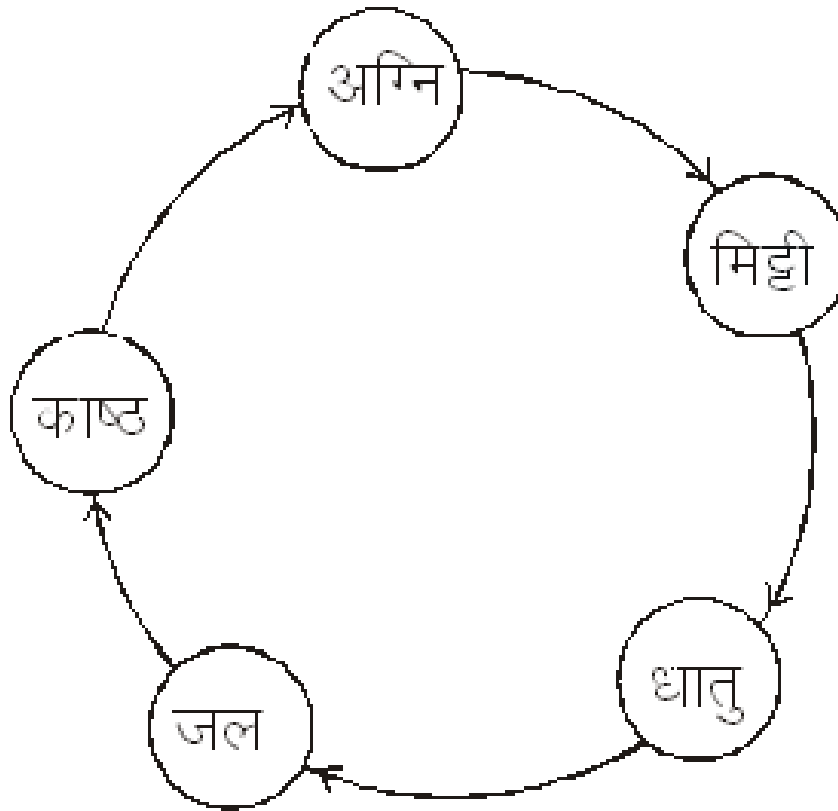
मछली घर न लगाएं। अग्नि दक्षिण का तत्व है और जल अग्नि के प्रभाव को बुझा देगा। इसी तरह अपने कार्यालय के उत्तरी क्षेत्र में मिट्टी के बर्तन या सजावट के लिए भूरे रंग की कोई वस्तु न रखें क्योंकि उत्तर दिशा जल द्वारा परिचालित होती है। यह मिट्टी का तत्व आप के लिए पेशे की संभावनाओं और

व्यवसाय की सफलता को गंदला कर सकता है।

बिना तोड़–फोड़ वास्तुदोष निवारण

बिना तोड़–फोड़ को वास्तु दोष के दूर करने के संदर्भ में कुछ उपाय यहां बताए जा रहे हैं।

1. सही दिशा (Correct Direction)

सभी वस्तुओं को अपनी सही स्थिति एवं दिशा में स्थापित करने से वास्तु–संबंधी दोषों से राहत मिलती हैं। जैसे रसोई घर गलत बना हो तो उसे उसके उचित स्थान आग्नेय में रखने पर वास्तु दोष दूर हो जाएगा। इस प्रकार अगर पानी की बोरिंग आग्नेय में हो तो गलत है, इसलिए वहां इलेक्ट्रिक मीटर लगा दें एवं पानी के निकास को ईशान या पूर्व में कर दें। इससे भवन का जल–दोष दूर हो जाएगा।
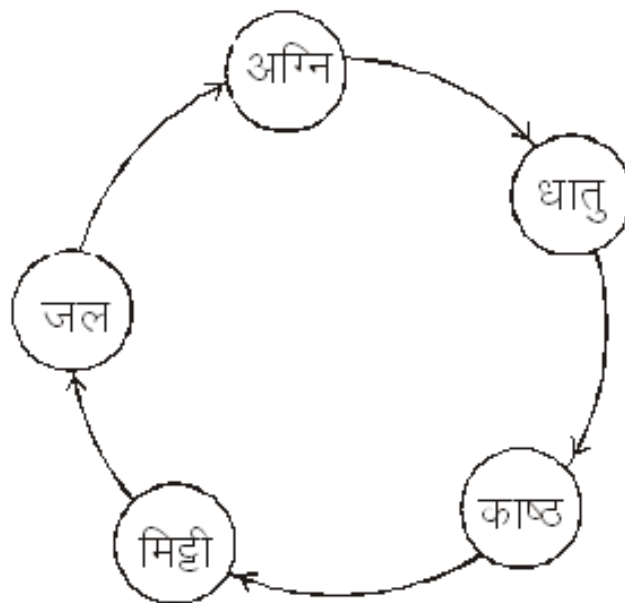
2. दर्पण (Mirror)

वास्तु विशेषज्ञों की दृष्टि में दर्पण का बड़ा महत्व है क्योंकि यह वास्तु संबंधी बाहरी दुष्प्रभाव को वापस लौटाने की शक्ति रखता है। दर्पण आंतरिक सुंदरता एवं सुरक्षा को भी बढ़ाता है। दर्पण हमेशा उत्तर या पूर्व की ओर लाभदायक रहता है। दर्पण के सामने आते ही यह व्यक्ति (नर या मादा) को उत्साहित (Warm up) कर देता है। दर्पण यदि उत्तर पूर्व भाग में हो तो यह धन एवं लाभ दिलाता है। उत्तर पूर्व की ओर खिड़की, दरवाजा या रोशनदान न होने पर उसकी जगह दर्पण लगाने पर यह खिड़की, दरवाजे एवं रोशनदान का काम करता है। उत्तर या पूर्व की ओर दर्पण लगाकर धन लाभ प्राप्त किया जा सकतत है। इस प्रकार उत्तर में लगा दर्पण उत्तर पूर्व की ओर अपना काल्पनिक प्रतिबिंब बनाता है,

जो आय, धन व लाभ के रास्ते खोलता है। साथ ही पूर्वी दीवार पर लगा दर्पण पुत्र या संतान सुख की प्राप्ति है।

3. तेज रोशनी के बल्ब

तेज रोशनी वास्तुदोष सुधार की श्रृंखला में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है जो पर्यावरण में सुधार ला देती है तथा L की आकृति में बने मकान को चौकोर में बदल देती है। तेज प्रकाश सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है जो भवन के आंतरिक एवं बाहरी स्वरूप को चमका देता है। अंधकार दुर्भाग्य, दुख एवं उदासी का जबकि प्रकाश सौभाग्य, सुख एवं प्रसन्नता का प्रतीक है। वास्तु नियमों के अनुसार जिस घर के पूर्व या
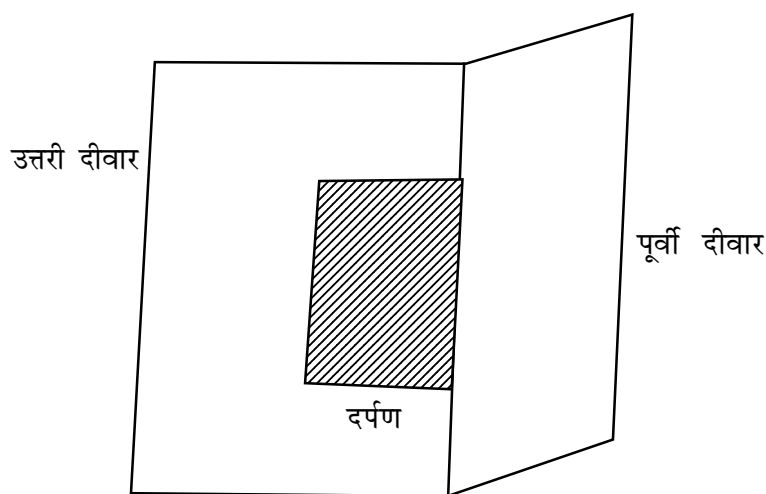
ईशान में रोशनी स्थायी रूप से रहती है, उस घर में दैविक शक्ति प्रतिपल जाग्रत रहती है।

4. मधुर स्वरलहरी या घंटी

फेंग सुई दोष के निवारण में यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सिल्वर या उजले रंग की पांच छड़ों वाली धातु की स्वरलहरी कमरे के पश्चिम या घर में पश्चिम की तरफ लगाने से मानसिक

शांति एवं पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।

इसी तरह सुनहरे या पीले रंग के धातु की स्वरलहरी मकान या कमरे के वायव्य तरफ लगाने से प्रगति के नए अवसर में वृद्धि होती है तथा लोगों की सहायता मिलती है। साथ ही विदेश यात्रा के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

5. क्रिस्टल बॉल

क्रिस्टल बॉल पूरे घर में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित कर वास्तु दोष दूर करने में अहम भूमिका निभाता है। साधारणतः इसे भवन के वायव्य कोण या कमरे के वायव्य में लगाते हैं। यह परिवार में सदस्यों के फेंग सुई दोष के निवारण में यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सिल्वर या उजले रंग की पांच छड़ों वाली धातु की स्वरलहरी कमरे के पश्चिम या घर में पश्चिम की तरफ लगाने से मानसिक शांति एवं पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।

इसी तरह सुनहरे या पीले रंग के धातु की स्वरलहरी मकान या कमरे के वायव्य तरफ लगाने से प्रगति के नए अवसर में वृद्धि होती है तथा लोगों की सहायता मिलती है। साथ ही विदेश यात्रा के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

6. वृक्ष और पुष्पगुच्छ

वृक्ष, पौधे और पुष्पगुच्छ जीवनी शक्ति से भरपूर प्रकृति के सुंदर और के अनुपम उपहार हैं, जो मानव को ऑक्सीजन (प्राणवायु) तो देते ही हैं, घर की सुंदरता में भी चार चांद लगा देते हैं। वास्तु दोष परिहार में, बीमारियों को ठीक करने में, उत्तम स्वास्थ्य के लिए वृक्ष और वनस्पतियों का महत्व सर्वाधिक है।

7. मछली घर (एक्वेरियम)

मछली घर भी जीवन शक्ति, प्राण वायु एवं प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है। मछली घर में उठने वाले पानी के बुलबुले जीवन शक्ति का संकेत देती हैं। ये बुल लक्ष्मी के आगमन के लिए शुभ होते हैं। जब घर में जल तत्व की कमी होती है, तब जल स्थान अर्थात् उत्तर दिशा में मछली घर, फव्वारे या पानी का चित्र लगाना शुभ होता है।

8. जलाशय एवं फव्वारे (Fountaions)

बड़े भवन, बहुमंजिला भवन या व्यावसायिक भवन में जल संबंधी दोष को दूर या कम करने के लिए जलाशय एवं फव्वारों को व्यवस्थित कर लगाया जाता है। घनागमन के प्रतीक फव्वारों एवं जलाशयों को बड़ी सूझ–बूझ के साथ लगाया जाता है क्योंकि यदि पानी का निकास गलत ढंग से हो, तो घर का सारा धन गलत ढंग से चला जायेगा।

फव्वारा

9. भारी पत्थर एवं मूर्तियां

कई बार भवन की विशेष दिशा और कोण को भारी करने के लिए भारी पत्थरों, चट्टानों एवं मूर्तियों का सहारा लिया जाता है। कई बार तो पति–पत्नी के अलगाव, निरंतर यात्राओं एवं अस्थायित्व का दोष वांछित दिशा कोण को भारी करने पर अदृश्य ढ़ंग से स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

10. भारी विद्युतीय संयंत्र

घर में बिजली का मोटर, कपड़े धोने की मशीन, फ्रिज, टेलीविजन इत्यादि विद्युत उपकरणों को सही ढ़ंग से लगाने पर घर के सदस्यों की पाचन शक्ति एवं ऊर्जा बराबर सही स्थिति में बनी रहती है।

11. बांस और बांसुरी (Bamboo & Flutes)

चीन एवं मध्य एशिया में बांस का बड़ा ही धार्मिक महत्व है। बांस की बनी बांसुरी शांति, शुभ समाचार, स्थायित्व और स्थिरता का प्रतीक मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि बांसुरी में एक के ऊपर एक श्रृंखलाबद्ध बने हुए छेद, भवन को मंजिल–दर–मंजिल सुरक्षित रखते हैं। भवन में बीम से बचाव के लिए दो खोखले बांस तिरछी दिशा में एक दूसरे के सामने मुंह करके लगाएं। इन बांसों पर रेशम के फुदने लटका दें। अगर बांसुरी लगानी हो तो इसे लाल कपड़े में लपेट कर लगाएं। बांसुरी का मुंह नीचे की ओर होना चाहिए। बांसुरी की धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जब इसे हाथ में लेकर हिलाया जाता है तो बुरी आत्माएं भाग जाती हैं और जब इसे बजाया जाता है तो घर में सूक्ष्म चुंबकीय प्रवाह (Microcosmos Sound Waves) का प्रवेश होता है।

बांसुरी

12. पाकुआ दर्पण (Pakua Mirror)

पाकुआ दर्पण द्वार वेध की स्थिति में मुख्य द्वार के बाहर लगाया जाता है। अगर घर के सामने पेड़, कोई मकान, चर्च या मंदिर हो तो इससे वेध को दूर करने के लिए पाकुआ दर्पण मुख्य दरवाजे पर लगाते

पाकुआ दर्पण

हैं। अगर मकान के पीछे वाले दरवाजे पर भी इसी तरह का वेध हो तो वहां भी पाकुआ दर्पण लगाएं। इससे दोनों दरवाजों का वेध का दोष खत्म हो जाएगा। इसे मुख्य द्वार के बीचोबीच लगाएं।

13. बागुआ

यह पाकुआ के समान ही होता है। परंतु इसके केंद्र में कोई दर्पण न होकर यिन और यैंग का चिह्न होता है। इसे मुख्य शयन कक्ष के द्वार पर लाल धागे से बांध कर लगाया जाता है। इसे लगाने से भवन एवं कक्ष में नकारात्मक ऊर्जा नहीं आती और सकारात्मक ऊर्जा बाहर नहीं निकलती है।

बागुआ दर्पण

14. मेंडेरियन डक (बत्तख का जोड़ा) या लव–बर्ड्स

मेडेरियन डक का जोड़ा शयनकक्ष के दक्षिण–पश्चिम कोने में रखने से पति–पत्नी के संबंधों में मधुरता

मैडेरियन बत्तख का जोड़ा

आती है और जीवन खुशियों से भर जाता है। विवाह विलंब दूर करने में भी यह बहुत सहायक होता है। कन्या या लड़का, जिसका विवाह होने में विलंब हो, उसके शयन कक्ष के दक्षिण–पश्चिम कोने में लकड़ी के स्टूल पर रखने से शीघ्र लाभ मिलता है।

15. कूदता मेढ़क

चीनियों की मान्यता है कि मेढक का अगर पूरा परिवार आपके घर के पीछे रहता हो तो आप सभी प्रकार

तीन टांगो वाला मेढ़क

के खतरों एवं दुर्भाग्यों से सुरक्षित रहेंगे। मुंह में सिक्के लिए कूदते हुए मेढक का प्रतीक अति धन वृद्धिकारक सिद्ध होता है। इसके रखने की जगह का विशेष महत्व है। सिक्के की दिशा हमेशा घर एवं ऑफिस के अंदर की ओर रखें अन्यथा घर का धन बाहर जा सकता है। इसे सोफे के नीचे एवं आलमारी में रख सकते हैं। लेकिन मंदिर, स्नानघर, शयन कक्ष एवं रसोई में रखना वर्जित है।

16. लाफिंग बुद्धा

लाफिंग बुद्धा, जिसके कंधे पर धन की थैली हो, उत्तर–पश्चिम दिशा में रखने से समस्त घर एवं परिवार

हंसते हुए बुद्ध की मूर्ति

सुख समृद्धि से भर जाता है। इसके साथ–साथ खूबसूरत झूमर दक्षिण पश्चिम कोने में टांगना चाहिए।

17. कछुआ

एक जीवित कछुआ पालने या कछुए की मूर्ति या फोटो अपने घर की उत्तर दिशा में रखने या लगाने से जीवन में सुख समृद्धि को बढ़ावा मिलता है। कछुए का मुंह की पूर्व तरफ कर रखना चाहिए। यह आयु को बढ़ाता है। घर की उत्तर दिशा में किसी तालाब या पानी के टब में कछुए का होना पूरे घर वाले की समृद्धि एवं आयु के लिए शुभ फलदायी होता है।
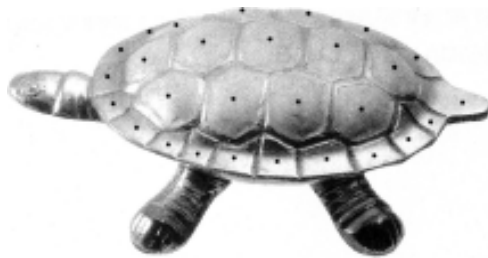
धातु का कछुआ

18. लुक, फुक और साउ

चीनी देवता लुक, फुक और साउ मान–सम्मान समृद्धि एवं दीर्घायु देने वाले माने गए हैं। इनकी मूर्ति घर में रखने से सभी कुछ प्राप्त हो जाता है।

फुक, लुक और साउ

19. Rose Quartze

जिन लड़कों या लड़कियों के विवाह में विलंब हो रहा हो वे अपने कमरे के दक्षिण पश्चिम की तरफ Rose Quartze लगाएं, शीघ्र विवाह की संभावनाएं बढ़ जाएंगी।

20. स्वर्ण मंदिर

स्वर्ण मंदिर की तस्वीर उत्तर पूर्व की दीवार पर लगाने से सुख समृद्धि एवं धन में वृद्धि होती है।

21. पहाड़ों की तस्वीर

पहाड़ों की तस्वीर, जिसमें पानी का चित्र न हो, दक्षिण–पश्चिम की दीवार पर लगाने से स्थायित्व, आत्मविश्वास एवं ताकत में वृद्धि होती है।
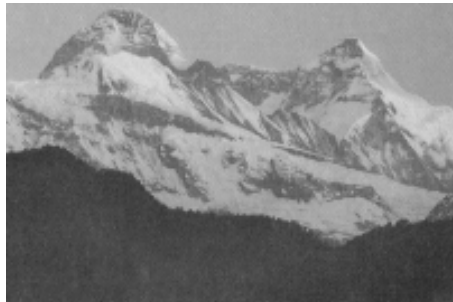
22. सेलेस्टिल जानवर

चार जानवर जो चार मुख्य दिशाओं के प्रतीक हैं। इन जानवरों की आकृतियां ड्राईंग रूम की दीवार पर दिशानुसार लगाने से घर के अंदर वास्तु दोष का प्रभाव नगण्य हो जाता है।

जानवर	रंग	दिशा
ड्रेगन	हरा	पूर्व
टाईगर	सफेद	पश्चिम
फीनिक्स	लाल	दक्षिण
कछुआ	काला	उत्तर

23. उजला बाघ

उजला बाघ की तस्वीर पश्चिम की दीवार पर लगाने से काले जादु अर्थात नजर, जादु–टोना के कुप्रभाव से बचा जा सकता है।

24. फीनिक्स

लाल रंग का फीनिक्स दक्षिण की दीवार पर लगाने से ताकत और स्थायित्व में वृद्धि होती है।

फीनिक्स

25. ड्रैगन

हरे रंग का काष्ठ का ड्रैगन पूर्व की दीवार पर लगाने से समृद्धि एवं पवित्रता में वृद्धि होती है।

ड्रैगन

26. गरुड़

गरूड का फोटो दक्षिण के दीवार पर लगाने से ताकत के साथ–साथ स्थायित्व में वृद्धि होती है।

27. रत्नों का पेड़

भवन में सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि के लिए रत्नों के पेड़ का उपयोग दक्षिण–पश्चिम या उत्तर पूर्व की दिशा में करना चाहिए। धन की के वृद्धि के लिए टोपाज, पन्ना, मरगज एवं माणिक्य से युक्त रत्नों का पेड़ उत्तर पूर्व में रखना चाहिए। भाग्य में वृद्धि के लिए विभिन्न रत्नों से युक्त पेड़ दक्षिण–पश्चिम में लगाना चाहिए।

रत्नों का पेड़

28. भाग्यशाली सिक्के

तीन भाग्यशाली चीनी सिक्के पर्स में रखने से धन की वृद्धि एवं कैश मेमो में रखने से व्यापार में आर्डर में वृद्धि होती है। इन्हें दरवाजे के अंदर हैंडल पर बांध कर लटकाना भी शुभ माना जाता है।

चीनी सिक्के

29. लव बर्डस

पति–पत्नी के आपसी सम्बन्धो को मधुर बनाने के लिए इसे शयन कक्ष में लगवाया जाता है।

30. एजुकेशन टावर

विद्या की सीढ़ियों को चढने के लिए एजुकेशन टावर को विद्यार्थियों की स्टडी टेबल पर रखा जाता है। इसे सामने रख कर पढ़ने से पढाई में ध्यान एकाग्रचित होता है। इच्छा शक्ति व तर्क शक्ति में वृद्धि होती है। अधिक पढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

31. दोहरा खुशी संकेत

इस चिन्ह को घर के दक्षिण पश्चिम में लगाने से घर में खुशियों के मौके बढ़ते हैं। विवाह योग्य लड़के–लड़कियों की शादी हो जाती है।
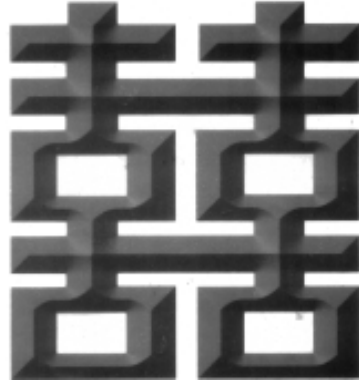
32. मिसटिक नॉट सिम्बल

रहस्यमय गांठ अर्थात जिसका न प्रारम्भ पता है न अंत। इस चिन्ह को घर व आफिस की उत्तर दिशा में लगाने से धन व स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।
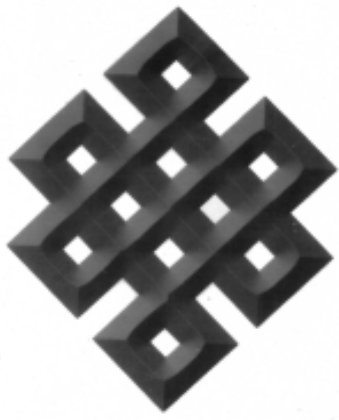
33. सुनहरी मछली

सुनहरी मछली धन और समृद्धि की वृद्धि करती है। इनको घर की उत्तर दिशा में पूर्व की ओर मुँह करके लगाना चाहिए। इसे भगवान विष्णु का मत्स्य अवतार माना गया है।

34. ड्रैगन के मुँह वाला बोट

संयुक्त परिवार को एकजुट बनाये रखने के लिए इसको घर के दक्षिणी पश्चिमी कोने में रखना चाहिए।

35. क्रिस्टल ग्लोब

क्रिस्टल ग्लोब को घर या व्यापारिक स्थल पर इस प्रकार रखना चाहिए कि यह आपके सामने रहे और दिन में कम से कम तीन बार इसे घुमाना चाहिए। यह कैरियर व व्यापार की सफलता में आपका सहायक सिद्ध होगा। शिक्षा व ज्ञान की वृद्धि में सहायक होगा।

वास्तु एवं फेंगशुई के अन्य उपाय :

- वास्तु एवं फेंगशुई के अन्य उपाय बतलाई जा रही है जो निम्न हैः–
- यदि तीन दरवाजे घर, या किसी वास्तु में एक कतार में हों, तो बीच के दरवाजे पर स्फटिक गोला टांग दें। दोष दूर हो जाएगा।
- सुनहरी मछलियों वाला लघु मछली घर अपने घर में रखना सौभाग्य में वृद्धि करने का एक कारगार उपाय है। इसका उपयोग पूर्व या उतर कर सकते है।
- मधुर संबंधो के लिए प्रसन्नचित मुद्रा में संयुक्त परिवार का फोटो लगाएं।
- घर में नमक मिले पानी से पोंछा लगाएं। यह जल घर में स्थित नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है।
- शौचालय में समुद्री नमक का कटोरा रखिए। यह गलत स्थान पर बने शौचालय का दोष भी दूर करेगा।
- शिक्षा और ज्ञान के लिए उतर–पूर्व में ग्लोब रखिए और बच्चों के कमरे में महापुरूषों के चित्र लगाएं।
- दक्षिण पश्चिम में पानी रहित पर्वतों का चित्र बनाएं।
- दक्षिण पश्चिम में प्रेमी परिंदें लगाइए।
- धन समृद्धि के लिए चीनी सिक्के जेब में रखें। धन के पेटी के उपर तीन भाग्यशाली सिक्के लगाएं।
- घोड़े की नाल भारत में अत्याधिक भाग्यशाली और सौभाग्यवर्द्धक मानी जाती है। अपनी घर की सुरक्षा और सौभाग्य की वृद्धि के लिए इसे अपने घर के मुख्य द्वार के ऊपर दरवाजे के चौखट के बीच में लगायी जाती है । इसे भूलवश भी पूर्व और दक्षिण पूर्व दिशा की ओर वाले दरवाजे पर इस्तेमाल न करें। इसे पश्चिम,उतर पश्चिम और उतर की ओर वाले द्वार पर लगायें। जो कि काफी लाभकारी होता है। घोडे की नाल हमेशा अंग्रेजी U के अक्षर के भॉति लगायें।
- भवन के कमरे में रहने वाले बीम के दोष को कम करने के लिए बीम के दोनों ओर दो बॉसुरी लाल रिबन में बॉधकर 45 डिग्री के कोण में लगायें।
- मुख्य द्वार के बाहर दोनो तरफ आरोग्य का प्रतीक पवित्र तुलसी का पौधा रखना चाहिए। क्योंकि प्रवेश द्वार ही घर का वह भाग है जहॉ से अच्छी बुरी उर्जा प्रवेश करती है। प्रवेश द्वार के दोनो ओर पौधे रखने से आगन्तुक आकर्षित होते है। साथ ही वहॉ रहने वाले के धन वैभव में वृद्वि होती है।

- संपत्ति तथा सफलता के लिए रत्नों का पौधा अपनी बैठक कक्ष के उत्तर–पूर्व में रखें।

  प्रसिद्धि एवं स्थायित्व के लिए घर के दक्षिण क्षेत्र में लाल रंग का उपयोग करें एवं उसे लाल रंग की वस्तुओं से सजायें।

- भगवान श्री कृष्ण का चित्र वास्तुदोष को दूर कर खुशहाली लाता है। श्री कृष्ण के साथ

  राधा जी के बगीचे में बॉसुरी बजाते हुए चित्र जिनमें पीछे मोर भी दिखाई दे रहा हो, पति पत्नी के अच्छे संबंधां को दर्शाता है। साथ ही कृष्ण भगवान के मुकुट पर लगा मोर पंख खुशहाली का प्रतीक है।

- मुख्य द्वार पर कोई अवरोध जैसे खंभा, पेड, आदि हो तो दोष निवारण हेतु पाकुआ दर्पण लगायें।

- विवादों या मुकदमों से संबंधित कागजात कभी भी आग्नेय दिशा में न रखें। ये कागजात ईशान या उतर वायव्य में रखे।

- दीवार घड़ी उतर या पूर्व में लगायें।

- घरो मे यदि चोरी होने की समस्या हो तो मंगल यंत्र की स्थापना करनी चाहिए। यदि घर में दंगे फसाद और उपद्रव हो रहे हो तो भयकीलक यंत्र की स्थापना करें।

- जिन घरों में का ईशान कोण कट गया हो या पीडित हो तो तॉबे की लोटा में पानी भरकर उपर से चॉदी कटोरी से ढ़ॅक दें और कटोरी में चार मोती रखें तथा रोज सुबह कटोरी एवं लोटा को मले और ताजा पानी भरकर पुनः रखें।

- जिन घरों में चुल्हा ईशान क्षेत्र में हो और परिस्थितिवश हटाना मुश्किल हो वैसी स्थिति में तॉबे की तस्तरी में पानी भरकर हमेशा चुल्हे के नीचे रखें और आग्नेय में लाल बल्ब जलायें।

- मारूति यंत्र, मारूति नंदन श्री हनुमान का यंत्र है । इस यंत्र का कई उपयोग है जिनमें एक उपयोग वास्तु के लिए बहुत प्रचलित है। जिसकी जमीन नही बिक पा रही हो या जिसकी जमीन विवाद में पडी हो वह मंगलवार के दिन दोपहर 12 बजे इस यंत्र को ले जाकर संबंधित भूमि में पूर्व मुखी होकर गाड दें। भूस्वामी स्वयं पूर्व या ईशान में सवा हाथ का गड्ढा खोदकर यह यंत्र गाड़ें उपर से दूध और गंगा जल चढायें। संबंधित भूमि का विवाद 3 माह के अंदर सुलझ जायेगा एवं भूमि अच्छे दामों में बिक जायेगी।

- घरों के अंदर अगर किसी तरह का बंधन हो, विकाश रूक गया हो तथा कितना भी प्रयास की जाए विकाश नही हो पा रहा है तो शनिवार के दिन हरी मिर्च और नींबु मुख्य द्वार पर टांगना चाहिए। धीरे–धीरे घर बंधन से मुक्त हो जाएगा।

28. पिरामिड

पिरामिड का शाब्दिक अर्थ होता है सूच्याकार पत्थर का खंभा। मिश्रवासियों के अनुसार पिरामिड दो शब्दों से बना है। पिरा (Pyra) एवं मिड (Mid)। दोनों का सम्मिलित अर्थ होता है त्रिकोणाकार ऐसी वस्तु जिसके मध्य में अग्नि ऊर्जा के स्रोत का निर्माण होता है।

Pyra means fire, indicator at the centre core or nuclei, mid means middle.

पिरामिड शक्ति : भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों तथा तत्व वेत्ताओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि सर्वाधिक ऊर्जा एक त्रिभुज तथा उसके केंद्रों से उपजती है। इसी कारण त्रिभुज को शक्ति का स्रोत माना गया है। पिरामिड चूँकि चार त्रिकोण से बनी आकृति है। अतः यह स्वाभाविक है कि जिस वस्तु या आकृति में चार त्रिकोणों से संलग्न प्रतिमा बनेगी वह चार गुनी स्थिरता प्रदान करेगी। अतः पिरामिड जो चार त्रिकोणों का संलग्न प्रतीक है, स्थिरता प्रदान करने वाला है। पिरामिड के दो कोण नींव से 58 डिग्री तथा तीसरा कोण शिखर पर 64 डिग्री पर होता है। चार त्रिभुजाकारी दिशाएं शक्ति का प्रसार करती हैं। वर्गाकार नींव ऊर्जा का प्रसार करती है। अर्थात पिरामिड के अंदर ऐसी सकारात्मक ऊर्जा का निरंतर प्रसार होते रहता है जो जड़ और चेतन दोनों प्रकार के वस्तुएं पर प्रभाव डालती हैं। पिरामिड में किसी भी पदार्थ के मूल कणों का विखंडन नहीं होता। पदार्थ यथावत और उपयोगी बना रहता है। यह जिस स्थान पर होगा वहां विखंडन, बिखराव एवं अलगाव नहीं होगा। साथ ही यह व्यवस्था को अक्षुण्ण रखता है। इसमें किसी भी पदार्थ के बिखरे कणों को पुनः शक्तीकृत करने की क्षमता होती है। इसलिए इसका उपयोग किसी भी तरह के व्यवसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र पर किया जाए तो वह चमत्कारी परिणाम् प्रदान करता है। औद्योगिक एवं व्यवसायिक परिसर को उन्नत बनाता है। फलस्वरूप व्यवसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारी, ग्राहक एवं मालिक सभी पर सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव पड़ता है। जिससे कार्यक्षमता, उत्पादन एवं लाभ में वृद्धि होती है। जो कि औद्योगिक एवं व्यवसायिक विकास में चार चॉद लगता है। साथ ही ऐसे कार्यस्थल शीघ्र ही लोकप्रियता के शिखर पर पहुॅच जाते है। किसी भी कार्यस्थल में वास्तु दोष रहने पर पिरामिड से उस दोष का निवारण कर व्यवसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र को उन्नत बनाया जाता है।

पिरामिड का निर्धारण चुंबकीय दिशाओं के अनुसार करना चाहिए। इसकी कोई भी सतह पृथ्वी के उत्तर या दक्षिण ध्रुव के समानांतर रखनी चाहिए। सही तरीके से इस्तेमाल नही करने पर लाभ के बजाय हानि की संभावना बनती है। इसे साफ–सुथरी, हवादार जगह पर रखें। इसके आसपास किसी तरह की गंदगी नहीं होनी चाहिए। इसे बिजली के तार एवं उपकरणों से दूर रखें परंतु कम्प्यूटर या कोई अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हो तो इसके ऊपर रखा जा सकता है।

1. बढ़े हुए भूखंड को ठीक करने के लिए

किसी भी व्यवसायिक या औद्योगिक भूखंड का दक्षिण पश्चिम में बढ़ा होना अच्छा नहीं माना जाता है।
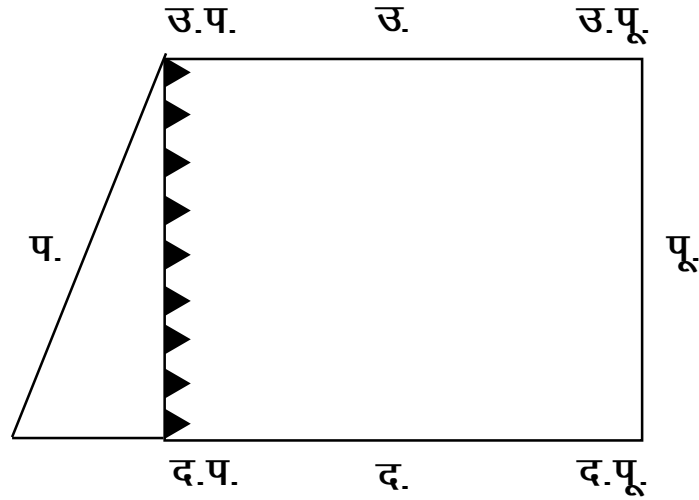
यह महापातकी, दरिद्रता, कर्ज एवं दुर्घटना आदि का कारक होता है। इस प्रकार के दोष के निराकरण के लिए पिरामिड की दीवार बना कर भूखंड के नीचे लगाना चाहिए ताकि भूखंड आयताकार या वर्गाकार बन जाए। इन पिरामिडों की एक से दूसरे का दूरी अधिक से अधिक तीन फुट रखें।

2. भूखंड के कोने कटे होने पर

किसी भी व्यवसायिक एवं औद्योगिक भूखंड के कोनों का कटा होना वास्तु के दृष्टिकोण से अच्छा नहीं
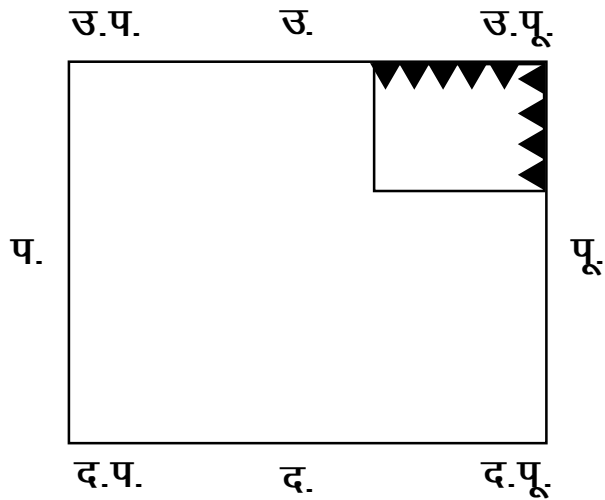
माना जाता है। खासकर उत्तर पूर्व के कोने कट जाने दुकान, फैक्ट्री, धन–दौलत एवं काम–काज आदि सभी बंद हो जाते हैं। भाग्य सो जाता है मालिक कर्ज एवं ऋण में डूब जाते है। लक्ष्मी रूठ जाती है। फलस्वरूप दरिद्रता का पूर्ण नियंत्रण उस स्थान पर हो जाता है। ऐसे स्थान पर लाख प्रयत्न के बावजूद व्यवसाय नही चल पाती है। उद्योग धंधे भी धीरे–धीरे बंदी के कगार पर चली जाती है। इसे ठीक करने के लिए पिरामिड की दीवार बनाकर कोने में लगानी चाहिए।

3. ब्रह्म स्थान को ठीक रखने के लिए

किसी भी व्यवसायिक एवं औद्योगिक परिसर के ब्रह्म स्थान को ठीक रखना आवश्यक है। क्योकि वास्तु में ब्रह्म स्थल को हृदय माना जाता है। इस स्थान पर दोष रहने पर लाख प्रयत्न के बावजूद विकास
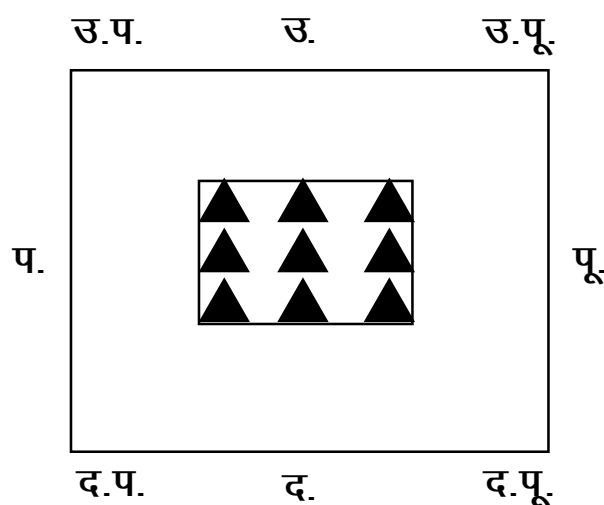
नही हो पाता। उद्योग–धंधे ठीक ढंग से कार्य नही कर पाते। जिसके फलस्वरूप बंदी के कगार पर चले जाते हैं। उस स्थान पर सुख–समृद्धि एवं शांति खत्म हो जाती है। दिवालियापन की स्थिति बन जाती है। भाग्य सो जाता है तथा सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। अतः इस स्थल को ऊर्जामय बनाए रखने के लिए नौ मल्टीयर पिरामिड को ब्रह्म स्थान पर लगाना लाभप्रद होता है। जिससे यह स्थान दोषरहित होकर उद्योग धंधे को प्रगति के पथ पर ले जाता है। सफलताएं कदमें चूमने लगती हैं तथा लोकप्रियता बढ़ती है।

4. शौचालय और W/C को ठीक रखने के लिए

किसी भी व्यवसायिक परिसर के ठीक उत्तर–पूर्व की ओर शौचालय नहीं होना चाहिए अन्यथा आर्थिक विपन्नता घेरे रहती है। प्रयत्न के बावजूद आर्थिक विकास पूर्ण रूप से नही हो पाती है। अकस्मात्
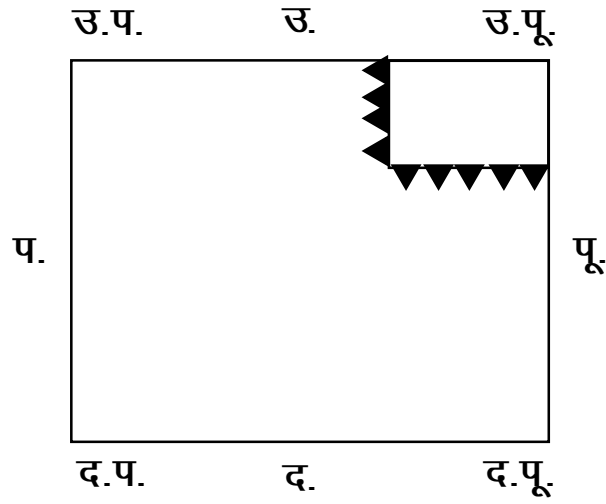
दुर्घटनाएं होते रहती है। कार्य करने वाले को मानसिक परेशानियां बनी रहती हैं। धीरे–धीरे उद्योग धंधे बंद होने लगते हैं। मान–सम्मान, यश, प्रतिष्ठा खत्म हो जाती है। मुसीबतें , संकटें एवं आपदाएं पीछा नही छोड़ती। अतः इसे ठीक करने लिए पिरामिड इसकी बाहरी दीवार की ओर लगाना चाहिए। इससे इसके ऋणात्मक प्रभाव में कमी आएगी।

5. ब्रह्म स्थल में खम्भा
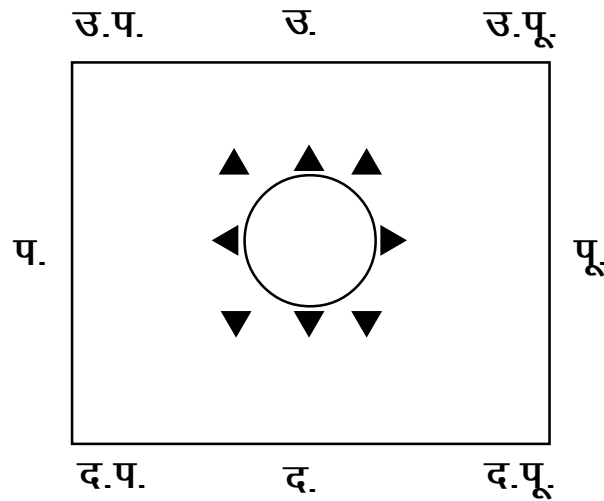
वास्तु में ब्रह्म स्थल को हृदय कहा जाता है। जिस प्रकार हृदय पर किसी तरह का भार सहना मुश्किल

होता है उसी प्रकार व्यवसायिक एवं औद्योगिक परिसर के ठीक बीचोंबीच खम्भा, पीलर या किसी भी प्रकार का वजन रखना अच्छा नहीं होता। ऐसा करने से व्यवसायिक एवं औद्योगिक विकास में गतिरोध होता है। इसके लिए खंभे के चारों ओर आठ पिरामिड लगाएं। इसके अतिरिक्त खंभे को
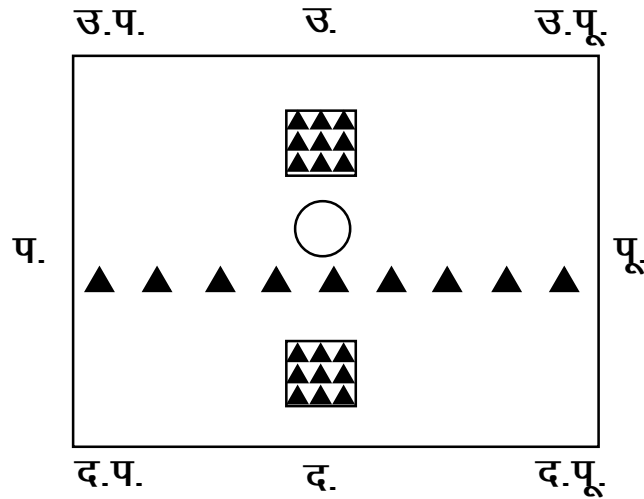
पिरामिड से दो बराबर भागों में बांटकर ब्रह्म स्थल के दोष को दूर किया जा सकता है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

6. मुख्य द्वार की सुरक्षा

औद्योगिक एवं व्यवसायिक परिसर का वास्तु ठीक रहने के बाद भी यदि मुख्य द्वार के सामने किसी तरह का वेद्य या अवरोध हो तो उस क्षेत्र का समग्र विकास नही हो पाता। लक्ष्मी का अभाव बना रहता है।
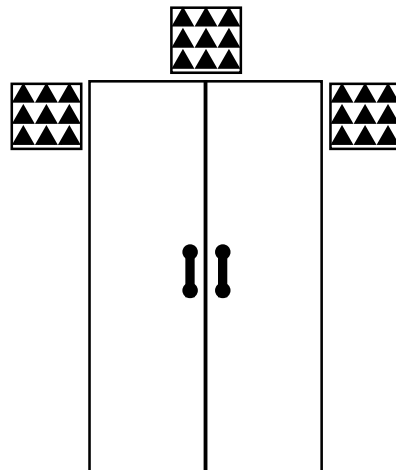
मानसिक असंतुलन एवं कार्यो में गतिरोध बनी रहती है। फलस्वरूप व्यवसायिक विकास की गतियां मंद पड़ जाती है। ऐसी स्थिति होने पर द्वार के दोष को दूर किए बिना पूरा लाभ नहीं मिल सकता। चित्रानुसार 9X9 का पिरामिड लगाने से इस दोष को दूर किया जा सकता है।

7. कमरों को ऊर्जामय बनाने हेतु

कमरे का दोषपूर्ण स्थिति में होना वहां पर कार्य करने वाले व्यक्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव देता है। जिसके फलस्वरूप विकास प्रभावित होती है। अतः कमरे के अंदर के वास्तु दोष को दूर कर उसे ऊर्जामय बनाने
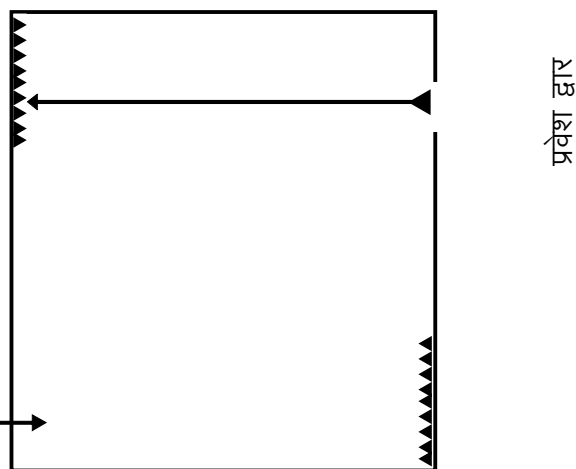
हेतु निम्न तरीके से पैरास्ट्रिप लगाना लाभप्रद होता है।

8. ढाल में सुधार :

वास्तु में जमीन की ढ़ाल उत्तर, पूर्व या उतर–पूर्व की ओर होनी चाहिए। इससे जीवन में सुख समृद्धि
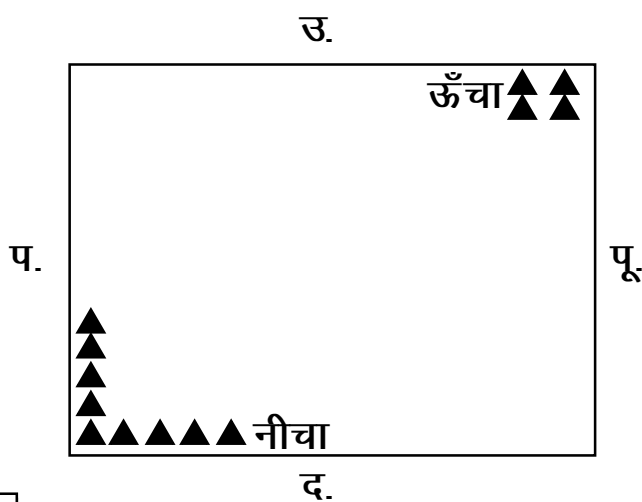
बनी रहती है तथा लक्ष्मी का स्थिर वास होता है। दक्षिण–पश्चिम में सतह के ढाल रहने पर कार्यो में गतिरोध एवं परेशानियॉ बनी रहती है। व्यवसायिक या औद्योगिक विकास ऐसी जगहों पर पूर्ण रूप से नही हो पाती है। यह ढाल दोषपूर्ण हो अर्थात दक्षिण–पश्चिम में नीचा एवं उत्तर पूर्व में उंचा रहे तो इस दोष को दूर करने के लिए निम्नांकित चित्रानुसार पिरामिड लगाएं।

9. दो घरों के मध्य छोटे भूखंड के लिए
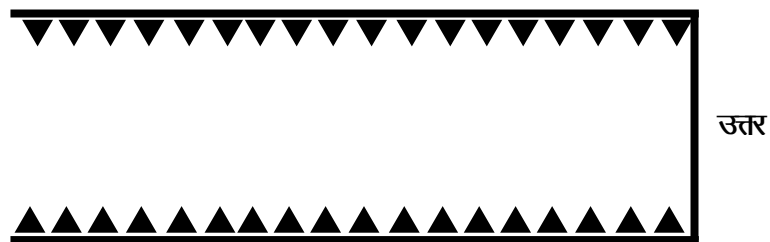
दो बड़े व्यवसायिक परिसर के बीच कोई छोटा परिसर होता है, उसका विकास बाधित होता है। प्रयत्न के बावजूद उसका पूर्ण विकास नही हो पाता। इस दोष को दूर करने के लिए दोनों दीवारों पर चित्रानुसार पिरामिड लगाएं। यह एक उत्कृष्ट उपाय है।

10. बिजली उपकरण ईशान में न लगाएं

भूखंड के ईशान कोण में किसी भी तरह का बिजली का उपकरण नहीं लगाना चाहिए। अगर किसी भी
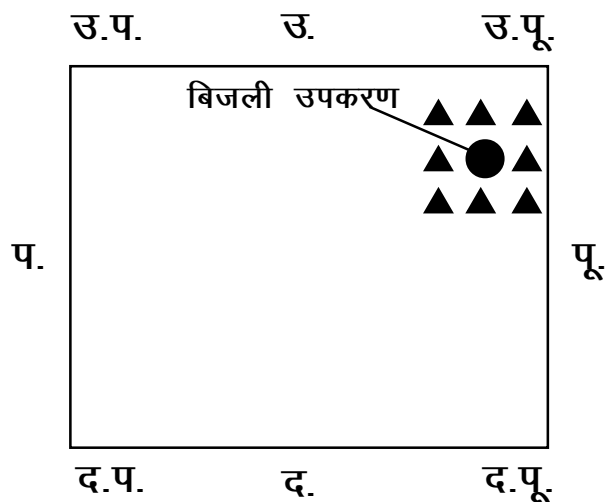
तरह का उपकरण लगा हो तो उसके दोष को दूर करने के लिए चित्रानुसार आठ मल्टीयर पिरामिड लगाएं।

11. सीढ़ी ईशान क्षेत्र में ना रखें

ईशान कोण में सीढ़ी आर्थिक तंगी, मानसिक अशांति एवं अन्य विभिन्न प्रकार के कष्टों का कारक होता है। यदि यह इस स्थान पर हो तो वहां से हटा कर नैर्ऋत्य कोण की ओर ले जाएं। यदि ऐसा संभव
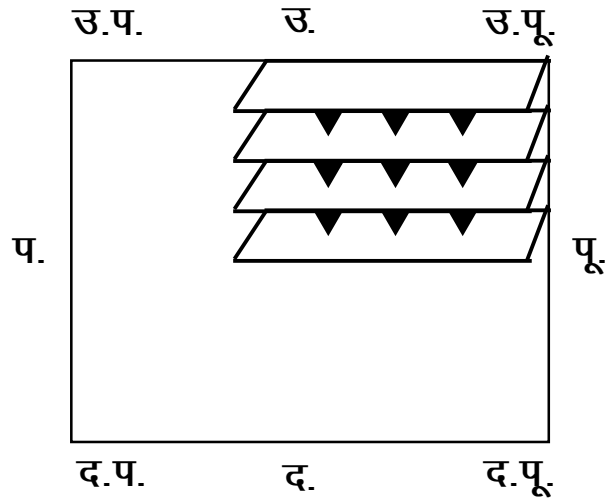
नहीं हो तो सीढ़ी के निचे 9 x 9 का मैक्स पिरामिड लगाएं। साथ ही तीन पिरामिड प्रथम तीन स्टेप तक लगाए ताकि ईशान कोण में सीढ़ी के वजन से ऊर्जा में आने वाली कमी की पूर्ती की जा सके।

12. बीमार कल–कारखाने को ठीक करने के लिएः–

बीमार कल–कारखाने को ठीक करने के लिए पिरामिड का उपयोग भी शुभफलदायक होता है। मशीने
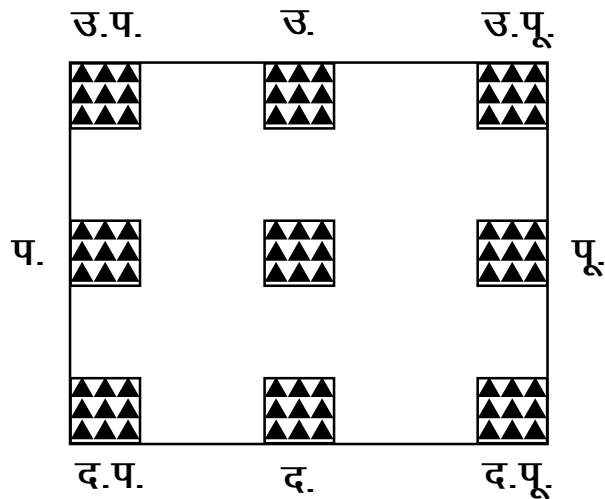
ठीक ढंग से कार्य नही कर पा रही हो तथा नित्य नयी परेशानियॉ आ रही हो, कार्य करने वाले मानसिक रूप से बीमार हों वैसी स्थिति में भूखंड के सभी दिशाओं पर पिरामिड लगाकर ऊर्जामय बनाना लाभप्रद होता है। जिसके फलस्वरूप कर्मचारियों के कार्य करने की क्षमताओं तथा उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि होती है।

13. अनियमित आकार के भूखंड—:

अनियमित आकार का भूखंड वास्तु के दृष्टिकोण से अच्छा नही होता है। इस तरह की भूखंड पर प्रयत्न के बावजूद प्रगति संतोषजनक ढंग से नही हो पाती। उद्योग धंधे सही ढंग से नही चल पाती। हमेशा
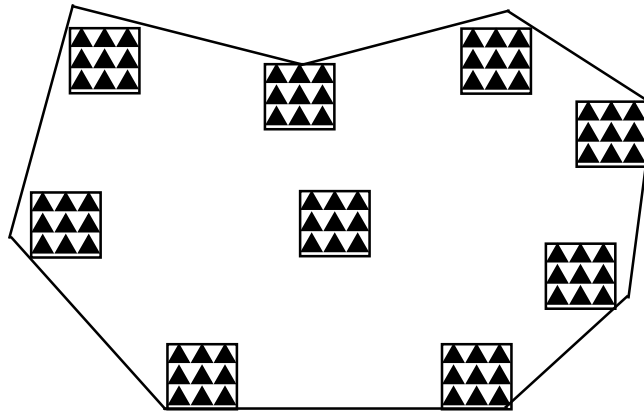
कलह एवं बदहाली की स्थिति देखने को मिलती है। इसे ठीक रखने के लिए प्रत्येक कोने में एवं ब्रह्म स्थान में पिरामिड लगाना लाभप्रद होता है।

14. उचित निर्णय लेने के लिएः—

कुर्सी के पिछे दीवार पर पिरामिड की स्थापना करने से उचित निर्णय लेने की क्षमताओं एवं शक्तियों में वृद्धि होती है।

29. वास्तु सिद्धांतों पर आधारित नक्शे

उत्तर मार्गों पर स्थित कार्यालय : यहां अलग–अलग दिशाओं के आधार पर विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक एवं औद्योगिक नक्शे वास्तु सम्मत् बताए जा रहे हैं। वास्तु के नियमों एवं सिद्धांतों के अनुसार कार्यालय को कैसे व्यवस्थित रखना चाहिए। जो निम्नांकित चित्रों में दर्शाया गया है। कार्यालय के ब्रह्म स्थान को बिल्कुल भार विहीन रखा गया है। साथ ही मुख्य प्रबंधक का कक्ष से लेकर लेखा अधिकारी के कक्ष को वास्तु के नियमों के अनुसार बनाई गई है।
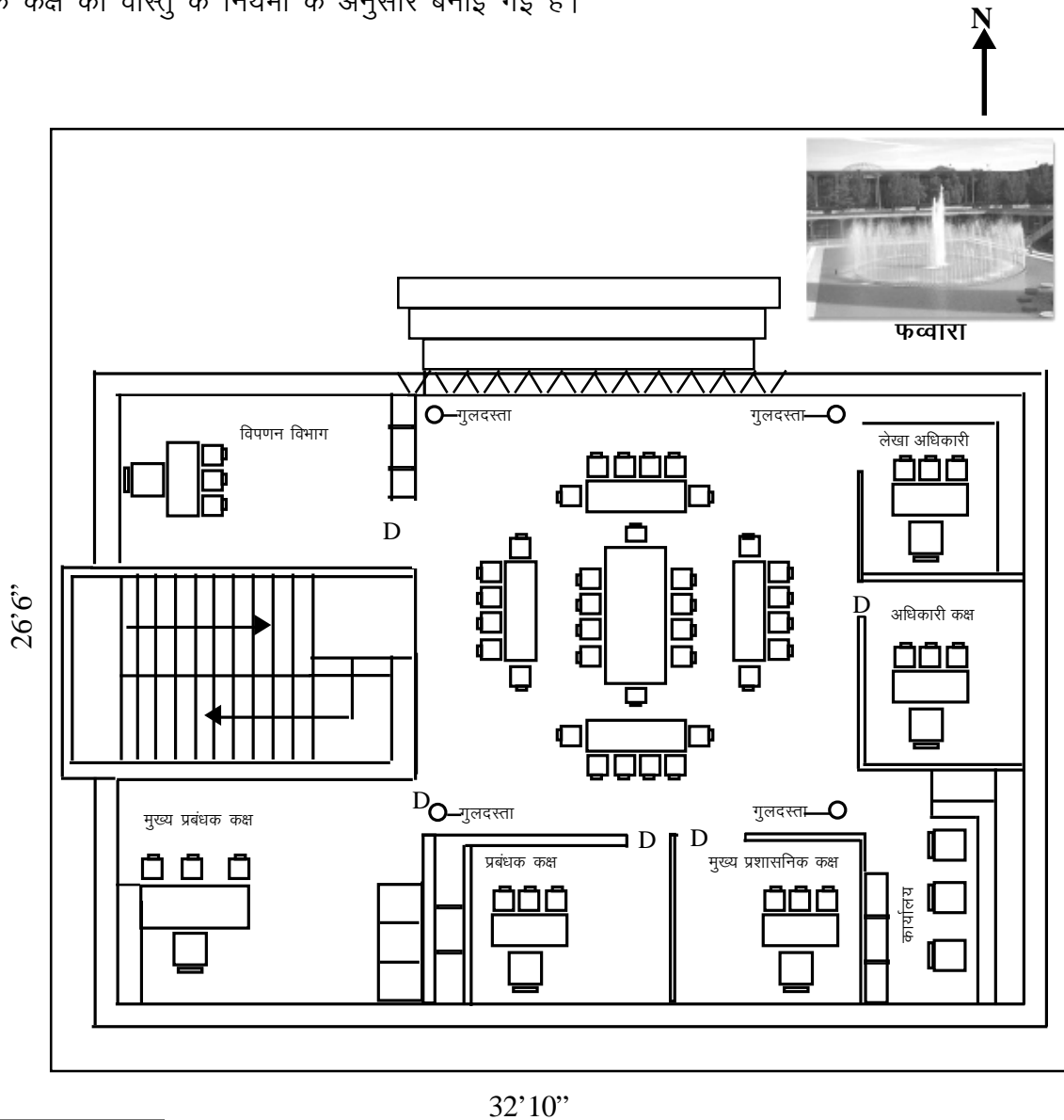
उतर मार्गो पर स्थित कार्यालयः– नक्शे में मुख्य प्रवेश द्वार उतर की दिशा में है। स्वागत कक्ष को उतर–पूर्व की दिशा में रखा गया है। वायव्य का क्षेत्र वार्ताकक्ष के रूप में रखा गया है। कार्यालय प्रमुख की जगह दक्षिण–पश्चिम है। साथ ही पैन्ट्री को दक्षिण–पूर्व में रखा गया है। पूर्व का क्षेत्र अधिक से अधिक खुला है जो प्रमाणित करता है कि यह कार्यालय वास्तु के सिद्धांतो के अनुसार है।

पूर्वी मार्गो पर स्थित फैक्ट्रीः– नक्शे में मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है। तैयार सामग्री जल्द बिक्री हो इसके लिए उसे वायव्य स्थान में रखा गया है। उतर की दिशा खाली रखी गयी है। फैक्ट्री की मशीन दक्षिण–पूर्व से लेकर पश्चिमी वायव्य तक रखा गया है। ब्रह्म स्थान से लेकर उतर एवं पूर्व दिशा में फूलों का बागीचा रखा गया है। अर्थात ब्रह्म स्थान जो पूरे फैक्ट्री का हृदय स्थल है इस स्थान पर फूलों का बागीचा बनाकर खाली रखने का प्रयास किया गया है। साथ ही पूर्वी ईशान्य में एक फव्वारा भी लगाया गया है। फैक्ट्री में पानी के लिए बोरिंग पूर्वी ईशान्य में की गई है। अतः यह सारे तथ्य इस बात का प्रमाण दे रहें हैं कि वास्तु के नियमों के अनुसार यह एक आदर्श फैक्ट्री है।

पूर्वी मार्गों पर स्थित स्कूलः– वास्तु के अनुसार यह एक आदर्श स्कूल का नक्शा है। जिसमें प्राचार्य कक्ष से लेकर शौचालय कक्ष की व्यवस्था वास्तु के दिशा निर्देश के अनुसार किया गया है। विद्यार्थी का चेहरा अध्ययन के वक्त उत्तर की ओर रखी गयी है।

N

Toilet
Drinking water
Fee Counter
varanda
varanda
Passage
Toilet
Passage
varanda
varanda
Passage
Prayer
Borewell
varanda
Store
varanda
Store
varanda
Passage
principal chamber
w/c
chamber
w/c
Passage
staffroom

मंदिर का वास्तु विश्लेषणः– मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व की ओर से है।दूसरा अन्य प्रवेश द्वार उतर और पश्चिम की ओर से रखा गया है। मुख्य मंदिर के चारो ओर परिसर खुला हुआ है लेकिन उतर और पूर्व की ओर अधिक से अधिक खुला हुआ जगह है। पूर्व में फूलों का बागीचा है। साथ ही एक छोटा सा झरना या तालाब बनाया गया है। मंदिर परिसर में प्रवेश करने पर जूते चप्पल रखने की जगह वायव्य की ओर रखा गया है तथा हाथ पैर धोने के लिए पानी या नल की व्यवस्था उतर की ओर है। पार्किंग मंदिर परिसर के बाहर पूर्व या उतर की तरफ की गयी है। पानी का स्त्रोत (कुँआ या पंप) या पानी का अंडरग्राउंड भंडारण उतर–पूर्व भाग में तथा रसोईघर या प्रसाद बनाने का स्थान दक्षिण–पूर्व भाग में किया गया है। जबकि प्रसाद स्थल अर्थात् मंदिर में चढाने के लिए जहां से लोग प्रसाद खरीदते हों पूर्व या उतर–पूर्व में रखा गया है। मंदिर में हुंडी या दान पेटी उतर या पूर्व की तरफ रखा गया है। मंदिर की सारी व्यवस्था वास्तु के सिद्धांतो के अनुरूप की गयी है।
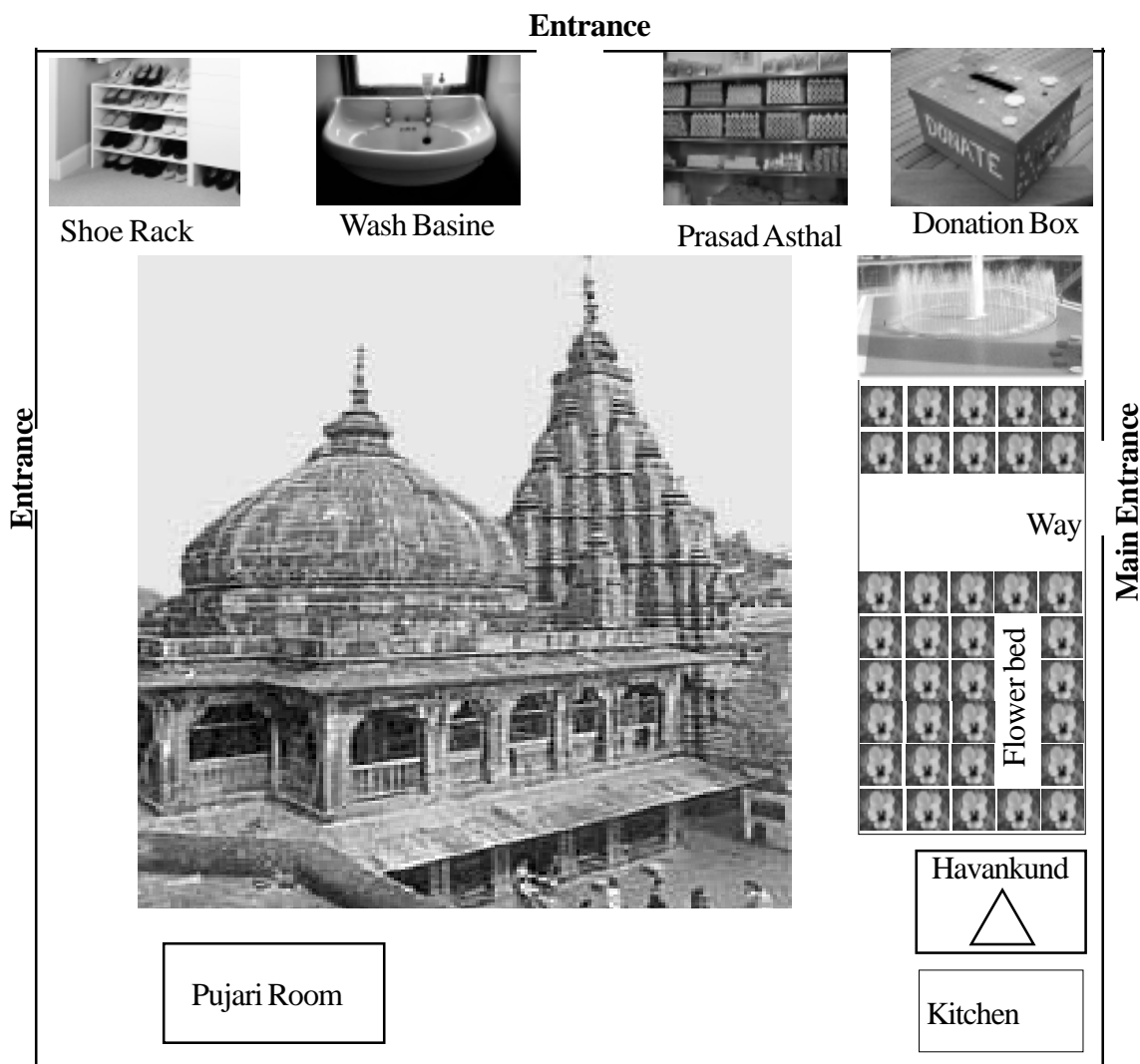
अस्पताल का वास्तु विश्लेषणः– अस्पताल का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व की ओर से है। स्वागत कक्ष को इशान के क्षेत्र में रखा गया है। गहन चिकित्सा कक्ष को उत्तर – पश्चिम में तथा शल्य चिकित्सा कक्ष को पश्चिम में रखा गया है। आपातकालिन वार्ड पूर्व में तथा एक्स रे एवं सी टी स्कैन को दक्षिण पूर्व में रखा गया है। यह वास्तु के अनुसार उपयुक्त अस्पताल है।
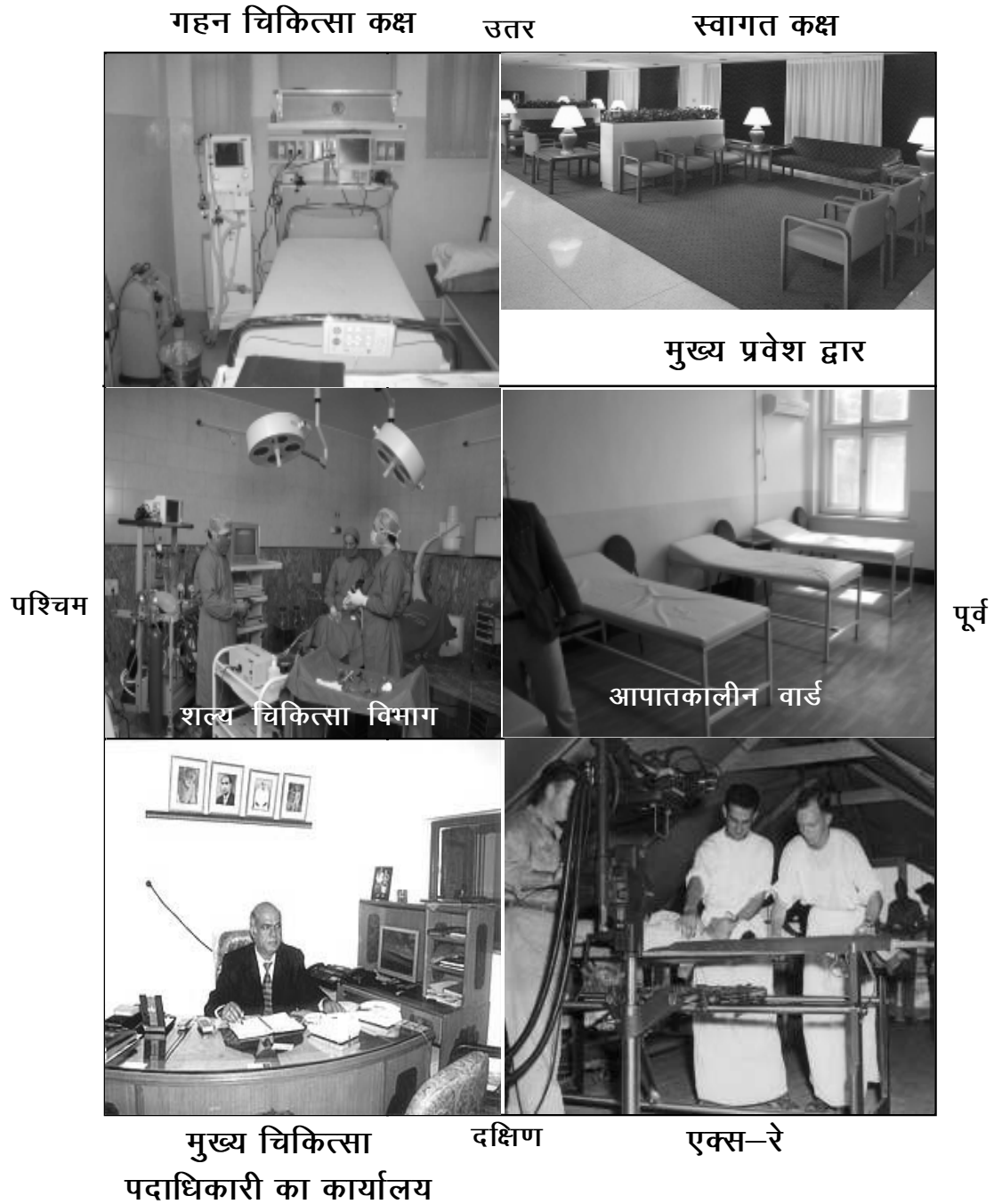
दोषपूर्ण मंदिर का वास्तु विश्लेषण :– गया शहर से लगभग 25 किलोमीटर उतर बेला नामक गॉव मे द्वापर काल में निर्मित यह मॉ काली का मंदिर है। मंदिर की चारों ओर चारदीवारी है। मंदिर के ईशान क्षेत्र में जीर्ण–शीर्ण अवस्था में कुआॅ है जो कि पूर्णरूप से सुखा हुआ है। मंदिर में प्रवेश करने के लिए मुख्य द्वार दक्षिणी नैऋत्य में है जो वास्तु की दृष्टिकोण से अच्छा नहीं है। साथ ही मुख्य द्वार एंव गर्भ गृह कें ठीक सामने ब्रह्म स्थान पर विशाल वृक्ष है। प्रवेश के पास अर्थात दक्षिणी नैऋत्य में बोंरिग की गई है तथा मुख्य मंदिर के ईशान क्षेत्र में जेनरेटर की व्यवस्था है। ये सारे तथ्य मंदिर के प्रसिद्धि एंव विकास में बाधक बनी हुई है।
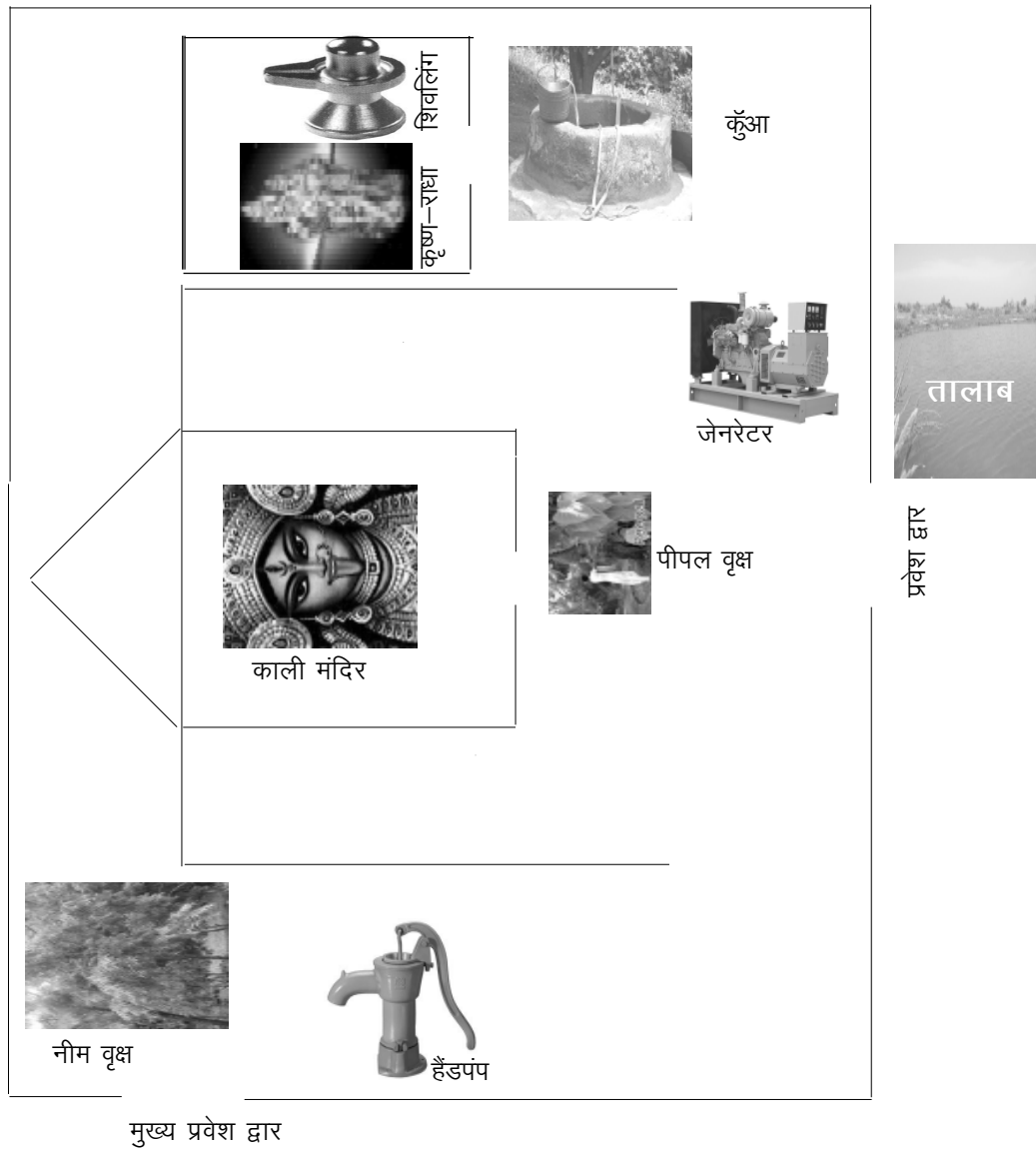
दोषपूर्ण मंदिर को वास्तु के सिद्धांतो के अनुसार सुधारा गया :–प्रसिद्ध काली मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार को पूर्व में एंव अन्य दूसरी द्वार दक्षिण में बनाने की सलाह दी गयी तथा कुएँ को साफ सफाई कर रखने की सलाह दिया गया। जेनरेटर की व्यवस्था दक्षिण–पूर्व में रखने का परामर्श दिया गया।दक्षिण की बोरिंग को बंद कर उतर–पूर्व में बोरिंग करने का सलाह दिया गया तथा मंदिर के सामने तालाब में पानी भरने को कहा गया।
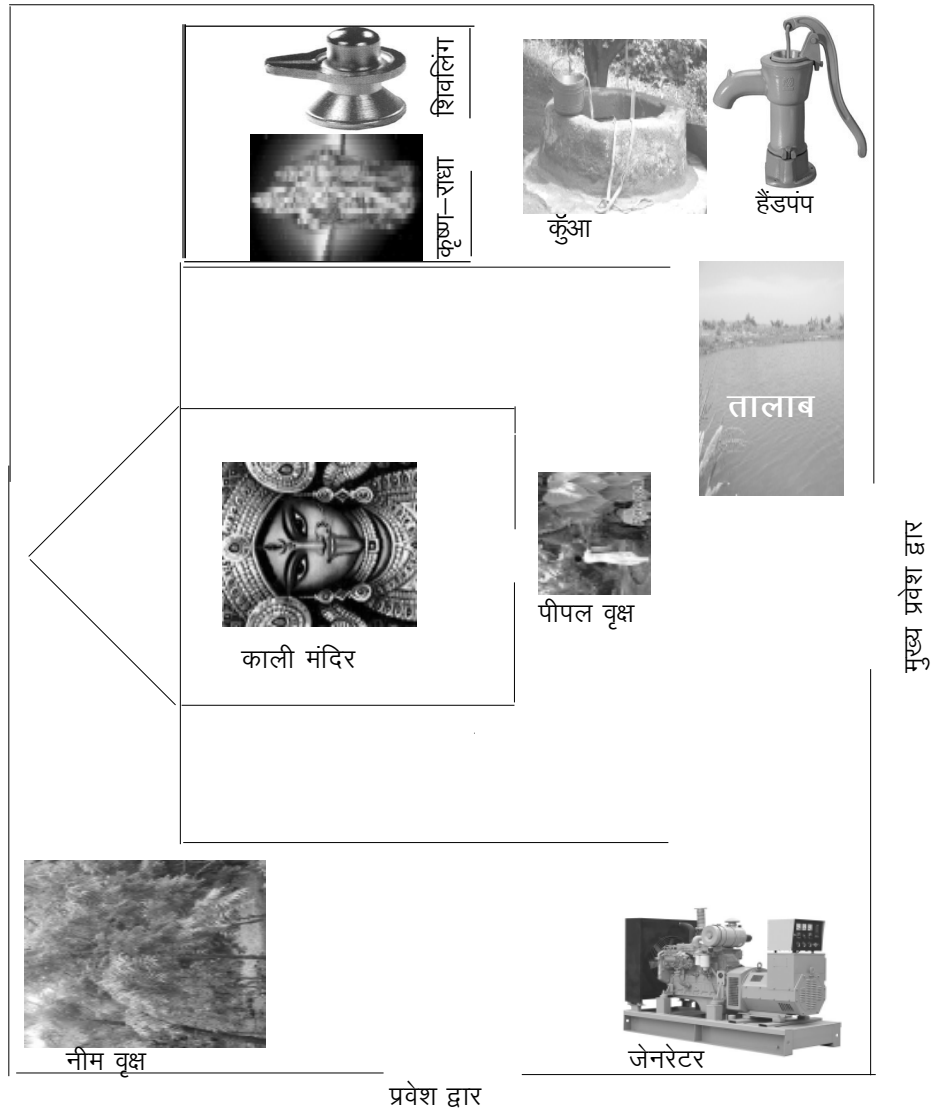
दोषपूर्ण फैक्ट्री का वास्तु विश्लेषण :— फैक्ट्री के भूखंड का आकार अनियमित है जिसका ईशान्य तथा उतर का क्षेत्र कटा हुआ है तथा दक्षिण—पश्चिम का क्षेत्र बढा हुआ है। उतर की ओर बड़ी—बड़ी इमारतें बनी हुई हैं तथा फैक्ट्री भूखंड के ब्रह्म स्थान पर स्थित है। भूखंड के बढी हुई दक्षिण—पश्चिम क्षेत्र में बडा सा तालाब बनाया गया है। फलस्वरूप फैक्ट्री प्रारंभिक काल से ही घाटा देते रहा है। नित्य नयी—नयी परेशानियों का सामना करना पडा, आर्थिक रूप से स्थिति जर्जर बनी रही। फैक्ट्री कब बंद हो जाएगा इसके बारे में कहना मुश्किल सा हो गया है। सरकारी विभागों से भी संबंध खराब हो जाता है। फैक्ट्री के मालिक दिवालियापन की स्थिति में जा पहॅुचे है। पार्टनरों के बीच में भी तकरार होने लगी।
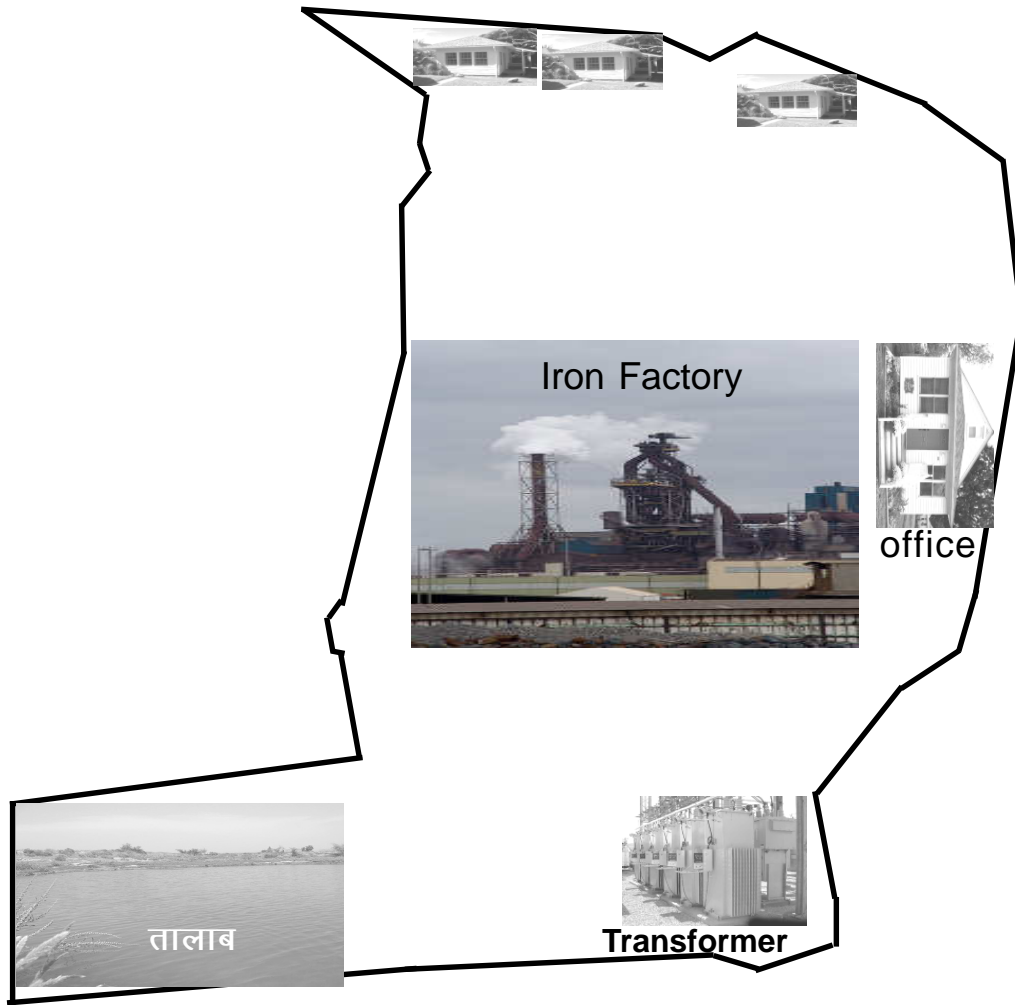
दोषपूर्ण फैक्ट्री को वास्तु के सिद्धांतो के अनुसार सुधारा गया :– निरीक्षण के उपरांत सर्वप्रथम दक्षिण–पश्चिम के बढी हुई क्षेत्र को काटकर भूखंड से अलग करने तथा उसपर बनी हुई तालाब को शीघ्र भरने का सलाह दिया गया। उत्तर–पूर्व में कटी हुई जगह पर बडा सा फव्वारा लगवाया गया तथा उतर में बनी हुई बडी–बडी ईमारतें को हटाने का सलाह दिया गया। पूर्व से लेकर उतर में दरवाजे तक पिरामिड लगवाया गया तथा भूखंड के ब्रह्मा स्थान पर मैक्स पिरामिड यंत्र लगाने का सलाह दिया गया। भूखंड के दक्षिण की तरफ पिरामिड की दिवार बनाकर फैक्ट्री को भूखंड के दक्षिण–पश्चिम में स्थानांतरित की गयी। ये सारे सलाह अपनाने के उपरांत आज फैक्ट्री की स्थिति पुनः अच्छी है। मान–सम्मान एवं प्रसिद्धि में निरंतर वृद्धि हो रही है। आर्थिक स्थिति में निरंतर प्रगति हो रही हैं।
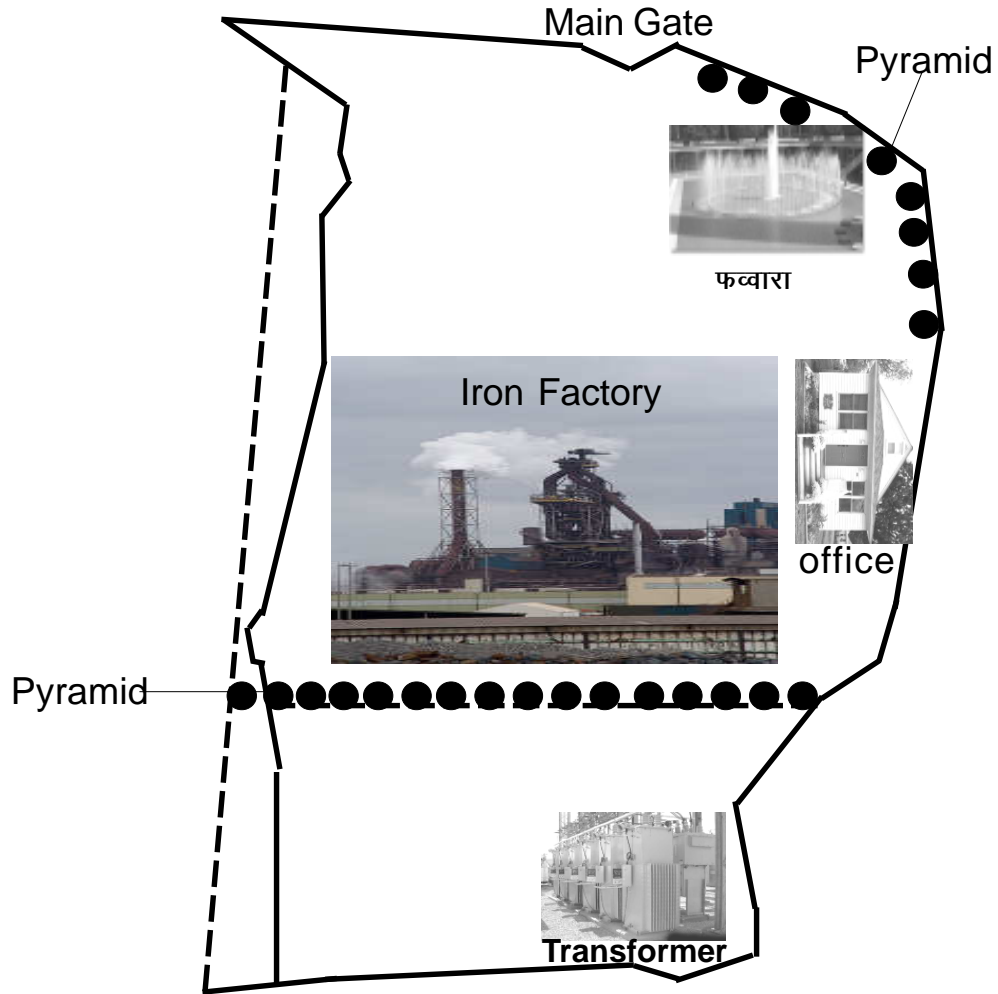
दोषपूर्ण हल्दी फैक्ट्री का वास्तु विश्लेषण :– फैक्ट्री का मुख्य प्रवेश द्वार के ठीक सामने बडा वृक्ष है। प्रवेश द्वार के पास मध्य उतर में सेप्टिक टैंक एवं शौचालय बनी हुई है जो वास्तु की दृष्टिकोण से शुभफलदायक नही है। दक्षिण–पश्चिम से लेकर उतर–पश्चिम के जमीन की सतह पूर्व एवं ईशान्य से काफी नीचा है। साथ ही फैक्ट्री के मशीन के उपर दक्षिण–पश्चिम एवं पश्चिम की तरफ जो शेड लगी हुई है वह पूर्व के शेड के अपेक्षा काफी नीचा है। जमीन की सतह की ढाल एवं पानी निकलने का जगह दक्षिण की तरफ से रखी गयी है। ये सारे तथ्य वास्तु के सिद्धांतो के विपरीत है। फलस्वरूप फैक्ट्री लगातार आर्थिक नुकसान देने लगा। मालिक आर्थिक रूप से जर्जर होते गए। कार्य में मन नही लगने लगा। बिक्री कर एवं बिजली विभाग से भी उलझने बढने लगी। सरकारी दंड के प्रकोप में वृद्धि हो गयी। फैक्ट्री बिक्री एवं बंदी के कगार पर जा पहुँचा।
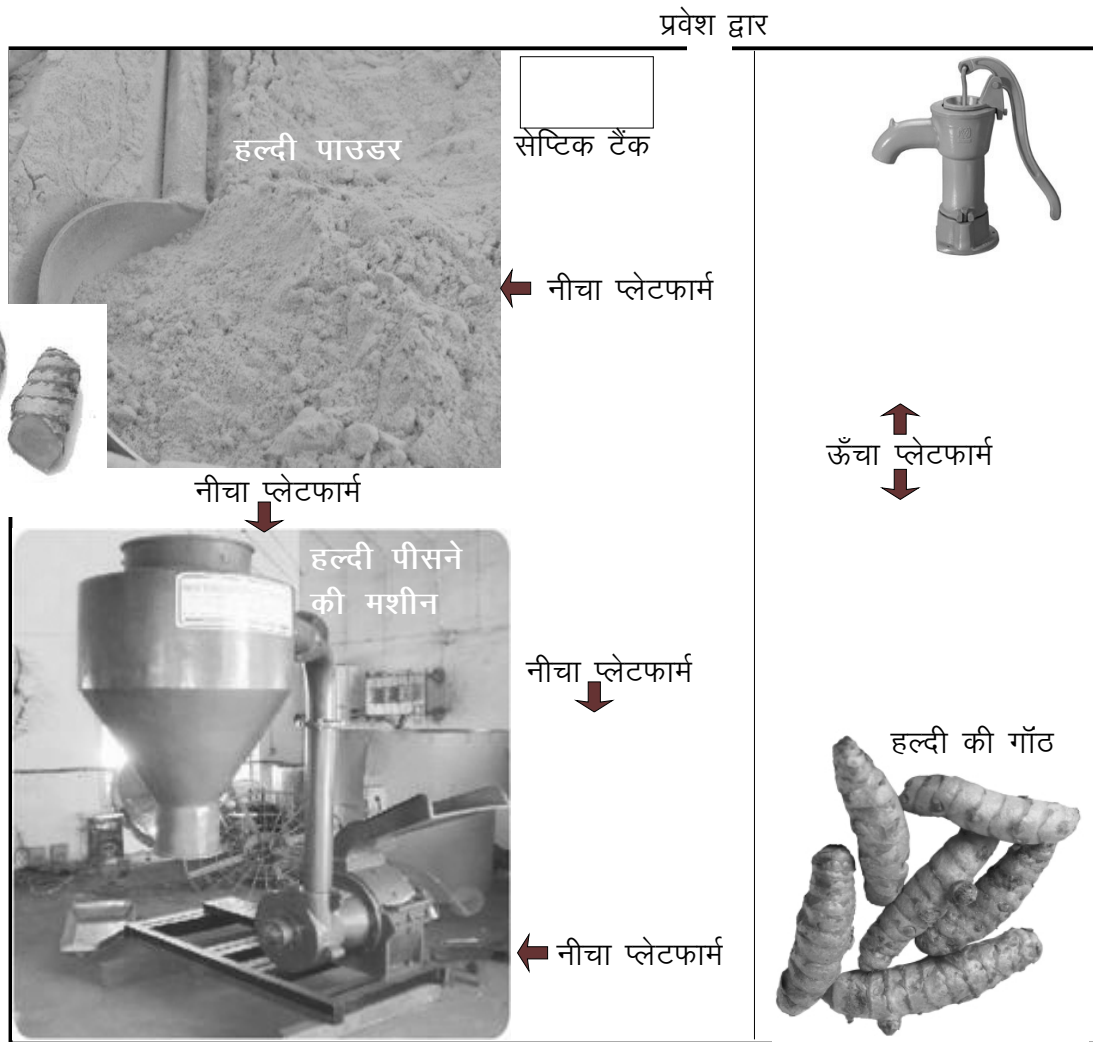
दोषपूर्ण हल्दी फैक्ट्री को वास्तु के सिद्धांतो के अनुसार सुधारा गया :– सर्वप्रथम उतर में बनी हुई सेप्टिक टैंक एवं शौचालय को स्थानांतरित कर उतर–पश्चिम में करने को कहा गया है। जमीन की सतह को ठीक कराकर उतर–पूर्व में पानी की बहाव करायी गयी। फैक्ट्री की शेड दक्षिण–पश्चिम से लेकर पश्चिम तक ऊँचा कराया गया। मुख्य प्रवेश द्वार के पास वृक्ष को हटाने की सलाह दी गयी। ये सारे सुझााव को कार्यान्वित करने के उपरांत फैक्ट्री पुनः सभी समस्याओं से मुक्त होकर लाभ के मार्ग पर प्रशस्त है।

ऊँचा प्लेटफार्म